THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186024
UNIVERSAL
LIBRARY

गालिब

[जीवनी तथा कविता]

(संयुक्त प्रान्त की सरकार से स्वीकृत)

लेखक—

दयाकृष्ण गंजूर

प्रथमावृत्ति २०००] [मूल्य २॥)

प्रकाशक—
दयाकृष्ण गंजूर
८ लालबाग़
लखनऊ.

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

मुद्रक—
भार्गव-प्रिंटिंग-वर्क्स
९२, लाटूश रोड
लखनऊ.

विषय-सूची

	पृ० सं०
१—विषय सूची	३—४
२—प्राक्कथन	५—८
३—भूमिका	९—१५
४—मिर्ज़ा गालिब की जीवनी तथा उनके लतीफ़े	१७—२७
५—मिर्ज़ा के पत्र तथा उनकी जीवनी ...	२८—५८
६—उर्दू कविता से सम्बन्ध रखने वाले शब्द ...	६१—६३
७—ग़ज़लें	६४—१११
८—क़ितें	११२ १३२
९—रुबाइयां	१३२—१३५
१०—क़सीदे	१३६—१४६
११—सेहरा (ग़ालिब)	१४७
१२—सेहरा मुह० इब्राहीम (ज़ौक़) ...	१४८—१४९
१३—हमा पत्र (मिर्ज़ा ग़ालिब) ...	१५०—१५३
१४—आम की प्रशंसा	१५३—१५७
१५—भिन्न-भिन्न प्रकार के अशआर	१५८—१६०

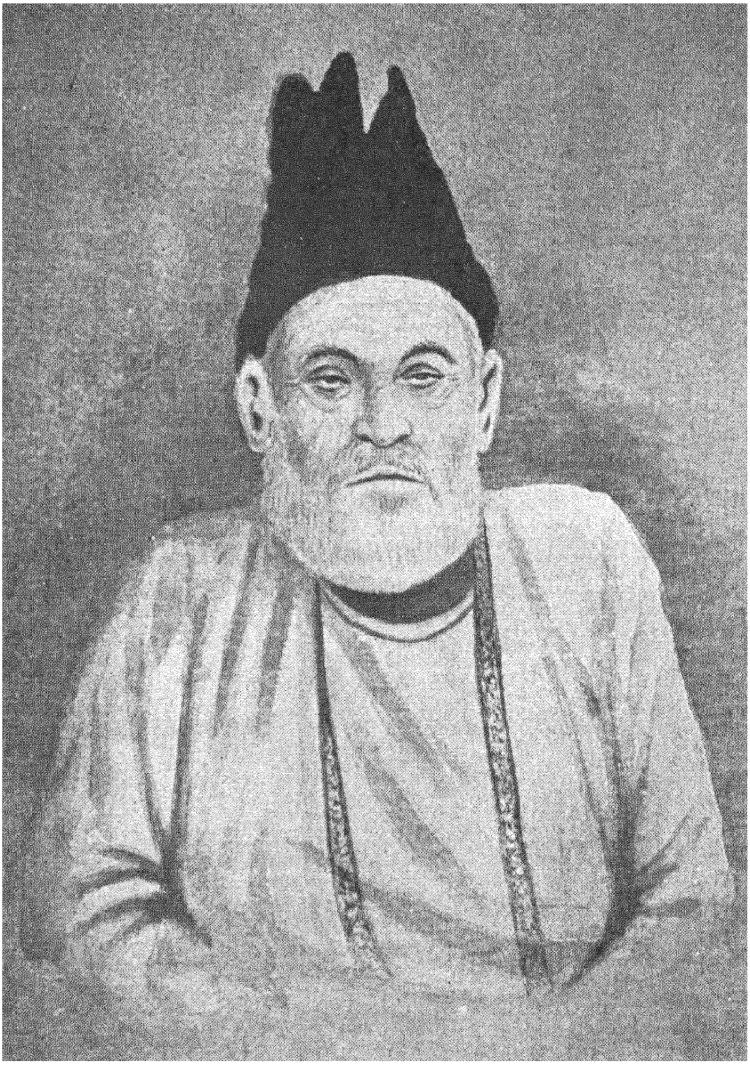

हैं और भी दुनियां में सुख़नवर बहुत अच्छे।
कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाज़-ए-बयां और ॥

प्राक्कथन

श्री दयाकिशन गंजूर हम लोगों के उन बुज़ुर्ग साथियों में से हैं जिन्होंने देश की बहुत सेवा की है। यद्यपि उनकी आयु लगभग ६५ वर्ष की है, वह अब भी सक्रिय और सजग हैं। इस उम्र में भी वह कुछ लिखकर सेवा करने के प्रयत्न में हैं। वह स्वयं कवि हैं। ग़ालिब के वह बहुत बड़े प्रेमी हैं। सैकड़ों शेर उन्हें याद हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके इस प्रेम की परिचायक है।

पुस्तक तीन भागों में बाँटी गई है। थोड़े में ग़ालिब की जीवनी का उल्लेख है, फिर उनके कुछ पत्र, और अन्त में उनके कुछ गज़ल दिए गए हैं। ग़ालिब का जीवन एक मस्ती का जीवन था, आज़ाद ढंग से सोचना और आज़ाद ढंग से बातें कहना। प्रायः मनुष्य रूढ़ियों के समर्थक होते हैं, उन्हें तोड़ने वाले विरले ही होते हैं। ग़ालिब उन थोड़े लोगों में हैं जिन्होंने रूढ़ियों को तोड़कर जो ठीक समझा उसे कहने में कभी संकोच नहीं किया। उनके पत्र पढ़िए, क्या बोलचाल है और कैसी नवीनता! बेजोड़ वाक्य और बेजोड़ बातें! ग़ालिब अपने समय के बरनर्ड शा थे। शा की मौलिकता और वाक्-पटुता उनकी सभी बातों में देखिए। अपने बड़प्पन को मज़ाक़ में भी वह ख़ुद प्रकट कर देते थे। एक पत्र में उन्होंने लिखा "आप सिर्फ़ देहली लिखकर मेरा नाम लिख दिया कीजिए, ख़त पहुँचने का मैं ज़ामिन... "

ग़ालिब सच्चे अर्थों में कवि थे। यों तो उर्दू साहित्य में बड़े से बड़े कवि और लेखक हुए हैं, लेकिन उर्दू साहित्य में जो स्थान ग़ालिब को प्राप्त है वह किसी दूसरे को नहीं मिल

सका है। उन्नीसवीं सदी हिन्दुस्तान में ग़ालिब न केवल उर्दू के वरन् समस्त भारत वर्ष के बहुत बड़े प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं। ग़ालिब की बात मामूली भी कहनी होती फिर भी उनके कहने का ढंग, लहज़ा ऐसा निराला होता कि सुनने वाले पर असर डाले बिना नहीं रह सकता। कविता का प्रधान लक्ष्य भी यही होना चाहिए कि कवि के भाव, उसकी वेदना, उसकी आशा और निराशा, उसके उल्लास का पूर्ण आभास पढ़ने वाले और सुनने वाले को हो जाय।

मित्र से अलग होना ग़ालिब के लिए क़यामत के समान है। इस भाव को वह कैसे प्रकट करते हैं :

जाते हुए कहते हो क़यामत को मिलेंगे
क्या ख़ूब क़यामत का है गोया कोई दिन और ?

शृंगार के उनके कुछ शेर देखिए :

क्यों जल गया न ताब रुख़े यार देखकर
जलता हूँ अपनी ताक़ते दीदार देखकर।

× × × ×

क़ता कीजिए न ताल्लुक़ हमसे
कुछ नहीं है तो अदावत ही सही।

× × × ×

हमको उनसे वफ़ा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है।

नीचे के शेर में दर्द की कैसी महिमा बतलाई गई है :—

इश्क़ से तबीयत ने ज़ीस्त का मज़ा पाया
दर्द की दवा पाई दर्द लादवा पाया।
नग़माहाये ग़म को भी ऐ दिल ग़नीमत जानिए
बेसदा हो जायगा यह साज़े हस्ती एक दिन।

निराशा का कैसा सुन्दर चित्र खींचा है:—

ग़ालिबे ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं
रोइए ज़ार ज़ार क्या कीजिए हाय हाय क्यों।

× × ×

मौत का एक दिन मुऐयन है
नींद क्यों रातभर नहीं आती।
आगे आती थी हाल दिल पै हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती।
जानता हूँ सवाब ताअतो ज़ोहद
पर तबीयत इधर नहीं आती।

× × ×

मरते हैं आरज़ू में मरने की—
मौत आती है पर नहीं आती।

भावनाओं को देखिए कैसे दार्शनिक रूप में रखा है :—

यह कह सकते हो हम दिल में नहीं हैं पर यह बतलाओ
कि जब दिल में तुम्हीं तुम हो तो आँखों से निहाँ क्यों हो?

यह फ़ितना आदमी की ख़ाना वीरानगी को क्या कम है
हुए तुम दोस्त जिसके, उसका दुश्मन आसमाँ क्यों है?

× × ×

रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं क़ायल
जो आँख ही से न टपके तो फिर लहू क्या है?

× × ×

इन आबलों से पाँव के घबरा गया था मैं
जी ख़ुश हुआ है राह को पुरख़ार देखकर।

× × ×

हाँ, वह नहीं ख़ुदापरस्त जाओ वह बेवफ़ा सही
जिसको हो दीनो दिल अज़ीज़ उसकी गली में जाये क्यों?

लेकिन ग़ालिब की विशेषता केवल उनके ढंग, लेहजे और उनकी कविता में ही नहीं है। उनकी कविता से अधिक महत्व-पूर्ण उनका व्यक्तित्व है जो उनके हर छन्द और पद में झलकता है। ग़ालिब के निकट सम्पर्क में रहने वाले प्रायः कहा करते थे कि यदि ग़ालिब शराब न पीते तो वह वली होते। लेकिन ग़ालिब जो करते उसे छिपाना नहीं जानते थे। वह बनावट से बहुत दूर और स्पष्टवादी थे। कट्टरपन उन्हें तनिक भी पसन्द न था। उन्होंने सदा सम्प्रदायवाद और वाह्याचार का विरोध किया और आडम्बरों से दूर रहे। धर्म के नाम पर प्रचलित अन्धविश्वास और आडम्बरों के वह कितने बड़े विरोधी थे इसका आभास नीचे के शेर से मिलता है:—

हम महविद हैं, हमारा केश है तर्के रसूम
मिल्लतें जब मिट गईं अज़्जा-ए-ईमाँ होगईं।

जीवन के अन्तिम चरण में ग़ालिब की प्रसिद्धि प्रायः सारे देश में फैल गई। दिल्ली के साहित्यिक-जीवन में तो उन्होंने अपना एक विशेष स्थान बना लिया था और इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि उनके मरने पर उनके रिक्त स्थान की पूर्त्ति न हो सकी।

इस पुस्तक का प्रकाशन कर गंजूर साहब ने हिन्दी की सेवा की है। उनका यह प्रथम प्रयास है। उर्दू के पुराने उस्तादों की रचनाओं को भुलाना पद्य-संसार के एक विशेष अध्याय को भुला देना होगा। आशा है, हिन्दी-संसार लेखक के इस प्रयास का सम्मान करेगा।

लालबहादुर

६ नवम्बर १६४६

श्री लालबहादुर शास्त्री,

गृह-सचिव संयुक्त प्रान्तीय सरकार, लखनऊ

भूमिका

बहुत काल से मेरी यह हार्दिक अभिलाषा थी कि मैं हिन्दी भाषा में मिर्ज़ा ग़ालिब के जीवन चरित्र तथा उनकी साहित्यिक कृतियों पर कुछ प्रकाश डालूं। महाकवि ग़ालिब की रचनाओं के कारण उर्दू साहित्य अमर होगया है। यदि इस पुस्तक से मातृभाषा हिन्दी तथा हिन्दी-प्रेमियों का कुछ लाभ हो सका तो मुझे सन्तोष और प्रसन्नता होगी।

बचपन से ही मिर्ज़ा ग़ालिब को बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके पिता उन्हें पाँच ही वर्ष का छोड़ कर स्वर्गवासी हो गये। फलतः मिर्ज़ा के पालन-पोषण का भार उनके चाचा के कंधों पर आ पड़ा। दुर्भाग्यवश वह भी मिर्ज़ा का साथ न दे सके और उन्हें नौ वर्ष का छोड़ कर चल बसे। इन परिस्थितियों के कारण मिर्ज़ा की शिक्षा समुचित रूप से न चल पाई। विद्याभ्यास की ओर बचपन से ही उनकी अत्यंत रुचि थी और साथ ही उनकी बुद्धि भी प्रखर थी। फ़ारसी के प्रसिद्ध विद्वान हुर्मुज़जी (इस्लाम में दीक्षित होने के बाद जिनका नाम मौलवी अब्दुल समद पड़ा) जब ईरान से दिल्ली आये तो मिर्ज़ा ग़ालिब ने दो वर्ष तक उन्हें अपने यहां आदर पूर्वक रखा और उनसे फ़ारसी का मार्मिक ज्ञान प्राप्त किया। अपने बुद्धि-बल से वे शीघ्र ही पूर्ण विद्वान होगये और ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा के कारण अत्यल्प काल में ही वह कविता के आकाश में प्रभाकर की भाँति चमकने लगे। वास्तव में मिर्ज़ा ग़ालिब के लिये

यह एक बड़े गौरव की बात थी कि उन्होंने अमीर घराने में जन्म लेकर बिना किसी संरक्षक के उर्दू तथा फ़ारसी साहित्य में इतना ऊंचा पद प्राप्त किया।

फ़ारसी भाषा में मिर्ज़ा ने क़सायद व ग़ज़लों का दीवान, पंज आहंग, नामये ग़ालिब, महरे नीम रोज़ कातये, बुरहा आदि बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं।

मिर्ज़ा की कविता में अर्थ गाम्भीर्य, वेदना और कसक के साथ-साथ शब्द लालित्य, वाक्य विन्यास और सौंदर्य-वर्णन इस खूबी के साथ पाया जाता है जो भारत के किसी और उर्दू कवि की कविता में नहीं है; जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है—

हैं और भी दुनिया में सखुनवर बहुत अच्छे
कहते हैं कि गालिब का है अन्दाज़ बयाँ और

कठिनाई यह थी कि मिर्ज़ा की कविता उच्च विचार और फ़ारसी के शब्दों से भरी हुई थी। मित्रों के आग्रह करने पर उन्होंने अपनी कविता में सरल और प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना शुरू कर दिया था।

उनके उस समय के दीवान का संपादन उनके अंतरंग मित्र मौलवी फ़ज़ल हक़ और मिर्ज़ा खां ने, जो उस समय शहर कोतवाल थे, किया था और ऐसे शेरों को निकाल दिया था जो आसानी से अधिकांश जनता की समझ में न आ सकते थे। इस प्रकार यह काव्य-संग्रह सत्रह सौ (१७००) शेरों का एक मनोरम गुलदस्ता बनकर प्रकाशित हुआ।

आरंभ में मिर्ज़ा ने अपना उपनाम 'असद' रक्खा था। पर एक दूसरे व्यक्ति को भी असद उपनाम रखते देख इन्होंने अपना उपनाम 'ग़ालिब' रख लिया।

उर्दू कविता की तरह मिर्ज़ा का उर्दू गद्य पर भी अच्छा अधिकार था। दीवाने उर्दू, ऊद हिंदी और उर्दूये मुअल्ला आदि इनकी बहुत प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। उर्दूये मुअल्ला और ऊद हिंदी में जो पत्र लिखे गये हैं उनका उर्दू गद्य में काफ़ी ऊंचा और महत्वपूर्ण स्थान है। अपने इन पत्रों द्वारा मिर्ज़ा ने उर्दू गद्य में जिस रोचक, विलक्षण और मनोरंजक वर्णन शैली का आविष्कार किया है वह उर्दू साहित्य में नसीब न हो सकी। जैसा कि उन्होंने स्वयं एक पत्र में किसी मित्र को लिखा भी है।

"मैंने वह अन्दाज़ तहरीर ईजाद किया है कि मुरासले को मुकालमा बना दिया है, हज़ार कोस से बज़बान क़लम बातें किया करो हिज्र में विसाल के मज़े लिया करो।"

मिर्ज़ा का हृदय उदार और विशाल था। जेब में पड़े हुए पैसों को जब तक वे मुक्तहस्त होकर खर्च न कर डालते उन्हें चैन न आता था। इसी कारण उन्हें सदा पैसे का अभाव रहा मगर फिर भी उनका अमीराना ठाठ ज्यों का त्यों रहा। उन्होंने लम्बे-लम्बे कसीदे किसी रईस, नवाब या राजा की प्रशंसा में बहुत कम लिखे। स्वाभिमान उनमें कूट-कूट कर भरा था।

मिर्ज़ा ग़ालिब को शराब अधिक प्रिय थी। उनके मदिरा प्रेम की झलक उनकी कविता में स्थान-स्थान पर पाई जाती है। जैसे—

१

फिर देखिये अन्दाज़ गुल अफ़सानिये गुफ़्तार,
रखदे कोई पैमाना व सहबा मेरे आगे।

२

गो हाथ को जुम्बिश नहीं आखों में तो दम है,
रहने दो अभी सागरो मीना मेरे आगे।

२

पिलादे ओक से साक़ी जो हम से नफ़रत है,
पियाला गर नहीं देता, न दे—शराब तो दे।

लेकिन शराब पीने को मिर्ज़ा गुनाह समझते थे जैसा उनके नीचे के शेरों से प्रकट है—

१

काबा किस मुंह से जाओगे ग़ालिब
शर्म तुमको मगर नहीं आती।

२

ये मसायले तसव्वुफ़ ये तेरा बयान ग़ालिब
तुझे हम वली समझते जो न बादाख़्वार होता।

३

मय से गरज़ नशात है किस रू सियाह को
इक गूना बेखुदी मुझे दिन रात चाहिये।

मिर्ज़ा सूफ़ी विचार रखते थे, जैसा कि नीचे के शेरों से प्रकट होता है :—

१

जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फिर यह हंगामा ऐ खुदा क्या है।

२

लाल ओ गुल कहां से आये हैं
अब्र क्या चीज़ है हवा क्या है।

३

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता।
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता।

मिर्ज़ा की कविता में हास्य मिश्रित मादक ईश्वरीय प्रेम (रिन्दाना शोख़ी) बहुत पाई जाती है। उदाहरणार्थः—

१

वायज़ न तुम पियो न किसी को पिला सको।
क्या बात है तुम्हारे शराबे तहूर की।

२

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिलके बहलाने को ग़ालिब यह ख़्याल अच्छा है।

३

सताइशगर है ज़ाहिद इस क़दर जिस बाग़े रिज़वां का
वह इक गुलदस्ता है हम बेख़ुदों के ताके निसियां का

मिर्ज़ा को जीवन में कठिनाइयों का अत्यधिक सामना करना पड़ा था किन्तु सन् १८५७ तथा उसके पश्चात् तो ये घोर विपत्तियों में घिर गये थे क्योंकि बादशाह अबू ज़फ़र बहादुरशाह के साथ रहने तथा तत्कालीन सरकार की स्थापना का इतिहास लिखने के संदेह पर उन्हें भी विद्रोहियों में गिना जाने लगा था।

मिर्ज़ा के चाचा के देहान्त के बाद से अँग्रेज़ सरकार की तरफ़ से मिर्ज़ा और उनके भाई को जो पेन्शन मिला करती वह बन्द हो गई। इसी सिलसिले में क़िले की तन्ख़्वाह के साथ-साथ दरबार की कुर्सी और ख़िलअत (शाही पोशाक) भी समाप्त कर दी गई। उनके अधिकतर पत्र, जो मित्रों के नाम हैं उनमें उसका करुण वर्णन है।

मिर्ज़ा ने सदा इस बात का प्रयत्न किया कि वे बड़े बड़े अधिका-

रियों के समक्ष अपने को निरपराध प्रमाणित कर सकें। उन्होंने महारानी विक्टोरिया को भी एक क़सीदा लिख कर भेजा था। मिर्ज़ा के प्रयत्न सफल हुए और उन्हें उनकी पेन्शन फिर से मिलने लगी।

जीवन की अंतिम सीढ़ी पर पैर रखते रखते मिर्ज़ा को शारीरिक शक्तियों ने जवाब देना शुरू कर दिया और उनकी ख़ुराक भी बहुत घट गई। वृद्धावस्था आने पर श्रवण-शक्ति भी क्षीण हो गई। यहाँ तक कि जो कुछ उनसे कहना होता था उन्हें लिखकर दे दिया जाता था और वे पढ़कर लेटे-लेटे जवाब लिख देते थे। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उन्होंने निम्नलिखित शेर की रचना की थी और प्रायः उसे पढ़ा करते थे वह यूँ है:—

हमें वापसी बरसरे राह है
अज़ीज़ो अब अल्लाह ही अल्लाह है।

शब्दार्थ

अन्दाज़े तहरीर = लिखने का ढंग। ईजाद = आविष्कार। मुरासले = पत्र व्यवहार करना। मुकालिदा = बातचीत। गुल अफशानियाँ = फूल बरसाना। गुफ्तार = बातचीत। पैमाना = शराब पीने का बर्तन। सहबा = अंगूरी शराब। जुम्बिश = हिलना। सागर = शराब का प्याला। मीना = शराब का शीशा। पसाइले = प्रश्न। तसव्वुफ = धार्मिक। वली = साधू। बादाख्वार = शराबी।

गूना=प्रकार की। गूरजनिशात=प्रसन्नता की इच्छा। रुसियाह=पापी। बेख़ुदी=ईश्वर की याद में अपनत्व खो देना। अब्र=बादल। वाइज़=उपदेशक। तहूर=पवित्र। जन्नत=स्वर्ग। हक़ीक़त=वास्त-

विकता। सताइशगर=प्रशंसक। ज़ाहिद=तपस्वी। बागे रिज़वा=नन्दन कानन। ताके निखियाँ=भूषण आदि।

अन्ततः वे तिहत्तर वर्ष की आयु में सन् १८६९ ई० को दिल्ली में स्वर्गवासी हुए और वहीं पर दफ़ना दिये गये। उनकी मृत्यु के बाद ख्वाजा अल्ताफ हुसेन 'हाली' ने एक मर्सियां लिखा था जिसमें के कुछ पद्य निम्नलिखित हैं :—

१

बुलबुले हिन्द मर गया हैहात[1]
जिसकी थी बात बात में इक बात।

२

नुक्ता[2] दां, नुक्ता[3] संज, नुक्ता[4] शिनास
पाक दिल, पाक ज़ात, पाक सिफ़ात[5]।

३

लाख मजमूं और उसका एक ठठोल
सौ तकल्लुफ़ और उसकी सीधी बात।

४

हो गया नक्श दिल पै जो लिखा
क़लम उसका था और उसकी बात।

५

उसके मरने से मर गई दिल्ली
ख्वाजा नौशा[6] था और शहर बारात।

६

यां अगर बज़्म[7] थी, तो उसकी बज़्म
यां अगर ज़ात थी, तो उसकी ज़ात।

७

एक रौशनदिमाग़[८] था न रहा
शहर में एक चिराग़ था न रहा।

शब्दार्थ

१—हैहात = अफसोस व शोक की बात। २—नुक्ता दां = बारीक बातों का ज्ञाता। ३—नुक्ता संज = बारीक बातों का तोलने वाला। ४—नुक्ता शनास = बारीक बातों का पहिचानने वाला। ५—सिफ़ात = गुण। (ख़्वाजा यह गालिब के लिये लिखा गया है।) ६ नौशा = दूल्हा। ७—बज़्म = सभा। ८—रौशनदिमाग़ = बुद्धिमान।

मिर्ज़ा असदुल्ला ख़ाँ 'ग़ालिब'

जन्म-आगरा १७९६ ई० मृत्यु-दिल्ली १८६९ ई०

मिर्ज़ा ग़ालिब के पूर्वज ऐबक जाति के तुर्क थे। इनके दादा शाहआलम के समय में दिल्ली आए और शाही दरबार में नौकर हो गए। जिस समय मिर्ज़ा की आयु ५ वर्ष की थी उस समय उनके पिता अलवर में किसी लड़ाई में मारे गए। इनके चाचा नसरुल्ला बेग ख़ाँ मरहटों की ओर से अकबराबाद के सूबेदार थे। उन्होंने मिर्ज़ा को बाप के मरने के बाद पाला पोसा। चाचा के मरने के पश्चात् मिर्ज़ा की अँगरेज़ी सरकार ने कुछ पेंशन नियत कर दी। शादी होने के पश्चात् मिर्ज़ा ग़ालिब ने आगरा छोड़ कर दिल्ली में नियमित रूप से रहना स्वीकार कर लिया। और यहीं ७३ वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

मिर्ज़ा के पूर्वजों ने बहुत-सी सम्पत्ति छोड़ी थी, परन्तु वह उनके उदार स्वभाव के कारण शीघ्र समाप्त हो गई। तदनन्तर मिर्ज़ा को सदैव रुपये की तंगी रही। एक दिन हुसेन अली ख़ाँ मिर्ज़ा का छोटा लड़का खेलता हुआ उनके पास आया और उसने कहा—"दादा जान मिठाई मँगा दो।" आपने उत्तर दिया—"पैसे नहीं हैं।" वह संदूक़चा खोलकर पैसे इधर-उधर टटोलने लगा। इस पर उन्होंने एक शेर पढ़ा—

दिरमो[1] दाम अपने पास कहाँ ?
चील के घोंसले में मास कहाँ ?

मिर्ज़ा को शराब से विशेष रुचि थी और इस रुचि के कारण उनका ख़र्च अधिक बढ़ गया था। जो कभी-कभी असह्य हो

१—रुपये पैसे।

जाता था। एक बार एक हुंडी में १२ दिन की अवधि शेष थी उसमें से ६ दिन गुज़र गये थे और ६ दिन शेष थे कि मिर्ज़ा को रुपये की अत्यधिक आवश्यकता आ पड़ी। उन्होंने मिती काटकर रुपया वसूल कर लिया और सबका ऋण चुकता कर दिया। अब उनके पास ४७ रुपये, ४ बोतल शराब और तीन गुलाब के शीशे थे।

लतीफ़ा

१—एक बार एक महाशय ने मिर्ज़ा ग़ालिब से कहा—"शराब पीना महान् पाप है।" आपने हँस कर पूछा—"अच्छा! यदि कोई पिये, तो क्या होता है?" उसने उत्तर दिया—"छोटी-सी बात यह है कि शराब पीने वाले की दुआ क़ुबूल नहीं होती।" उस पर मिर्ज़ा ने कहा "आप जानते हैं शराब पीता कौन है? प्रथम तो वह, जिसके सामने एक बोतल ओलटाम[1] की समस्त उपकरणों सहित रक्खी हो; दूसरे, उसको कोई चिंता न हो। जिसको ये वस्तुयें प्राप्त हैं उसे और चाहिये ही क्या, जिसके लिये दुआ करे?"

२—जाड़े की ऋतु थी। एक दिन नवाब मुस्तफ़ा खाँ मिर्ज़ा के घर आये। मिर्ज़ा ने उनके आगे शराब का गिलास भर कर रख दिया। वह उनका मुँह देखने लगे। मिर्ज़ा ने कहा—"पीजिये"। चूंकि उन्होंने शराब पीनी छोड़ दी थी, अतः उन्होंने कहा—"मैंने तो तोबा[2] कर ली है।" आपने आश्चर्य से पूछा "हैं! क्या जाड़े में भी?"

३—भूपाल से दिल्ली एक महाशय घूमने के लिये आये, यहाँ वे मिर्ज़ा साहब से भी मिले। वे धार्मिक सिद्धांतों

१—एक प्रकार की अँगरेज़ी शराब का नाम है। २—किसी धर्म-विरुद्ध वस्तु को ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा।

के माननेवाले थे। मिर्ज़ा उस समय बैठे शराब पी रहे थे। गिलास और शराब का शीशा उनके सामने रखा था। उस बेचारे को ज्ञात न था कि मिर्ज़ा शराब भी पीते हैं, इसलिये उसने शराब का शीशा शरबत का गिलास समझ कर हाथ में उठा लिया। एक व्यक्ति उनके पास और बैठा था। उसने कहा कि जनाब यह शराब है। भूपाली ने तुरंत शीशा हाथ से रख दिया और कहा—"मैंने तो शरबत के धोखे में उठा लिया था।" मिर्ज़ा ने मुस्करा कर उनकी तरफ़ देखा और कहा—"जिहे नसीब[1] धोखे में नजात[2] हो गई।"

४—मिर्ज़ा की बहन बीमार थी। वह उनका हाल पूछने गये। बहन बोली—"मरती हूँ, ऋण की चिंता है कि उसे गर्दन पर लिये जाती हूँ।" मिर्ज़ा ने कहा—"बुआ! भला यह भी कोई चिंता की बात है। ख़ुदा के यहाँ क्या मुफ़्ती सदरुद्दीन खाँ बैठे हैं, जो डिगरी करके पकड़वा बुलायेंगे।"

५—एक दिन मिर्ज़ा के एक शिष्य ने आकर उनसे कहा—"हज़रत! आज मैं अमीर ख़ुसरो की क़ब्र पर गया था। उनकी क़ब्र पर एक खिरनी का पेड़ है। उसकी खिरनियाँ मैंने ख़ूब खाईं। खिरनियों का खाना था कि मेरी योग्यता बहुत बढ़ गयी।" (लोगों का विश्वास है कि अमीर ख़ुसरो की क़ब्र पर जो खिरनी का वृक्ष है यदि कोई उसकी खिरनियाँ खाये, तो उसकी योग्यता बढ़ जाती है।) मिर्ज़ा ने कहा—"अरे मियाँ! तीन कोस क्यों गये—मेरे पिछवाड़े के पीपल की पत्तियाँ क्यों न खा लीं? इससे तुम्हारी योग्यता कहीं अधिक बढ़ जाती—"

६—रमज़ान का महीना था। नवाब हुसेन मिर्ज़ा के यहाँ बैठे थे। मिर्ज़ा ने पान मँगवा कर खाया। वहाँ एक धर्मनिष्ठ महोदय

१—बड़े भाग्य की बात है। २—मुक्ति।

बैठे थे। उन्होंने आश्चर्य से पूछा—"क़िबला! आप रोज़ा नहीं रखते?" मिर्ज़ा ने मुस्कराकर जवाब दिया—"शैतान ग़ालिब है[1]।"

७—ग़दर के कुछ समय पश्चात् पंजाब सरकार के एक अधिकारी उनसे मिलने आये। मिर्ज़ा विद्रोहोपरांत की कठोरताओं झेलते-झेलते बहुत दुखी हो गये थे। उन्होंने उनसे बातचीत के समय कहा—"उम्र भर में एक दिन शराब न पी हो, तो काफ़िर और एक बार भी नमाज़ पढ़ी हो, तो मुसलमान नहीं। फिर मैं नहीं जानता कि मुझे सरकार ने विद्रोही मुसलमानों में किस प्रकार सम्मिलित समझा।"

८—मिर्ज़ा की क़ातेह बुरहान नामक पुस्तक पर बहुत से शख़्सों ने आक्षेप किया था और उस पर बहुत से अपशब्द[2] कहे हैं। किसी के यह पूछने पर कि हज़रत आप ने उन शख़्सों की किताब का जवाब क्यों नहीं लिखा? मिर्ज़ा ने उत्तर में कहा—"अगर कोई गधा तुम्हारे लात मारे, तो तुम उसका क्या जवाब दोगे?"

९—मिर्ज़ा असदुल्लाख़ाँ पहिले अपनी कविता में "असद" उपनाम का प्रयोग किया करते थे। एक बार किसी ने दूसरे किसी कवि की ग़ज़ल का एक मक़ता[3] उनके सामने पढ़ा। वह कवि भी "असद" उपनाम से लिखा करता था। मक़ता सुनते ही मिर्ज़ा ने उपनाम बदल देने का निश्चय कर लिया और तब से वे "ग़ालिब" तख़ल्लुस का प्रयोग कविता में करने लगे। वह मक़ता यह है—

१—'शैतान ग़ालिब है' इस वाक्य के दो अर्थ हैं। पहला यह कि हम शैतान के बस में हैं। दूसरे यह कि ग़ालिब कवि ख़ुद शैतान है। २—बुरा भला कहना। ३—ग़ज़ल का आख़िरी शेर जिसमें कवि अपना उपनाम लाता है।

असद तुमने बनाई यह ग़ज़ल ख़ूब।
अरे वह शेर रहमत है खुदा की॥

१०—मिर्ज़ा पर किसी दूकानदार ने शराब के दामों के बारे में, जो अदा न हुये थे, अभियोग चला दिया। मुक़दमे की सुनवाई मुफ़्ती सदरुद्दीन ख़ाँ साहब के न्यायालय में हुई। आरोप के उत्तर में मिर्ज़ा ने यह शेर पढ़ा—

क़र्ज़ की पीते थे मै[1] लेकिन समझते थे कि हाँ,
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ामस्ती[2] एक दिन।

मुफ़्ती साहब ने बादी को अपने पास से रुपये दे दिये और मिर्ज़ा साहब को छोड़ दिया।

मिर्ज़ा को एक आकस्मिक दुर्घटना-वश जेल की भी हवा खानी पड़ी। वहाँ उनके कपड़े बहुत गन्दे और मैले हो गए थे। उनमें जुएँ पड़ गए थे। उनसे मिलने के लिये एक रईस वहाँ पहुँचे और मिर्ज़ा से पूछा कि क्या हाल है? मिर्ज़ा ने जवाब में यह शेर पढ़ा—

"हम ग़मज़दा[3] जिस दिन से गिरफ़्तारे बला हैं,
कपड़ों में जुएँ बख़ियों के टाँको से सिवा हैं।

मिर्ज़ा ने जिस दिन जेल से छुटकारा पाया और जब उनको कपड़े बदलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो उन्होंने कुरता उतारते हुये यह शेर पढ़ा—

२

"वाय! उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत 'ग़ालिब'
जिसकी क़िस्मत में हो आशिक़ का गरेबाँ[4] होना।"

मिर्ज़ा की उदारता और धनिकों सदृश ठाट-बाट ने उनको

१—शराब। २—खाना न मिलने पर भी मस्ती का होना। निर्धनता। ३—रंज का मारा हुआ। ४—गला।

सदैव चिन्तित और दुखी रक्खा, परंतु इस पर भी वह किसी के सामने न झुके और अपने स्वाभिमान को न छोड़ा। जैसा कि निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा—

ब्रिटिश सरकार ने देहली कालेज का प्रबंध नये सिरे से करना चाहा। टामस साहब सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट, जो लेफ्टिनेन्ट गवर्नर भी रह चुके थे, इस काम के लिये दिल्ली आये। उन्होंने चाहा कि इस कालेज में फ़ारसी का एक अध्यापक भी रक्खा जाय। लोगों से पूछने पर उनको मिर्ज़ा का नाम बताया गया। मिर्ज़ा साहब बुलाये जाने पर साहब की कोठी पर गए। टामस साहब को उनके आने की सूचना दी गई। मिर्ज़ा पालकी से उतर कर इस प्रतीक्षा में ठहर गए कि पहिले की तरह सेक्रेटरी साहब स्वागत के लिये आयेंगे। जब वह उधर न आए, न यह उधर गए और देर हुई, तो सेक्रेटरी साहब ने जमादार से पूछा—"वह अब तक क्यों नहीं आया?" जमादार बाहर आया और मिर्ज़ा से पूछा – "आप क्यों नहीं चलते"? मिर्ज़ा ने कहा—"साहब स्वागत के लिये नहीं आए, मैं कैसे जाता?" जमादार ने जाकर वह बात साहब से कह दी। साहब बाहर आये और कहा—"जब आप दरबार गवर्नरी में किसी रियासत के प्रतिनिधि बनकर आयेंगे, तो आपका स्वागत किया जायगा, इस समय आप नौकरी के लिये आये हैं, अतः सम्मान के अधिकारी नहीं।" मिर्ज़ा साहब ने कहा—"मैं समझा था कि गवर्नमेंट की नौकरी से मेरा सम्मान बढ़ जायगा न यह कि पूर्वजों के आदर को भी खो बैठूँ।" साहब ने कहा—"हम स्वागत करने से मजबूर हैं।" इस पर मिर्ज़ा वापस चले आये

मिर्ज़ा को दो बार बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। प्रथम जब कि चचा की मृत्यु हुई। दूसरे, जब सन् ५७

(ग़दर) के अवसर पर बग़ैर कुछ किये धरे विद्रोह के जुर्म में पेंशन के साथ दरबार की कुरसी, और ख़िलअत[1] बंद हुई। उनकी जान इस तरह बची कि वह स्वर्गीय हकीम मुहम्मद हसन ख़ाँ के मकान में नौ दस वर्ष से किराये पर रहते थे। इस मकान से मिले हुए और भी कई हकीमों के घर थे, जो राजा नरेन्द्रसिंह बहादुर पटियाला नरेश के दरबार में नौकर थे। राजा साहब ने ब्रिटिश सरकार के बड़े-बड़े अफ़सरों से वचन ले लिया था कि ग़दर के दब जाने पर उन पर किसी प्रकार की कठोरता न की जायगी। अतः विजय हो जाने पर राजा के सिपाही वहाँ आ बैठे और वह गली सुरक्षित रही। यह एक ऐसा भयंकर समय था कि किसी मुसलमान का मकान दिल्ली में ढूँढ़े से भी नहीं मिलता था। क्या धनी, क्या निर्धनी, क्या व्यापारी। अगर कुछ लोग वहाँ थे, तो बाहर के।

मिर्ज़ा का शहर में होना ब्रिटिश गवर्नमेंट के अफ़सरों को ज्ञात था, किंतु चूँकि उनके प्रति बादशाही दफ़्तर में कोई प्रतिकूल रिपोर्ट दर्ज न थी और न भेदिया लोगों ने ही उनके प्रतिकूल कोई बात बताई थी, इस कारण वह न पकड़े गए। अन्यथा जहाँ और बड़े-बड़े जागीरदार बुलाए गए या पकड़े गए, बेचारे मिर्ज़ा किस गिनती में थे!

जब दिल्ली तबाह हुई, तो मिर्ज़ा को और अधिक कष्टों का सामना करना पड़ा। इधर क़िले की तनख़्वाह जाती रही, उधर पेंशन बंद हो गई और उन्हें रामपुर जाना पड़ा। नवाब साहब २० या २५ वर्ष से उनके शागिर्द (शिष्य) थे। और कभी-कभी अपनी ग़ज़ल मिर्ज़ा साहब के पास भेजा करते थे। यह शुद्ध करके उसे वापस कर देते थे। नवाब साहब के यहाँ से कभी-

१—बहुमूल्य कपड़े, जो किसी राजा की ओर से दिये जायँ।

कभी रुपया भी मिलता रहता था। मिर्ज़ा के वहाँ जाने पर नवाब साहब ने उनका बड़ा सम्मान किया। परंतु मिर्ज़ा को दिल्ली बग़ैर कब चैन था। कुछ समय बाद वह वहाँ से दिल्ली लौट आये। अब चूँकि सरकारी पेंशन जारी हो गई थी, इसलिये निर्वाह किसी-न-किसी प्रकार होता रहा।

मिर्ज़ा दैवी कठिनाइयों के कारण भली भाँति शिक्षा न प्राप्त कर सके। वह जब पाँच ही वर्ष के थे उनके पिता का देहान्त हो गया था और जब ९ वर्ष के हुए तब उनके चाचा का साया सर पर से उठ गया। किन्तु वह ऐसी विलक्षण प्रतिभा लेकर आए थे कि स्वयं ही बिना किसी विशेष सहायता के फ़ारसी और उर्दू के पूर्ण विद्वान् हो गये। फ़ारसी भाषा से उनको हार्दिक प्रेम था और इस भाषा के वह विशेषज्ञ माने गये हैं। उर्दू भाषा उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकती। उन्होंने उसमें चार चाँद लगा दिए। लेकिन कठिनाई यह है कि उनकी कविता बहुत ही कठिन है। उर्दू भाषा के अच्छे-अच्छे विद्वान् भी उनके अधिकतर शेरों के अर्थ नहीं बता सकते।

मीर तक़ी[1] ने, जो दिल्ली के रहनेवाले और प्रसिद्ध कवि थे, मिर्ज़ा के बचपन के शेरों को सुनकर यह कहा था—"यदि इस लड़के को कोई बड़ा विद्वान् मिल गया और उसने इसको सीधे रास्ते पर लगा दिया तो यह अद्वितीय कवि बन जायगा अन्यथा अनर्गल बकने लगेगा।"

हकीम आग़ा जान "ऐश"[2] ने अपनी ग़ज़ल में ग़ालिब के मुश्किल कहने पर इस प्रकार कटाक्ष किया था।

"अगर अपना कहा तुम आप ही समझे तो क्या समझे,
मज़ा कहने का जब है एक कहे और दूसरा समझे।

१—कवि का उपनाम है। २—उपनाम।

क़लामेमीर[1] समझे और ज़बाने मीरज़ा[2] समझे,
मगर इनका कहा यह आप समझें या ख़ुदा समझे।"

जब इन कटाक्षों के चरचे बहुत बढ़ गये, तो मिर्ज़ा ने एक शेर से सबका जवाब दे दिया—

"न सिताइश[3] की तमन्ना[4] न सिले[5] की परवाह,
न सही गर मेरे अशआर में मानी न सही।"

और एक रुबाई भी कही—

"मुश्किल है ज़िबस[6] कलाम मेरा ऐ दिल
सुन सुन के उसे सुख़नबराने कामिल[7]।
आसाँ कहने की करते हैं फ़रमाइश
गोयम मुश्किल वगर न गोयम मुश्किल"[8]।

मित्रों के बहुत कहने-सुनने से मिर्ज़ा ने कठिन कविता करनी छोड़ दी थी। मौलवी फज़लहक़ और मिर्ज़ा ख़ाँ दोनों ही बहुत योग्य व्यक्ति थे और मिर्ज़ा के विशेष मित्रों में से थे। उन्होंने मिर्ज़ा के अशआर सुने और दीवान[9] भी देखा। उन्होंने मिर्ज़ा साहब को समझाया कि आपकी कविता साधारण मनुष्य नहीं समझ सकेंगे। मिर्ज़ा ने कहा—"इतना कुछ कह चुका अब क्या उपाय हो सकता है।" उन्होंने कहा—"जो हुआ सो हुआ अब दीवान की छान-बीन करके मुश्किल शेर निकाल डाले जाएँ।" मिर्ज़ा ने दीवान उनके हवाले कर दिया। दोनों महाशयों ने देख कर कठिन शेर उसमें से निकाल डाले। जो दीवान का

१—"मीर" की कविता, २—एक कवि का उपनाम। ३—प्रशंसा ४—इच्छा, ५—इनाम। ६—बहुत। ७—पूर्ण विद्वान कवि। ८—अगर मैं आसान कहता हूँ, तो मेरे लिये कठिनाई है और अगर नहीं कहता हूँ, तो भी कठिनाई है। ९—कविताओं का संग्रह।

हिस्सा बच गया उर्दू भाषा के जाननेवाले आज उसको ऐनक की तरह आँखों से लगाए फिरते हैं।

मिर्ज़ा ने इसके पश्चात् जो कविता की है, उसका अर्थ बहुत गूढ़ नहीं है। फिर भी उसमें फ़ारसी शब्द जगह-जगह पाये जाते हैं। जैसा कि नीचे के उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा।

पहिले की कविता – मिलना तेरा अगर नहीं आसाँ तो सहल है,
दुश्वार तो यही है कि दुश्वार भी नहीं।

बाद की कविता—दर्द मिन्नतकशे[1] दवा न हुआ,
मैं न अच्छा हुआ बुरा न हुआ।

उर्दू भाषा की कविता में यह बात ऊँचे दर्जे की समझी जाती है कि एक ही शेर में दो विरोधी शब्दों का प्रयोग किया जाय। मिर्ज़ा की कविता में यह बात अधिक पाई जाती है। ऊपर दिये हुए दोनों शेरों से यह बात स्पष्ट हो जाती है। पहिले शेर में कवि ने दो विरोधी शब्द आसाँ और दुश्वार (मुश्किल) तथा दूसरे शेर में अच्छा और बुरा प्रयोग किया है।

मिर्ज़ा ग़ालिब का जिस प्रकार कविता के क्षेत्र में एक उच्च स्थान है, उसी तरह वे गद्य में भी अग्रणी माने जाते हैं। क्योंकि उन्होंने नवीन प्रणाली का आविष्कार किया है। उर्दू ये मुअल्ला[2] केवल उनके पत्रों और रुक़्क़ों का संग्रह है। मिर्ज़ा ने प्रशस्ति और अभिवादन को बहुत सादा और संक्षिप्त रूप दिया है। वह पत्र के आरंभ में कभी मियाँ, कभी बरख़ुरदार, कभी भाई साहब और कहीं महाराज या और कोई उचित शब्द लिख देते थे। मिर्ज़ा अपने पत्र में विचारों को इस प्रकार प्रकट करते थे, जैसे दो आदमी बैठे बातें कर रहे हों।

वे अपने पत्रों की बाबत स्वयं लिखते हैं—"मैंने वह अंदाज़-

१—अहसान उठाना। २—ग़ालिब की एक प्रसिद्ध गद्य पुस्तक।

तहरीर[1] ईजाद[2] किया है कि मुरासिला[3] को मुकालिमा[4] बना दिया है। हज़ार कोस से बज़बाने क़लम बातें किया करो, हिज्र[5] में विसाल[6] के मज़े लिया करो।"

मिर्ज़ा ग़ालिब ने अपने पत्रों द्वारा समय-समय पर अपने मन के जिन विचारों को प्रकट किया है, वे किसी भी साहित्य के लिये एक अमूल्य निधि हो सकते हैं और वह अपने समय की ऐतिहासिक घटनाओं पर भी अच्छा प्रकाश डालते हैं। उनके पत्रों में उनके प्रेमपूर्ण एवं विशाल हृदय का परिचय मिलता है। यह पत्र विद्यार्थियों की उर्दू-पाठ्य-पुस्तकों में अधिकता से पाये जाते हैं। इन पत्रों में ऐसा आकर्षण है कि पाठक स्वयं इनकी ओर बलात् आकर्षित हो जाता है। इनको पढ़कर पाठक जिस भावना की अनुभूति करता है, वह काव्यानन्द ही का सृजन करती है। इन पत्रों में वेदना-पूर्ण भावों का एक संसार-सा बसा हुआ मिलता है।

इन पत्रों द्वारा लेखक ने कहीं पाठकों से, कहीं स्वयं अपने आपसे बातचीत करने का अनोखा ढंग अपनाया है। उसके हृदयोद्गार उसकी लेखनी से निकले पड़ते हैं। कहीं तो लेखक ने हृदय काग़ज़ के टुकड़ों पर ही निकाल कर रख दिया है। इन काग़ज़ के टुकड़ों पर एक ऐसे विशाल हृदय का अस्तित्व मिलता है, जिसमें वेदना तो है ही, साथ-ही-साथ सत्यता, सहानुभूति और प्रेमाधिक्य का भी अभाव नहीं।

आइये, हम उस महान् लेखक के हृदय को उसी के पत्रों में टटोलें।

१—लिखने का ढंग। २—आविष्कार। ३—पत्र। ४—कथनोपकथन। ५—जुदाई। ६. मिलना।

पहला पत्र

मुंशी हरगोपाल "तफ्ता"[1] के नाम

सौ रुपये की हुंडी वसूल कर ली। २४ रुपये दरोग़ा द्वारा उठे थे, वह दिए। ५० रुपये महल में भेज दिए। २६ रुपये बाक़ी रहे, वह बक्स में रख लिए। कुलियाँ[2] सौदा लेने बाज़ार गया। जल्द आ गया तो आज वरना कल यह ख़त डाक में भेज दूँगा। ख़ुदा तुमको जीता रक्खे और अजर[3] दे। भाई बुरी आ बनी है। अंजाम[4] अच्छा नज़र नहीं आता।

दूसरा पत्र

(उन्हीं के नाम)

महाराज, आपका मेहरबानी नामा[5] पहुँचा। दिल मेरा अगर्चे ख़ुश न हुआ, लेकिन नाख़ुश भी न रहा। बहरहाल मुझको कि नालायक़ व ज़लील तरीन[6] ख़लायक[7] हूँ, अपना दुआगो[8] समझते रहो। क्या करूँ, अपना शेवा[9] तर्क[10] नहीं किया जाता। वह रविश[11] हिन्दोस्तानी, या फ़ारसी लिखने की मुझको नहीं आती कि बिलकुल भाटों की तरह बकना शुरू करूँ। मेरे क़सीदे[12] देखो, तशबीब[13] के शेर बहुत पाओगे और मदह[14] के शेर कमतर[15]। नसर[16] में भी यही हाल है। नवाब

१—मिर्ज़ा के एक प्रिय शिष्य का उपनाम है। २—नौकर। ३—बदला। ४—परिणाम। ५—कृपापत्र। ६—अत्यंत। ७—प्राणी ८—शुभचिन्तक। ९—स्वभाव। १०—छोड़ना। ११—प्रणाली। १२—वह कविता जिसमें किसी की प्रशंसा की गई हो। १३—परिचय विषय-प्रवेश। १४—प्रशंसा। १५—बहुत कम। १६—गद्य।

मुस्तफ़ाख़ाँ के तज़किरे[1] की तक़रीज़[2] को मुलाहिज़ा[3] करो कि उनकी मदह कितनी है ? मिर्ज़ा रहीमुद्दीन बहादुर 'हया' तख़ल्लुस[4] के दीवान के दीबाचे[5] को देखो फ़क़त एक बैत[6] में उनका नाम और उनकी मदह आई है और बाक़ी सारी नसर में कुछ और ही और मनालिब[7] हैं। वल्लाह[8] बिल्लाह किसी शहज़ादे या अमीरज़ादे के दीवान का दीबाचा लिखता, तो उतनी मदह न करता कि जितनी तुम्हारी मदह की है। हमको और हमारी रविश को अगर पहिचानते तो इतनी मदह को बहुत जानते।

तीसरा पत्र

(उन्हीं के नाम)

क्यों साहब, रूठे ही रहोगे या कभी मानोगे भी ? और अगर किसी तरह नहीं मानते, तो रूठने की वजह तो लिखो। मैं इस तन-हाई[9] में सिर्फ़ ख़तों के भरोसे जीता हूँ। यानी जिसका ख़त आया मैंने जाना कि वह शख़्स तशरीफ़ लाया[10]। ख़ुदा का एहसान[11] है कि कोई दिन ऐसा नहीं होता कि जो अतराफ़ व जवानिब[12] से दो चार ख़त न आ रहते हों। बल्कि ऐसा भी दिन होना है कि दो दो बार डाक का हरकारा ख़त लाता है। एक दो सुबह को और एक दो शाम को, मेरी दिल्लगी[13] हो जाती है। दिन उनके पढ़ने

१—जीवन। २—आलोचना। ३—अवलोकन। ४—उपनाम। ५—भूमिका। ६—मुक्तक छंद। ७—अर्थ। ८—ख़ुदा की क़सम। ९—एकान्तवास। १०—आया। ११—कृपा। १२—इधर उधर। १३—मन बहलाव।

और जवाब देने में गुज़र जाता है। यह क्या सबब दस-दस बारह-बारह दिन से तुम्हारा ख़त नहीं आया ? यानी तुम नहीं आये। ख़त लिखो साहब, न लिखने की वजह लिखो। आध आने में न वुख़ल[1] करो। ऐसा हो है तो बैरंग भेजो।

ग़ालिब—सोमवार, दिसम्बर १८५७ ई०

चौथा पत्र

(उन्हीं के नाम)

बस, अब तुम इस्कदराबाद में रहे, कहीं और क्यों जाओगे ! बंकघर का रुपया खा चुके हो, अब कहाँ से खाओगे। मियाँ ! न मेरे समझाने को दख़ल[2] है न समझने की जगह है। एक ख़र्च है कि वह चला जाता है। जो होना है वह हुआ जाता है। इख़्तियार हो तो कुछ किया जाए। कहने की बात हो, कहा जाए। मुझको देखो न आज़ाद हूँ न मुक़य्यद[3]। न रंजूर[4] हूँ न तन्दुरुस्त, न ख़ुश हूँ न नाख़ुश, न मुर्दा हूँ न ज़िन्दा। जिए जाता हूँ। बातें किए जाता हूँ। रोटी रोज़ खाता हूँ। शराब गाहबगाह[5] पिये जाता हूँ। जब मौत आयेगी मर भी रहूँगा। न शुक्र है न शिकायत ही, जो तक़रीर[6] है बसबील[7] हिकायत है।

१—कृपणता। २—गुंजाइश। ३—बंदी। ४—रोगी। ५—कभी-कभी। ६—कथन। ७—रूप में।

पाँचवाँ पत्र

(उन्हीं के नाम)

साहब तुम जानते हो कि यह मामला क्या है ? और क्या वाक़या हुआ। वह एक जन्म था कि जिसमें तुम बाहम[1] दोस्त थे और तरह-तरह के हममें तुममें मामलात मेहरो मुहब्बत[2] दरपेश[3] आये। शेर कहे, दीवान[4] जमा किए। उसी ज़माने में एक बुज़ुर्ग[5] थे कि हमारे तुम्हारे दोस्त दिली थे और मुंशी नबीबख्श उनका नाम और 'हक़ीक़' तख़ल्लुस था। नागाह[6] वह ज़माना न रहा। न वह अशख़ाश[7] न वह मामलात। न वह एख़्तिलात[8] न वह इनबिसात[9]। बाद चन्द मुद्दत के फिर दूसरा जन्म हमको मिला। अगर्चे सूरत इस जन्म की वऐनहू[10] मिस्ल पहले जन्म के है। याने एक ख़त मैंने मुंशी नबीबख्श साहब को भेजा। उसका जवाब मुझको आया और एक ख़त तुम्हारा कि तुम भी मौसूमबेह[11] मुंशी हरगोपाल व मुतख़ल्लिस[12] बतफ़्ता[13] हो, आज आया। मैं जिस शहर में रहता हूँ, उसका नाम दिल्ली और उस मुहल्ले का नाम बिल्लीमारों का मुहल्ला है। लेकिन एक दोस्त उस जन्म के दोस्तों में से नहीं पाया जाता। वल्लाह[14] ढूँढ़ने को मुसलमान इस शहर में नहीं मिलता।

१—आपस में। २—कृपा और प्रेम। ३—सामने आए। ४—कविता का संग्रह ग्रंथ। ५—सम्मानित व्यक्ति। ६—अकस्मात्। ७—व्यक्ति। ८—प्रेम-मिलना। ९—प्रसन्नता। १०—सर्वथा। ११—उसी नाम के। १२—जिसका उपनाम हो। १३—हरगोपाल का उपनाम। १४—क़सम ख़ुदा की।

क्या अमीर क्या ग़रीब क्या अहले हिरफ़ा[1]। अगर कुछ हैं तो बाहर के हैं। हिनूद[2] अलबत्ता कुछ-कुछ आबाद हो गए हैं। अब पूछो कि तू क्योंकर मसकन[3] क़दीम[4] में बैठा रहा। साहब बन्दा मैं हकीम मुहम्मद हसन ख़ाँ मरहूम[5] के मकान में नौ दस बरस से किराए को रहता हूँ और यहाँ क़रीब क्या बल्कि दीवार ब दीवार[6] हैं घर हकीमों के और वह नौकर हैं राजा नरेन्द्रसिंह बहादुर वालिए पटियाले के। राजा साहब ने साहबान आलीशान[7] से अहद[8] ले लिया था कि बवक़्त ग़ारत[9] दिल्ली यह लोग बच रहेंगे। चुनांचे बाद फतह राजा के सिपाही यहाँ आ बैठे और यह कूचा[10] महफूज़[11] रहा। वरना मैं कहाँ और यह शहर कहाँ। मुबालगा[12] न जानना। अमीर व ग़रीब सब निकल गए जो रह गए थे, वह निकाले गए। जागीर, पेन्शनदार और दौलतमन्द अहले हिरफ़ा कोई भी नहीं है। मुफ़स्सिल[13] हाल लिखते हुए डरता हूँ। मेरा शहर में होना हुक्काम[14] को मालूम है, मगर चूँकि मेरी तरफ़ बादशाही दफ़्तर में से या मुख़बिरों के बयान से कोई बात पाई नहीं गई, लिहाज़ा तलबी[15] नहीं हुई। वरना जहाँ बड़े-बड़े जागीरदार बुलाए हुए या पकड़े हुए आए हैं मेरी क्या हक़ीक़त थी गरज़े कि अपने मकान में बैठा हूँ। दरवाज़े से बाहर नहीं निकल सकता। सवार होना और कहीं जाना तो बड़ी बात है। रहा यह कि कोई मेरे पास आए

१—पेशावर लोग। २—हिन्दू लोग। ३—निवासस्थान। ४—पुराना। ५—स्वर्गीय। ६—दीवार से मिली हुई दीवार। ७—बड़े-बड़े अफ़सर। ८—वचन। ९—नष्ट होने के समय पर। १०—गली। ११—सुरक्षित। १२—अतिशयोक्ति। १३—विस्तार के साथ। १४—हाकिम अफ़सर। १५—बुलाना।

शहर में है कौन जो आवे ? घर बेचिराग़ पड़े हैं। मुजरिम रियासत जाते हैं। जरनैली[1] बन्दोबस्त याज़ दहुम[2] मई से आज तक याने शम्बा[3] पंजुम[4] दिसम्बर सन् १८५७ तक बदस्तूर है। यहाँ बाहर से अन्दर कोई बग़ैर टिकट के आने जाने नहीं पाता। तुम ज़िनहार[5] यहाँ का इरादा न करना।

छठा पत्र

[मुंशी हरगोपाल तफ्ता ने एक मसनवी लिखी थी। उन्होंने मिर्ज़ा ग़ालिब से दरयाफ्त किया कि क्या वह उसको ठीक कर देंगे ? जिसके जवाब में मिर्ज़ा ने उनको यह पत्र लिखा था।]

सुनो साहब ! यह तुम जानते हो कि स्वर्गीय ज़ैनुलआबदीनख़ाँ मेरा फ़रज़न्द[6] था। और अब उसके दोनों बच्चे कि वह मेरे पोते हैं, मेरे पास आते हैं और दम बदम मुझको सताते हैं और मैं तहम्मुल[7] करता हूँ। ख़ुदा गवाह है कि मैं तुमको अपने फ़रज़न्द को जगह समझता हूँ। पस तुम्हारे नतायजतबा[8] मेरे मानवी[9] पोते हुए। जब इन आलम[10] सूरत के पोतों से कि मुझे खाना नहीं खाने देते, मुझको दोपहर को सोने नहीं देते, नंगे नंगे पाँव मेरे पलंग पर रखते हैं, कहीं पानी लुढ़काते हैं, कहीं ख़ाक उड़ाते हैं,

---

१-मार्शल-ला। २—ग्यारह। ३—शनिवार। ४—पाँचवीं। ५—कदापि। ६—बेटा। ७—सहनशीलता। ८—नतीजा तबियत अर्थात् जो कुछ तुमने सोचकर लिखा है। ९—मानस पौत्र, धर्म पौत्र। १०-शरीर रखनेवाले।

मैं तंग नहीं आता, तो उन मानवी पोतों से कि उनमें ये बातें नहीं हैं, क्यों घबराऊँ! आप उसको जल्द मेरे पास बसबील[1] डाक भेज दीजिए कि मैं उनको देखूँ, वादा करता हूँ कि फिर जल्द उनको तुम्हारे पास बसबील डाक भेज दूँगा।

सातवाँ पत्र मिर्ज़ा तफ़्ता के नाम

"यह तुम्हारा दुआगो[2] अगर्चे और अमूर[3] में पाए[4] आली नहीं रखता मगर एहितियाज में उसका पाया बहुत आली है, यानी बहुत मुहताज है। सौ दो सौ में मेरी प्यास नहीं बुझती। तुम्हारी हिम्मत पर सौ हज़ार आफ़रीं[5]। जयपुर से अगर मुझको दो हज़ार हाथ आ जाते तो मेरा क़र्ज रफ़ा हो जाता और फिर अगर दो चार वर्ष को और ज़िन्दगी होती तो उतना ही क़र्जा और मिल जाता। यह पाँच सौ तो भाई तुम्हारी जान क़सम मुतफ़र्रिक़ात[6] में जाकर सौ डेढ़ सौ बच रहेंगे, सो वह मेरे सर्फ़ में आयेंगे और वह जो सौ बाबू साहब से मँगवाए थे, वह सिर्फ़ अँगरेजी सौदागर के देने थे। क़ीमत उस चीज़ की जो हमारे मज़हब में हराम[7] और तुम्हारे मुशरिब[8] में हलाल है। सो वह दिये गए।"

१—द्वारा। २—आशीर्वाद देनेवाला। ३—बातें ४—ऊँचा दर्जा। ५—प्रशंसा। ६—फुटकर रूप से। ७—इस से मिर्ज़ा का अभिप्राय केवल शराब से है। ८—मज़हब।

आठवाँ पत्र मुंशी हरगोपाल के नाम

मिर्ज़ा के ज़माने में डाक का प्रबंध अच्छा न था। इसीलिये वह अक्सर कहते "डाकिए अब डाकू हो गये।" "डाक क्या है ख़ाक है" और शायद इसी डाक के कुप्रबंध से वह बैरंग ख़त भेजना पसन्द करते थे और दूसरों को भी प्रेरित करते थे कि तुम भी बैरंग भेजो।

इसी सिलसिले में मुंशी हरगोपाल तफ्ता को लिखते हैं:—

एक क़ायदा आपको बताता हूँ अगर इसको मंजूर कीजिएगा तो ख़तूत के न पहुँचने का एहतमाल[1] उठ जायगा और रजिस्ट्री का दर्द सर[2] जाता रहेगा। आध आना न सही एक आना ही आप भी ख़त बैरंग भेजा कीजिए और मैं भी बैरंग भेजा करूँ। पेड-ख़तूत[3] तलफ़[4] भी होते हैं, इस क़ायदे का जैसा कि मैं वाजह[5] हुआ हूँ, बादी[6] भी हुआ और यह ख़त बैरंग भेजा...।

१—संदेह। २—परेशानी। ३—जिसका महसूल दे दिया गया हो। इस शब्द के प्रयोग से पता चलता है मिर्ज़ा अँग्रेज़ी के कुछ शब्दों का भी ज्ञान रखते थे। ४—खो जाना। ५—बचानेवाला। ६—शुरू करनेवाला।

नवाँ पत्र

मिर्ज़ा अँगरेज़ी हाकिमों से पत्र व्यवहार करना बहुत पसन्द करते थे। अस्तु; हरगोपाल तफ़्ता को लिखते हैं :—

हेनरी स्टुआर्ट रीड साहब मुमालिक[1] मग़रबी[2] व शुमाली[3] के मदर्सों के नाज़िम[4] और गवर्नमेन्ट के बड़े मुसाहब[5] हैं। अमन के दिनों में एक मुलाक़ात मेरी उनकी हुई थी। मैंने एक सादा बेजिल्द किताब उनको भेजी थी। कल उनका एक ख़त मुझको उस किताब की रसीद में आया, बहुत तारीफ़ लिखते हैं। और हाँ भाई। एक तमाशा और है, वह मुझको लिखते हैं—यह किताब पहले इससे कि तुम भेजो मतबा[6] मुफ़ीद[7] ख़लायक ने हमारे पास भेजी है और हम उसको देख रहे हैं और ख़ुश हो रहे थे कि तुम्हारा ख़त मय किताब के पहुँचा। उनके इस लिखने से यह मालूम हुआ कि मतबे में से गवर्नर की नज़र[8] भी ज़रूर गई होगी, क्या अच्छी बात है कि वहां भी मेरे भेजने से पहले मेरा कलाम पहुँच जायगा। मैं चीफ़ कमिश्नर पंजाब को यह किताब भेज चुका हूँ और नवाब गवनर की नज़र और मल्का की नज़र और सिकरतरियों[9] की बजरिया पार्सल इन्शा अल्लाह[10] आज रवाना हो जायँगे। देखो चीफ़ कमिश्नर क्या लिखते हैं और गर्वनर क्या फ़रमाते हैं.....।

१—प्रदेश। २—पश्चिमी। ३—उत्तरी। ४—प्रबन्ध करनेवाला। ५—सलाहकार। ६—छापाख़ाना। ७—नाम है। ८—भेंट। ९—सेक्रेटरियों। १०—यदि ईश्वर ने चाहा।

दसवाँ पत्र मीर[1] मेंहदी 'मजरूह'[2] के नाम

मीर मेंहदी, तुम मेरी आदत भूल गए। माह मुबारिक[3] रमज़ान में कभी मस्जिद जामा की तरावीह[4] नागा हुई है? मैं इस महीने में रामपुर क्योंकर रहता। नवाब साहब माने रहे[5] और बहुत मना करते रहे। बरसात के आमों का लालच देते रहे। मगर भाई मैं इस अन्दाज़ से चला कि चाँद रात के दिन यहाँ आ पहुँचा। उसी दिन से हर रोज़ सुबह को हामिदअली ख़ाँ की मस्जिद में जाकर जनाब मौलवी जाफ़रअली साहब से क़ुरान सुनता हूँ। शब[6] को मस्जिद जामा में जाकर नमाज़ तरावीह पढ़ता हूँ। कभी जो जी में आता है तो वक़्त सोयम[7] महताब बाग़ में जाकर रोज़ा खोलता हूँ और सर्द पानी पीता हूँ। वाहवाह[8] क्या अच्छी तरह उम्र बसर होती है। अब अमल हक़ीक़त सुनो। लड़कों को रामपुर साथ ले गया था। वहाँ उन्होंने मेरा नाक में दम कर दिया। तनहा[9] भेज देने में बहम[10] आया कि ख़ुदा जाने अगर कोई अमर हादिस[11] हो, तो बदनामी उमर भर रहे। इस सबब से जल्द चला आया। वरना गरमी बरसात वहीं काटता। अब बशर्ते हयात[12] ज़रीदा[13] बाद बरसात जाऊँगा और बहुत दिन तक यहाँ न आऊँगा। नवाब साहब जुलाई १८५६ ई० से जिसको यह दसवाँ महीना है १००) रुपया मुझे माहबमाह भेजते हैं। अब जो मैं वहाँ गया, तो सौ रुपया

१—मिर्ज़ा ग़ालिब के एक शिष्य का नाम है। २—उपनाम। ३—पवित्र महीना। ४—नमाज़ का एक हिस्सा जो रमज़ान में रात की नमाज़ के बाद पढ़ा जाता है। ५—मना करते रहे। ६ रात। ७—रोज़ा खोलने का समय। ८—ठीक हाल। ९ अकेला। १०—संदेह। ११—दुर्घटना होना। १२—अगर ज़िन्दा रहा। १३—अकेला।

महीना बनाम दावत और दिया। याने रामपूर रहूँ तो दो सौ महीना पाऊँ और दिल्ली रहूँ तो सौ रुपये। भाई सौ दो सौ में कलाम[1] नहीं। कलाम इसमें है कि नवाब साहब दोस्ताना व शागिर्दाना देते हैं। मुझको नौकर नहीं समझते। मुलाक़ात भी दोस्ताना रही। जिस तरह अहबाब[2] में रस्म है वह सूरत मुलाक़ात की है। लड़कों से मैंने नज़र[3] दिलवाई थी। बस बहरहाल ग़नीमत है। रिज़्क़[4] के अच्छी तरह मिलने का शुक्र चाहिए। कमी का शिकवा[5] क्या? अँगरेज़ की सरकार से १० हज़ार रुपया साल ठहरे। इसमें से मिले मुझको ७५०) रुपये साल। लेकिन इज़्ज़त में वह पाया जो रईसज़ादों के वास्ते होता है। ख़ाँ साहब बिसियार[6] मेहरबान दोस्तान अलक़ाब[7]। ख़िलअत साथ पारचा[8] और चोग़ा[9] व सरपेच व मालाए मुर्वारीद[10]..... ।

ग़रज़े कि बादशाह अपने फ़रज़न्दों[11] के बराबर प्यार करते थे। बख़्शी[12] नाज़िर-हकीम किसी से तौक़ीर[13] कम नहीं मगर फ़ायदा वही क़लील[14]। सो मेरी जान यहाँ वही नक़्शा है। कोठरी में बैठा हूँ। टट्टी लगी हुई है—हवा आ रही है—पानी का झज्झर भरा हुआ है। हुक़्क़ा पी रहा हूँ। यह ख़त लिख रहा हूँ। तुमसे बातें करने को जी चाहा, यह बातें कर लीं।

मीर सरफ़राज़ हुसेन और मीरन साहब और मीर नसीरुद्दीन साहब को यह ख़त पढ़ा देना और मेरी दुआ कह देना।

जुमा १६ अपरैल

१—कुछ कहना। २—मित्र। ३—भेंट दिलवाई थीं। ४—रोटी। ५—शिकायत। ६ बहुत मेहरबानी करनेवाला मित्र। ७—शिष्टाचार। ८—इज़्ज़त को पोशाक। ९—एक प्रकार की पोशाक। १०—मोतियों की माला। ११—पुत्रों। १२—उपाधि। १३—इज़्ज़त। १४—थोड़ा-सा।

ग्यारहवाँ पत्र

मीर मेंहदी "मजरूह" दिल्ली की दशा का ब्योरा चाहते हैं। उनको मिर्ज़ा ने लिखा :—

"जोयाय[1] हाल दिल्लीवालो ! सलाम लो। मस्जिद जामा बागुजाश्त[2] हो गई। चितली क़बर की सीढ़ियों की तरफ़ कबाड़ियों ने दूकानें बना लीं। अंडा मुर्गी, कबूतर बिकने लगा.....हमारे पास शराब आज की और है कल से रात को निरी अँगीठी पर गुज़ारा है। बोतल, गिलास मौक़ूफ़ ....और बोलो क्या लिखूँ ? धूप में बैठा हूँ। यूसुफ़अली ख़ाँ और लाला हीरासिंह बैठे हैं। खाना तैयार है। ख़त लिखकर बन्द करके आदमी को दूंगा और मैं घर जाऊँगा। वहाँ एक दालान में धूप आती है, उसी में बैठूँगा। मुँह हाथ धोऊँगा। एक रोटी का छिल्का सालन में भिगो कर खाऊँगा। बेसन से हाथ धोऊँगा। बाहर आऊँगा। फिर उसके बाद ख़ुदा जाने कौन आयेगा क्या सोहबत होगी.....”

बारहवाँ पत्र

मिर्ज़ा का दीवान दिल्ली में पहली बार छपा, जिसकी छपाई से असन्तुष्ट होकर मीर मेंहदी मजरूह को लिखते हैं—

"दीवान उर्दू छप चुका। हाय लखनऊ के छापेख़ाने !

१—चाहनेवाला। २—छूट गई।

जिसका दीवान छापा उसको आसमान पर चढ़ा दिया। हुस्नख़त[1] से अलक़ाज को चमका दिया। दिल्ली पर और उसके पानी पर और उसके छापे पर लानत[2]। साहब दीवान को इस तरह याद करना जैसे कोई कुत्ते को आवाज़ दे।

तेरहवाँ पत्र

पुनः (उन्हीं के नाम)

"भाई! होश में आओ, ग़ौर करो यह मक़दूर[3] मुझमें नहीं कि उनको वहाँ बुलाकर एक अलग मकान रहने को दूँ और अगर ज़्यादा न हो तो तीस रुपया महीना मुक़र्रर करूँ कि भाई यह लो और दरीबा और चावड़ी और अजमेरी दरवाज़े का बाज़ार और लाहौरी दरवाज़े का बाज़ार नापते फिरो और उर्दू बाज़ार और ख़ास बाज़ार और बुलाकी बेग़म का कूचा और ख़ाँ दौरान ख़ाँ की हवेली के खंडहर गिनते फिरो। ऐ मीर मेंहदी! तू दरमाँदा[4] व आजज़ पानीपत में पड़ा रहे, मीरन साहब वहाँ पड़े हुए दिल्ली देखने को तरसा करें, सरफ़राज़ हुसेन नौकरी ढूंढ़ता फिरे और मैं इन ग़महाए[5] जाँगुदाज़[6] की ताब[7] लाऊँ। मक़दूर होता तो दिखा देता कि मैंने क्या किया।

१—छपाई की सुन्दरता। २—फटकार। ३—शक्ति। ४—विवश। ५—दुखों। ६—जान को गलानेवाला। ७—सहन करना।

चौदहवाँ पत्र

मीर मेंहदी मजरूह के नाम

स्वर्गीय नवाब कल्बअली ख़ाँ, रामपुर नरेश के सिंहासनारूढ़ होने के अवसर पर अँगरेज़ हाकिमों का जमाव और भोज का ज़िक्र।

यहाँ जश्न[1] के वह सामान हो रहे हैं कि जमशेद अगर देखता तो हैरान रह जाता। शहर से दो कोस पर आग़ापूर नामी एक बस्ती है। आठ दस दिन से वहाँ ख़ैयाम[2] बरपा[3] थे। परसों साहब कमिश्नर बहादुर बरेली मय चन्द साहबों और मेमों के आए, ख़ेमों में उतरे कुछ कम सौ साहब और मेम जमा हुए सब सरकार रामपुर के मेहमान। कल सेहशम्बह[4] पाँच दिसम्बर हज़ूर[5] पुरनूर बड़े तजम्मुल[6] से आग़ापूर तशरीफ़ ले गए। १२ पर दो बजे गए और शाम को ५ बजे ख़िलअत पहन कर आए। वज़ीरअली ख़ाँ ख़ानसामा ख़वासी में से रुपया फेंकता हुआ आता था। दो कोस के अर्से में दो हज़ार से कम न निसार[7] हुआ होगा। आज साहबान आलीशान की दावत है। टिपन और शाम का खाना यहीं खायेंगे। रोशनी, अतिशबाजी की वह इफ़रात[8] कि रात, दिन का सामना करेगी। तवायफ़[9] का वह हजूम[10] कि इस मजलिस को तवायफ-उल मुलूक[10] कहा चाहिए।"

१—उत्सव। २—ख़ेमा सीने वाले। ३—जमा थे। ४—मंगल ५—बादशाह या किसी बड़े व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। ६—राजसी ठाठ। ७—निछावर। ८—अधिकता। ९—नाचने गाने वाली। १०—ऊँचे दर्जे की तवायफों का जमघटा।

पंद्रहवाँ पत्र

ग़दर के बाद दिल्ली की तबाही

"सुनते हैं कि नवम्बर में महराजा अलवर को अख्तियार मिलेगा। मगर वह अख्तियार ऐसा होगा जैसा कि खुदा ने ख़ल्क[1] को दिया है। सब कुछ अपने क़ब्ज़ए कुदरत[2] में रखा, आदमी को बदनाम किया।"

"भाई! क्या पूछते हो क्या लिखूँ? दिल्ली की हस्ती मुनहसिर कई हंगामों पर है। क़िला, चाँदनी चौक, हर रोज़ मजमा मस्जिद जामे का, हर हफ्ता सैर जमुना के पुल की, हर साल मेला फूलवालों का ये पाँचों बातें अब नहीं। फिर कहो दिल्ली कहां! हाँ कोई शहर क़लमरौ[3] हिन्द में इस नाम का था। नवाब गवर्नर जनरल बहादुर १५ दिसम्बर को यहाँ दाख़िल होंगे। देखें कहाँ उतरते हैं और क्योंकर दरबार करते हैं?"

"शहर का हाल क्या जानूँ। पवनटूटी[4] कोई चीज़ है वह जारी हो गई है। सिवाय अनाज और उपले के कोई चीज़ ऐसी नहीं, जिस पर महसूल न लगा हो। जामा मस्जिद के गिरद २५, २५ फुट गोल मैदान निकलेगा। हवेलियाँ ढहाई जायेंगी। दारुलबक़ा फ़ना[5] हो जायगी। रहे नाम अल्लाह का खाल चन्द का कूचा, शाह बोला के बड़ तक ढहेगा। दोनों तरफ़ फावड़ा चल रहा है।"

आबादी का हुक्म

"आम लोगों को कमाल लुत्फ़[6] और नरमी से आबाद करते

१—दुनिया के लोगों को। २—हाथ में। ३—राज्य। ४—चुंगी। ५—नष्ट। ६—बड़ी मेहरबानी।

जाते हैं। और एक नक़ल सुनो। वहाँ के साहब कमिश्नर बहादुर आज़म ने जो देखा कि अमले में हिनूद[1] भरे हुए हैं, अहले इस्लाम नहीं हैं। हिनूद को और इलाकों पर भेज दिया, और उनकी जगह मुसलमानों को भरती किया।"

"अमलदारी की वह सूरत है, जो ग़दर से पहले थी। अब यहाँ टिकट छापे गए हैं। मैंने भी देखे। फ़ारसी इबारत यह है टिकट आबादी दरुन[2] शहर देहली बशर्ते अदख़ाल[3] जुर्माना मिक़दार रुपये की हाकिम की राय पर है। आज पाँच हज़ार टिकट छप चुका है। कल इतवार योमउलतातील[4] है। परसों दोशम्बा[5] से देखिए यह काग़ज़ क्योंकर तक़सीम हों।"

सोलहवाँ पत्र

मीर मेंहदी मजरूह से पत्र लिखने के पुराने ढंग की निन्दा करते हैं।

"तुम्हारा दिमाग़ जल गया लिफ़ाफ़े को कुरेदा करो। मसौदे[6] को बार-बार देखा करो, पाओगे क्या? याने तुमको वह मुहम्मदशाही[7] रविशें[8] पसन्द हैं। यहाँ ख़ैरियत है वहाँ की आफ़ियत[9]-मतलूब[10] है, ख़त तुम्हारा बहुत दिन बाद पहुँचा, जी ख़ुश हुआ। मसौदा बाद इस्लाह[11] के भेजा जाता है, बरख़ुरदार[12] मीर

१—हिंदू। २—अन्दर। ३—दाख़िल करना, देना। ४—छुट्टी का दिन। ५—सोमवार। ६—लिखे हुए को। ७—मुहम्मद शाह के समय की (बहुत पुरानी)। ८—तरीक़े। ९—कुशल। १०—चाहना। ११—ठीक करना। १२—एक प्रकार का आशीष।

सरफ़राज़ हुसेन को दे देना और दुआ कहना, और हाँ हकीम मीर अशरफ़ अली और मीर अफ़ज़ल अली को भी दुआ कहना। लाजमये[1] सआदत मन्दी[2] यह है कि हमेशा इसी तरह ख़त भेजते रहो" क्यों सच कहियो! अगलों के ख़तूत की तहरीर का यही तर्ज था? हाय क्या अच्छा शेवा[3] है जब तक यूँ न लिखो वह ख़त ही नहीं, चाह[4] बेआब[5] है। अब्र[6] बेबाराँ[7] है, ख़ाना[8] बे चिराग़ है, चिराग़ बे नूर[9] है। हम जानते हैं कि तुम ज़िन्दा हो, तुम जानते हो कि हम ज़िन्दा हैं, अमूर[10] ज़रूरी को लिख दिया जरायद[11] को और वक्त पर मौक़ूफ़[12] रक्खा, मगर तुम्हारी ख़ुशनूदी[13] इसी तरह की निगारिश[14] पर मुनहसिर है तो भाई, साढ़े तीन सतरें ऐसी भी मैंने लिख दीं.....

सत्रहवाँ पत्र

मिर्ज़ा नवाब अलाउद्दीन ख़ाँ साहब के नाम

मियाँ! बड़ी मुसीबत में हूँ। महलसरा[15] की दीवारें गिर गईं। पाख़ाना ढह गया। छतें टपक रही हैं। तुम्हारी फूफी[16] कहती हैं कि हाय दर्बी, हाय मरीं। दीवानख़ाने[17] का हाल महलसरा से बदतर है। मैं मरने से नहीं डरता, लेकिन घबरा गया। छत छलनी है। अब्र दो घंटे बरसे तो छत चार घंटे बरसे

१ ज़रूरत। २—बड़ों की बात मानना, नेक होना। ३—तरीक़ा। ४—कुआँ ५—बिना पानी का। ६—बादल। ७—बग़ैर बरसे। ८—घर। ९—रोशनी। १०—बात। ११—ज़्यादा। १२—ख़तम। १३—ख़ुशी। १४—लिखावट। १५—स्त्रियों के रहने का स्थान। १६—यहाँ पर मिर्ज़ा ग़ालिब की स्त्री से मतलब है। १७—मर्दानी बैठक।

अगर कोई चाहे कि मरम्मत करे, तो क्योंकर करे। मेंह खुले तो सब कुछ हो। और फिर असनाए मरम्मत[1] में मैं बैठा किस तरह रहूँ। अगर तुम से हो सके तो बरसात तक भाई से मुझको वह हवेली जिसमें मीर हसन रहते थे, अपनी फूफी के रहने को और कोठी में से वह बालाख़ाना[2] मय दालान ज़ेरी[3] जो इलाही-बख़्शख़ाँ मरहूम[4] का मसकन[5] था—मेरे रहने को दिलवा दो। बरसात गुज़र[6] जायगी, मरम्मत हो जायगी। फिर साहब[7] और मेम[8] और बाबा[9] लोग अपने क़दीम मसकन में आ रहेंगे। तुम्हारे वालिद के जहाँ मुझ पर बहुत एहसान हैं, एक यह मुरव्वत का अहसान मेरे पायान[10] उम्र में और सही।

ग़ालिब

अठारहवाँ पत्र

मिर्ज़ा अलाउद्दीन अहमदख़ाँ के नाम शीतकालीन सवेरे के सम्बन्ध में।

"सुबह का वक़्त है। जाड़ा ख़ूब पड़ रहा है। अँगीठी सामने रक्खी हुई है। दो हरफ़ लिखता हूँ, हाथ तापता जाता हूँ। आग में गरमी नहीं, मगर हाए आतिशेसय्याल[11] कहाँ कि जब दो जरए[12] पी लिए फौरन रगव पै में दौड़ गई, दिल तवाना[13] हो गया। दिमाग़ रौशन हो गया, नफ्सनातक़ा[14] को तवाजिद[15] पहुँचा।

१—मरम्मत के समय। २—ऊपर का घर। ३—नीचे का। ४—स्वर्गीय। ५—रहने की जगह। ६—बीत। ७—मिर्ज़ा ग़ालिब। ८—बीवी (स्त्री)। ९—बच्चे। १०—अन्तिम जीवन में। ११—शराब। १२ घूँट। १३—शक्तिशाली। १४—बोलने की ताक़त। १५—ताज़गी।

साक़िए[1] कौसर[2] का बन्दा[3] और तिश्ना[4] लब हाय गज़ब हाय गज़ब"।

उन्नीसवाँ पत्र

मिर्ज़ा मेंहदी की आँखें दुखने आई थीं। मिर्ज़ा उनको लिखते हैं

"तुम्हारे आँखों के गुबार की वजह यह है कि जो मकान दिल्ली में ढाए गए और जहाँ जहाँ सड़कें निकलीं जितनी गर्द उड़ी उसको आपने अज़राह मुहब्बत अपनी आँख में जगह दी। ....

बीसवाँ पत्र

मिर्ज़ा को अपनी प्रसिद्धि पर घमंड था।

मिर्ज़ा अलाउद्दन अहमद खाँ को लिखते हैं :—

क़सम शरई[5] खाकर कहता हूँ कि एक शख़्स है कि उसकी इज्ज़त और नामआवरी[6] जमहूर[7] के नज़दीक साबित और मुतहक़्क़िक़[8] है और तुम साहब भी जानते हो। मगर जब तक उससे क़िताएनज़र[9] न करो और उस मसख़रे को गुमनाम[10] और ज़लील न समझ लो, तुमको चैन न आएगा। पचास बरस से

१—शराब पिलानेवाला। २—मुसलमानों के विश्वास के अनुसार स्वर्ग में एक शराब की नहर है। ३—ग़ुलाम। ४—प्यासा। ५—धर्म-शास्त्र में बताई हुई क़सम। ६—प्रसिद्धि। ७—सर्वसाधारण। ८—ठीक। ९—निगाह हटाना। १०—अप्रसिद्ध (ये तीन चार लाइन जो मिर्ज़ा ने लिखी हैं वह नाराज़ होकर अपने लिये लिखी हैं।)

दिल्ली में रहता हूँ, हज़ारहा ख़त अतराफ़ व जवानिब से आते हैं। बहुत लोग ऐसे हैं कि मुहल्ला नहीं लिखते, बहुत लोग ऐसे हैं कि मुहल्ला साबिक़[1] का नाम लिख देते हैं। हुक्काम के ख़तूत फ़ारसी व अँग्रेज़ी यहाँ तक कि वलायत के आये हुए सिर्फ़ शहर का नाम और मेरा नाम। यह सब मरातिब तुम जानते हो और इन खतूत को तुम देख चुके हो और फिर मुझसे पूछते हो कि अपना मसकन[2] बता? अगर मैं तुम्हारे नज़दीक अमीर नहीं, न सही। अहले हिरफ़ा[3] में से भी नहीं हूँ कि जब तक मुहल्ला और थाना न लिखा जाय, हरकारा मेरा पता न पाय। आप सिर्फ़ देहली लिखकर मेरा नाम लिख दिया कीजिए, ख़त के पहुँचने का मैं ज़ामिन[4]......।

इक्कीसवाँ पत्र

नवाब अलाएउद्दन खाँ के नाम

"भाई! इस मुअर्रिज़[5] में भी तेरा हमताले[6] और हम-दर्द हूँ, अगर्चे यक फ़ना[7] हूँ, मगर मुझे अपने ईमान की क़सम मैंने अपने नज़्म[8] नस्र[9] की दाद[10] व अन्दाज़ए[11] बयीस्त[12] पाई नहीं, आप ही कहा, आप ही समझा।—अब मुझमें न वह ताक़त जिस्मानी कि एक लाठी हाथ में लूँ और उसमें शतरंजी[13] और एक टीन का लोटा मय सूत की रस्सी के लटका

१-पहलेवाला। २—रहने की जगह। ३—पेशा करनेवाले। ४—ज़िम्मेदार। ५—बेमुरव्वती। ६—तेरी उन्नति चाहनेवाला। ७ मिट चुका हूँ। ८—पद्य। ९—गद्य। १०—प्रशंसा। ११—दिल को ख़ुश करनेवाली। १२—जैसी चाहिए। १३—बिछौना।

लूँ और प्यादा[1] पा चल दूँ। कभी शीराज़ जा निकला, कभी मिश्र में जा ठहरा। कभी नजफ़ जा पहुँचा। न वह दस्तगाह[2] कि एक आलम का मेज़बान[3] बन जाऊँ। अगर तमाम आलम में न हो सके न सही, जिस शहर में रहूँ उस शहर में कोई भूका नंगा नज़र न आए ... .., वह जो किसी को भीक माँगते न देख सके और खुद दर बदर भोख माँगे—मैं हूँ।"

बाईसवाँ पत्र

नवाब अमीनुद्दीन अहमदख़ाँ ने दरयाफ़्त किया था

"सुना जाता है आपने शराब छोड़ दी है, इसकी क्या असलियत है ?" इस पर मिर्ज़ा ने उनके बेटे मिर्ज़ा अलायउद्दीन ख़ाँ को लिखा।

"भाई को सलाम कहना और कहना कि साहब वह ज़माना नहीं कि इधर मथुरादास से क़र्ज़ लिया उधर दरबारीमल को जा मारा। इधर ख़ूबचन्द चैनसुख की कोठी जा लूटी। हरएक के पास तमस्सुक मोहरी मौजूद। शहद लगाकर चाटो न मूल न सूद। इससे बढ़कर यह बात कि रोटी का खर्च बिल्कुल फूफी के सर बईहमा[4] कभी खान ने कुछ दे दिया कभी अलवर से कुछ दिलवा दिया। कभी माँ ने कुछ आगरे से भेज दिया। अब मैं और बासठ रुपये आठ आने। इस पर इन्कमटैक्स जुदा, चौकीदार जुदा, सूद जुदा, मूल जुदा, बीवी जुदा, बच्चे जुदा, शागिर्द पेशा[5] जुदा। आमद वही बासठ। तंग आ गया। गुज़ारा मुश्किल हो गया।

१—पैदल। २—सामर्थ्य। ३—भोज देनेवाला। ४—इसके अतिरिक्त। ५—धोबी-भंगी।

रोज़मर्रा का काम बन्द रहने लगा। सोचा क्या करूँ कहाँ से गुंजाइश निकालूँ। कहर दरवेश बजान दरवेश[1]। सुबह की तबरीद[2] मतरूक[3] चाश्त[4] का गोश्त आधा, रात की शराब व गुलाब मौक़ूफ़[5]। बीस-बाइस रुपया महीना बचा, रोज़मर्रा का ख़र्च चलाया, यारों ने पूछा तबरीद व शराब कब तक न पियोगे? कहा गया कि जब तक वह[6] न पिलायेंगे। पूछा कि न पियोगे तो किस तरह जियोगे? जवाब दिया कि जिस तरह वह जिलाएँगे। बारे[7] महीना पूरा न गुजरा था कि रामपूर से अलावा वजह मुक़र्ररी[8] और रुपया आ गया, क़र्ज़ मुक़स्सित[9] अदा हो गया। मुतक़र्रिक रहा, ख़ैर रहे। सुबह को तबरीद रात की शराब जारी हो गई। गोश्त पूरा आने लगा। चूँकि भाई साहब ने वजह मौक़ूफ़ी और बहाली[10] पूछी थी, उनको यह इबारत पढ़ा देना।

तेईसवाँ पत्र

नवाब अमीनुद्दीन अहमद ख़ाँ साहब बहादुर रईस लोहारू के नाम

मक़सूद[11] इन सतूर[12] की तहरीर[13] से यह है कि मेरे चन्द अहबाब[14] मेरे मसविदात[15] उर्दू के जमा करने पर और उसके छपवाने पर आमादा[16] हुये हैं। मुझसे मसविदात

१—फ़क़ीर की मुसीबत फ़क़ीर (ग़रीब) की जान पर। २—ठंडाई। ३ छूट जाना। ४ - दोपहर का खाना। ५—समाप्त। ६—ईश्वर। ७ – शुक्र है ख़ुदा का। ८—तनख़्वाह के अतिरिक्त। ९ - क़िस्त वाला। १०–फिर से जारी होना। ११–अभिप्राय। १२–पंक्तियाँ। १३–लिखावट। १४ मित्र। १५—किसी विषय पर कुछ लिखना। १६—तैयार

माँगते हैं और उन्होंने अतराफ़[1] व जवानिब से भी फ़राहम[2] किए हैं। मैं मसविदा नहीं रखता। जो लिखा, वह जहाँ भेजना हुआ, वहाँ भेज दिया। यक़ीन है कि ख़त मेरे तुम्हारे पास बहुत होंगे। अगर उनका एक पार्सल बनाकर बसबील[3] डाक भेज दोगे, या आज-कल में कोई इधर आनेवाला हो उसको दे दोगे, तो मूजिब[4] मेरे ख़ुशी का होगा। और मैं ऐसा जानता हूँ, उसके छापे जाने से तुम भी ख़ुश होगे।

बच्चों को दुआ।

—ग़ालिब

चौबीसवाँ पत्र

पत्र मौलवी अहमद हसन क़न्नौजी के नाम

"यारब![5] यह एक ख़त जो मुझको बड़ौदा गुजरात से आया है, कातिब[6] ने अपने को अहमद हसन क़न्नौजी बताया है। उधर से इज़हार[7] आशनाई[8] है, मेरे तरफ़ से यह बेहयाई[9] है, कि मुझको उनकी और अपनी मुलाक़ात याद नहीं आती। ख़ानये निसियाँ[10] ख़राब, शायद अगर जियूँगा तो इसका भी मुझे इल्म न रहेगा कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ। ६५ वर्ष की उम्र हुई हवास[11] जाहिरी में से सामए[12] व शामए[13] बातिल,[14] हवास बातिनी[15]

१—इधर उधर से। २—इकट्ठा करना। ३ द्वारा। ४—कारण। ५—ऐ ख़ुदा। ६—पत्र लिखने वाला। ७—प्रकट करना। ८—जान पहचान। ९—बेशरमी १०—स्मरण शक्ति। ११—कर्म इंद्रियाँ। १२—श्रवणेन्द्रिय। १३—घ्राणेन्द्रिय। १४—झूठ अर्थात् व्यर्थ। १५—ज्ञान इन्द्रियाँ।

में से हाफ़ज़ा[1] ज़ायल[2]। बसबब निसियाँ[3] के अक्सर मतालिब ज़रूरी तलफ़[4] हो जाते हैं। ख़ुदाया क्या इस उमर में सब आदमी ऐसे खर्फ़[5] हो जाते हैं। हैरान हूँ कि आपको सैयद लिखूँ, मौलवी लिखूँ, ख़ां लिखूँ। ख़त में तो ख़ैर कुछ लिख दूँगा, ख़त का क्या उनवान[6] लिखूं। बन्दा-परवर! फ़कीर माफ़ रहे, हज़रत का दिल ग़ुबारे कुदूरत[7] से साफ़ रहे। मौलवी अब्दुल जमील साहब बरेलवी को जानता हूँ, बल्कि उनका एहसान मानता हूँ कि बावजूद अदम[8] मुलाक़ात ज़ाहरी के अक्सर उनके ख़ुतूत आते रहते हैं, गोया वह अपना नाम हमेशा मुझको याद दिलाते रहते हैं। न कि आप बाद एक[9] उमर के नागाह[10] ब नामा[11] याद फ़रमावें, और अपनी और मेरी मुलाक़ात का ज़माना याद न दिलाएँ। बहरहाल तुम्हारा दुआगो हूँ, ख़ैर जो हूँ। इस ख़त के जवाब में ऐसा कुछ लिखो कि तुमको पहचान जाऊँ। कब मिले थे? कै मुलाकातें हुई थीं? यह सब मदारिज[12] जान जाऊँ.....”

पचीसवाँ पत्र

साहब आलम सज्जादये नशीं (गद्दीधर) मारहरा[14] की लिखावट अच्छी न थी। उनकी तहरीर मिर्ज़ा से नहीं

१—याद रखने की ताक़त। २—नष्ट। ३—विस्मरण। ४—नष्ट। ५—बद हवासी जो बुढ़ापे से हो। ६—शीर्षक। ७—मालिन्य। ८—प्रकट रूप से परिचय। ९—बहुत समय के बाद। १०—अकस्मात्। ११—ख़त से। १२—दुआ देनेवाला। १३—दर्जे अर्थात् बातें १४—एक स्थान का नाम है।

पढ़ी जाती थी। चौधरी अब्दुल गफ़ूर सुरुर[1] को उनके अक्सर ख़त वापस किये और लिखा कि आप उनकी तहरीर अपने क़लम से लिखकर भेज दीजिये।

(अ) हज़रत साहब याने साहब आलम की खिदमत में अर्ज़ किया था कि आप जो कुछ लिखें वह बक़लम चौधरी साहब लिखा जाए, हज़रत ने न माना और फिर इबारत बदस्तख़ास[2] लिखी। वल्लाह बिल्ला न मुझसे न और किसी से पढ़ी गई नाचार[3] उनका ख़त फिर आपको भेजता हूँ। हज़रत से कुछ न फ़रमाइयेगा। मगर इस इबारत को अपने हाथ से नक़ल करके मुझको भिजवाइयेगा ज़रूर और जल्द ...... ।

(इ) यह ख़त नाचार वापस भेजता हूँ वास्ते खुदा के मेरे पीर मुर्शिद[4] के इर्शादात[5] को एक और कागज़ पर अपने हाथ से नक़ल करके भेज दीजिए ताकि मुझ बदनसीब[6] को मालूम हो कि हज़रत ने क्या लिखा ..... ।

(उ) हज़रत की तहरीर का सिवाय एक लफ्ज़ के अगर पढ़ा गया हो तो दीदे फूटें, ईमान नसीब न हों[7]। वह खत बदस्तूर[8] आपके पास वापस भेजता हूँ, सफेद कागज़ पर हर्फ़ ब हर्फ़[9] उसकी नकल करके फिर मुझे भेज दीजिये ताकि इसके जवाब लिखने में सआदत हासिल करूँ लेकिन बहुत जल्द बहुत जल्द .. ।

१—उपनाम है। २—अपने ही हाथ से। ३—विवश होकर। ४—उच्चकोटि के व्यक्ति को कहते हैं। ५—जो उन्होंने लिखा है। ६—भाग्यहीन। ७—एक प्रकार की बद्दुआ है। ८—पहले की तरह। ९—नेकी।

छब्बीसवाँ पत्र

यूसुफ़ मिर्ज़ा के नाम

यूसुफ़ मिर्ज़ा तुझको क्योंकर लिखूँ कि तेरा बाप मर गया। और अगर लिखूँ तो फिर आगे क्या लिखूँ कि अब क्या करो मगर सब्र। यह एक शेवये[1] फ़रसूदा[2] अबनाये[3] रोज़गार है। ताज़ियत यूँ ही किया करते हैं और यही कहा करते हैं कि सब्र करो। हाय एक का कलेजा कट गया है और लोग उसे कहते हैं कि तू न तड़प। भला क्यों न तड़पेगा। सलाह इसमें नहीं बताई जाती। दुआ को दख़ल[4] नहीं। दवा का लगाव नहीं। पहले बेटा मरा फिर बाप मरा। मुझसे अगर कोई पूछे कि बे सरोपा[5] किस को कहते हैं तो मैं कहूँगा कि यूसुफ़ मिर्ज़ा को। तुम्हारी दादी लिखती है कि रिहाई[6] का हुक्म हो चुका था। यह बात अगर सच है तो जवाँमर्द[7] एक बार दोनों क़ैदों से छूट गया, न क़ैद हयात[8] रही न क़ैद फिरंग[9]।

सत्ताईसवाँ पत्र

मियाँ दाद ख़ाँ सय्यार ने मिर्ज़ा से उनकी तसवीर माँगी थी। उसको लिखते हैं:—

"साहब इस बुढ़ापे में तसबीर के परदे में क्या खिंचा-खिंचा फिरूँ। गोशानशीन[10] आदमी अक्स की तसवीर उतारने

१—रीति। २—पुराना। ३—सांसारिक लोगों का। ४—शोक प्रकट करना। ५—गुंजाइश। ६—बग़ैर सिर पैर के। ७—छूट जाना। ८—वीर पुरुष। ९—जीवन। १०—अँगरेज़ों की दी हुई सज़ाए क़ैद। ११—एकान्तवासी।

वाले को कहाँ ढूँढूँ। देखो एक जगह मेरी तसवीर बादशाह के दरबार में खींची हुई है, अगर वह हाथ आ जायेगी तो वह तुमको भेज दूँगा ·····।"

"तसवीर का हाल यह है कि एक मुसव्विर[1] साहब मेरे दोस्त मेरे चेहरे की तसवीर उतार कर ले गए, इसको तीन महीने हुये। आज तक बदन का नक्शा खींचने को नहीं आये। मैंने गवारा किया आइने पर नक़्शा उतरवाना भी। एक दोस्त इस काम को करते हैं, ईद के दिन वह आए थे। मैंने उनसे कहा कि भाई! मेरी शबीह[2] खींच दो। वादा किया था कि कल तो नहीं परसों असबाब खींचने का लेकर आऊँगा। यह पाँचवाँ महीना है। आज तक नहीं आए ···।"

अट्ठाईसवाँ पत्र

मुंशी तफ़ज्जुल हुसेन ख़ाँ साहब के नाम

क्यों साहब! यह चचा भतीजा होना और शागिर्दी व उस्तादी सब पर पानी फिर गया। अगर कोई हज़ार पाँच सौ की चीज़ होती और मैं तुमसे माँगता तो ख़ुदा जाने तुम क्या ग़ज़ब ढाते। मेरा कलाम ख़रीद आठ दस रुपये का, सो वह भी मैं यह नहीं कहता कि मुझको दे डालो, तुमको मुबारक रहे। मुझको मुस्तार[3] दो, मैं उसको देख लूँ। जो मेरे पास नहीं है उसकी नक़ल कर लूँ, फिर तुमको वापस भेज दूँ। इस तरह तलब पर न देना दलील इसकी है कि मुझको झूठा जानते हो। मेरा एतबार नहीं या मुझको आज़ार[4] देना या सताना बदिल[5] मंज़ूर

१—तसवीर खींचनेवाला २—तसवीर। ३—मँगनी। ४—कष्ट ५—दिल से।

है। वह किताब अभी मेरे आदमी को दे दो। वल्लाह विल्ला[1] इसमें से जो मेरे पास नहीं हैं नकल करके तुमको भेज दूँगा। अगर तुमको वापस न दूँ तो मुझ पर लानत और अगर तुम मेरी क़सम को न मानो और किताब हामिल रुक़्क़े[2] को न दो तो तुमको आफरीं[3] ..... ।

उन्तीसवाँ पत्र

जिसमें उन्होंने अपने मित्र मौलवी गुलाम इमामहुसेन शहीद को एक ही पत्र में हर्ष व शोक का चित्र खींचा है

क़लम ताज़ियत[4] के मज़मून से आँसू भी बहाता है और कुछ ख़ुशी में आकर मुबारकबाद[5] का मज़मून भी ज़बान पर लाता है। ज़माने में ख़ुशी व ग़म दोनों का चोली दामन का साथ है। और दुनियां में धूप छाँव की तरह शादी के हाथ में मातम का हाथ है। दो फूल एक ही शाख़ में फूलते हैं, एक दूल्हा दूल्हन के सेहरे के काम आता है दूसरा मय्यत[6] को तुरबत[7] पर चढ़ाया जाता है। दो मोती एक ही सीप में पैदा होते हैं, एक को बादशाह के ताज में लगाते हैं, दूसरे को खरल में पीस कर दवा में मिलाते हैं। एक ही काफ़ूर से दो शमयें बनती हैं एक महफ़िल सरोद[8] के काम आती है, दूसरी मुर्दे के मज़ार[9] पर जलाई जाती है। चमन में कली अगर खिलखिलाकर हँसती है; शबनम[10] बेइख़्तियार उसके हँसने पर रोती है। जिस बाग़ में ख़िज़ाँ[11] हो, वहाँ बहार भी है और जहाँ गुल हो, वहाँ ख़ार[12] भी है।

१—क़सम ख़ुदा की। २—रुक़्क़ा ले जानेवाला। ३—शाबाश। ४—शोक। ५—बधाई। ६—मृतक। ७—समाधि। ८—गाना बजाना। ९—क़ब्र। १०—ओस। ११—पतझड़। १२—काँटा।

तीसवाँ पत्र

मिर्ज़ा को उनके एक मित्र ने लिखा था कि निज़ाम-दकिन[1] के लिये क़सीदा[2] लिख कर उनके पास फ़लाँ ज़रिये से भेजो। इससे आमदनी की कोई सूरत हो जायगी। मिर्ज़ा ने उस पत्र का जवाब इन शब्दों में दिया था—

"पाँच वर्ष का था कि मेरा बाप मरा और नौ वर्ष का था कि मेरा चचा मरा। उनकी जागीर के बदले में मेरे और मेरे कुनबावालों के वास्ते दस हज़ार रुपये सालाना नियत हुए। उन्होंने न दिये मगर ३ हज़ार रुपये साल दिया। इसमें से ख़ास मेरी ज़ात का हिस्सा ७५०) रुपया साल फ़क़त। मैंने सरकार अँगरेज़ी में ग़बन ज़ाहिर किया। गुलबर्क साहब बहादुर रेज़ीडेन्ट देहली और इस्टरलिंग बहादुर सिकत्तर गवर्नमेंट कलकत्ता, मुत्तफ़िक़[3] हुए मेरा हक़ दिलाने पर। रेज़ीडेन्ट माज़ूल[4] हो गये।

सिकत्तर गवर्नमेन्ट बमर्गे नागाह[5] मर गए। बाद एक ज़माने के बादशाह देहली ने ५०) रुपया महीना मुक़र्रर किया। इनके वली अहद[6] इस तक़र्रुर[7] के दो वर्ष बाद मर गए। वाजिदअली शाह बादशाह अवध की सरकार से बसिलह[8] मदह गुस्तरी[9] ५००) रुपये साल मुक़र्रर हुए। वह भी दो वर्ष से ज्यादा न जिए। यानी अगर्चे जीते हैं मगर सल्तनत[10] जाती रही और तबाही सल्तनत दो ही वर्ष में हुई। दिल्ली की सल्तनत कुछ सख़्त[11] जाँ

१—दकन का बादशाह। २—कविता, जिसमें किसी की प्रशंसा की गई हो। ३—सहमत। ४—अपनी जगह से हटा दिया जाना। ५—आकस्मिक मृत्यु। ६ उत्तराधिकारी। ७—तैनाती। ८—बदले में। ९—प्रशंसा करना। १०—राज्य। ११—जिसकी जान मुश्किल से निकले।

थी। सात वर्ष मुझको रोटी देकर बिगड़ी। अगर मैं वालिए दकिन के तरफ रुजू[1] करूँ तो मुझको खौफ है कि उसको भी कहीं किसी आफत नागहानी से दोचार न होना पड़े और मेरी सब कोशिशें ज़ाया[2] जायँ।

ऊपर लिखे हुए पत्रों से यह बात प्रगट होती है कि मिर्ज़ा ग़ालिब कठिनाइयाँ सहन करते करते निराश से हो गये थे। परन्तु इस दशा में भी उन्होंने धनिकों की तरह का ठाट बाट क़ायम रखा और अपनी प्रतिष्ठा में फ़क़ न आने दिया। मिर्ज़ा ने ऐसा स्वभाव पाया था कि वह कठिन-से-कठिन समय को हँस-बोलकर काट देते थे। उनके बहुत से शिष्य थे, और प्रेमियों की कुछ गणना न थी। वे मिर्ज़ा को बराबर आर्थिक सहायता पहुँचाते रहते थे। मिर्ज़ा ने भी आयु भर अपने कर्त्तव्य का पालन किया। बीमारी की दशा में भी उनके पत्रों का उत्तर और उनकी कविताओं का संशोधन वह पलंग पर लेटे २ किसी से कराकर उन्हें भेज दिया करते थे। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उन्हें कानों से बिल्कुल सुनाई न देता था। यदि किसी को कुछ कहना होता था, तो वह लिखकर उन्हें दे देता था। और वह लेटे-लेटे उसका उत्तर लिख दिया करते थे। इसके अतिरिक्त और भी कठिन रोगों ने उन्हें ऐसा विवश कर दिया था, जिससे वह मृत्यु के इच्छुक रहा करते थे। आप दिल्ली ही में स्वर्गवासी हुए। उनकी अवस्था ७३ वर्ष की थी। उनकी मृत्यु से साहित्यिक संसार में अंधकार-सा छा गया जैसा कि ख्वाजा अल्ताफ़ हुसेन हाली के निम्न-लिखित अशआर से प्रगट होता है।

१—आकर्षित। २—बेकार।

दिल को बातें जब उसकी याद आएँ
किसकी बातों से दिल को बहलाएँ
किसको जाकर सुनाएँ शेरे-ग़ज़ल
किससे दादे सुख़नवरी[1] पाएँ
लोग कुछ पूंछने को आए हैं
एहलेमीयत[2] जनाज़ा[3] ठहराएँ
लायेंगे फिर कहाँ से ग़ालिब को
सूए[4] मदफ़न[5] अभी न ले जायँ

१—कविता। २—लाश को ले जाने वाले व्यक्ति। ३—अर्थी।
४—ओर, तरफ़। ५—श्मशान (जहाँ मुर्दा गाड़ा जाता है।)

कविता

उर्दू कविता से सम्बन्ध रखने वाले शब्द

ग़ज़ल--दो-दो चरणों के कई छन्द, प्रथम दो चरणों में काफ़िया (अंत्यानुप्रास) उसके पश्चात् प्रत्येक दूसरे चरण में काफ़िया और रदीफ़ होता है। शेरों की संख्या ५ से १७ तक रहती है।

काफ़िया—अंत्यानुप्रास

रदीफ़—अंत्यानुप्रास के वह अक्षर (या शब्द जो परिवर्तित नहीं होते हैं।)

मिसरा--अर्ध शेर या एक चरण।

मतला--ग़ज़ल का पहला शेर जिसके दोनों मिसरों में अंत्यानुप्रास रहता है। कोई कोई कवि एक से अधिक मतले भी अपनी ग़ज़ल में रखते हैं। मतला और साधारण शेर में यह अन्तर है कि मतला के दोनों मिसरों में तथा साधारण शेर के दूसरे मिसरे में काफ़िया और रदीफ़ रहता है। जैसे—

१

हुई ताख़ीर[१], तो कुछ बायसे[२] ताख़ीर भी था।
आप आते थे मगर कोई अनागीर[३] भी था।

१—देर। २—कारण। ३—घोड़े की रास पकड़ने वाला।

पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक़
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर[1] भी था।

इन दोनों शेरों में पहला शेर मतला है। इसके पहले मिसरे में ताख़ीर और दूसरे मिसरे में गीर क़ाफ़िए के शब्द लाये गये हैं। दूसरा शेर सादा है। उसके पहले मिसरे में क़ाफ़िया नहीं है सिर्फ़ रदीफ़ की पूर्ति के लिए तहरीर शब्द का प्रयोग किया गया है।

मक़ता---मक़ता ग़ज़ल की आख़िरी शेर को कहते हैं जिसमें शायर अपना तख़ल्लुस (उपनाम) देता है।

उदाहरणार्थ :—

रेख़्ता के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो ग़ालिब
कहते हैं अगले ज़माने में कोई मीर भी था।

इस शेर के पहिले मिसरे में कवि ने अपना तख़ल्लुस 'ग़ालिब' दिया है और रदीफ़ के लिए मीर का शब्द प्रयोग किया है।

क़िता—क़िता और ग़ज़ल में सिर्फ़ यह अन्तर है कि ग़ज़ल के किसी शेर का सम्बन्ध उस ग़ज़ल के दूसरे शेरों से नहीं रहता। लेकिन क़िते में वह सम्बन्ध रखा जाता है (क़ितों में दो शेर या उससे अधिक शेर हुआ करते हैं और इसमें मतला नहीं होता)

क़िता—ता हम को शिकायत की भी न रहे जा
सुन लेते हैं गो ज़िक्र हमारा नहीं करते।
ग़ालिब तेरा अहवाल सुना देंगे हम उनको
वह सुनके बुला लें ये इजारा[2] नहीं करते।

---

१ - लिखते समय २—ज़िम्मा लेना।

रुबाई—रुबाई सिर्फ़ दो शेर या चार मिसरों की होती है। जिसमें पहले, दूसरे और चौथे मिसरों में काफिए का ध्यान रखा जाता है, परन्तु रदीफ़ का होना इसमें भी जरूरी है।

१

दुख जी को पसन्द[1] हो गया है ग़ालिब
दिल रुक रुक के बन्द हो गया है ग़ालिब

२

वल्लाह शब को नींद आती ही नहीं
सोना सौगन्द हो गया है ग़ालिब

इसमें पहले, दूसरे और चौथे मिसरे में पसन्द, बन्द और सौगन्द तुकों (काफिए) का प्रयोग किया गया है (तीसरे मिसरे में काफिया नहीं है)

क़सीदा—कसीदा किसी बादशाह, राजा, नवाब या किसी बड़े आदमी की प्रशंसा में उसका गुणगान किए जाने की कविता को कहते हैं। कभी-कभी उनके दुर्गुणों के प्रदर्शन के लिए भी क़सीदा लिखा जाता है।

मसनवी—किसी किस्से या कहानी को प्रबंधात्मक रीति पर पदों में लिखने को मसनवी कहते हैं।

ग़ालिब की चुनी हुई कविता

ग़ज़ल

१

दर्द मिन्नत कशे[1] दवा न हुआ
मैं न अच्छा हुआ बुरा न हुआ।

२

जमा करते हो क्यों रक़ीबों[2] को
एक तमाशा हुआ गिला न हुआ।

३

हम कहाँ क़िस्मत आज़माने जायँ
तूही जब ख़ंजर आज़मा[3] न हुआ।

१—मेरा दर्द दवा से न मिट सका। यह कोई बुरी बात नहीं हुई। अगर मैं अच्छा हो जाता तो मेरे दर्द को दवा का अहसान मंद होना पड़ता।

२—झगड़ा हमारा तुम्हारा है और वह भी सिर्फ़ तुम से गिला और शिक़ायत करने का—रक़ाबों अर्थात् प्रतिस्पर्द्धियों को इकट्ठा कर के उसको तमाशे का रूप क्यों देते हो?

१—अहसान उठाने वाला (कृतज्ञ) २—दिल में मैल रखने वाला। ३—ख़ंजर की परीक्षा लेने वाला।

३—हमारे लिये कौन सा ऐसा स्थान है जहाँ जाकर हम अपने भाग्य की परीक्षा करें जब तूही अपने खंजर की परीक्षा लेने से हिचकिचाता है।

४

है ख़बर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया[1] न हुआ।

५

जान दी, दी हुई उसी की थी।
हक़[2] तो यह है कि हक़[3] अदा न हुआ।

६

कुछ तो पढ़िये कि लोग कहते हैं
आज ग़ालिब ग़ज़ल सरा[4] न हुआ।

४—सब लोग यह कहते हैं कि आज वह तुम्हारे घर पर आयेंगे, मुझे बहुत लज्जा लगती है कि मेरे घर पर बिछाने के लिये बोरिया तक नहीं है।

वह आयेंगे तो मेरी गिरी दशा को देखकर अपने दिल में क्या कहेंगे ?

५—हमने जान दे दी तो क्या बड़ा काम किया ! यह जान तो ईश्वर की ही दी हुई थी। सच बात तो यह है कि जो काम हमको करना चाहिये था वह हम न कर सके।

६—ऐ ग़ालिब ! तुझको अपनी कुछ कविता तो लोगों को सुनानी चाहिये। लोग कहते हैं "क्या ग़ालिब आज जलसे में गज़ल न पढ़ेगा ?"

१—बोरे का बिछौना २—सच बात, ३—कर्त्तव्य ४—पढ़नेवाला,

ग़ज़ल

१

दोस्त ग़मख्वारी[१] में मेरी सई[२] फ़रमायेंगे क्या ?
ज़ख्म के भरने तलक नाख़ुन न बढ़ आयेंगे क्या ?

२

बे नियाज़ी[३] हद से गुज़री, बन्द परवर[४] कब तलक
हम कहेंगे हाल दिल और आप फ़रमायेंगे क्या ?

३

हज़रते[५] नासह[६] जो आयें दीदये दिल फ़र्शराह[७]।
कोई मुझको यह तो समझादे कि समझायेंगे क्या ?

१—मेरे मित्र मेरा दुःख दूर नहीं कर सकते क्योंकि मैं घाव खुजलाने का आदी हूं। अधिक से अधिक वे मेरे नाखून काट देंगे। किन्तु घाव के भरने तक क्या मेरे नाखून फिर न बढ़ जायेंगे ?

२—बन्दा परवर! आपकी बेपरवाही हद से ज्यादा बढ़ गयी है। कब तक हम अपनी दर्दभरी कहानी कहेंगे और उसको सुनने के बाद आप केवल यह शब्द कहेंगे "क्या" ?

३—उपदेशक महाशय यदि आते हैं तो आयें। हम अपने हृदय रूपी नेत्र उनकी राह में बिछा देंगे। किन्तु कोई मुझे यह तो बताये कि वे हमें क्या समझायेंगे ? क्योंकि उनका समझाना व्यर्थ होगा।

१—दुख दूर करना। २—उपाय, प्रयत्न। ३—बे परवाही। ४—सम्मान सूचक शब्द (दीन प्रतिपालक)। ५—सम्मान सूचक शब्द है। ६—उपदेश देने वाला। ७—उनके आने की राह में मैं अपने हृदय रूपी नेत्र बिछा दूं।

४

आज वाँ तेग़ो-कफ़न[1] बाँधे हुये जाता हूँ मैं
उज्र[2] मेरे क़त्ल करने में वह अब लायेंगे क्या ?

५

गर किया [3]नासेह ने हमको क़ैद अच्छा यूँ सही
ये [4]जिनूने इश्क़ के [5]अंदाज़ छुट जायेंगे क्या ?

६

ख़ाने [6]ज़ादे ज़ुल्फ़ हैं ज़ंजीर से भागेंगे क्यों
हैं गिरफ़्तारे [7]वफ़ा, [8]ज़िन्दाँ मे घबरायेंगे क्या ?

४—आज मैं उनके पास कफ़न और तलवार दोनों बाँध कर जा रहा हूँ। अब उनको मेरे क़त्ल करने में क्या इनकार होगा ?

५—"समझाने के लिये" उपदेशक ने मुझको बहुत देर तक पास बिठाये रक्खा; इस तरह से क्या प्रेम के पागलपन भरे भाव छुप जायेंगे ? (अर्थात् नहीं।)

६—हमारा उनके घुंघराले बालों से पूरा संबंध है क्योंकि हम ज़ुल्फ़ के ग़ुलाम हैं इस कारण हम जंजीर से क्यों डरेंगे ? हम तो वफ़ा के क़ैदी हैं इसलिये दुनियावी क़ैदख़ाने से हम नहीं घबराते।

ग़ज़ल

१

बस कि दुश्वार[9] है हर काम का आसाँ होना,
आदमी को भी [10]मयस्सर नहीं इन्साँ होना।

१—तलवार। २—बहाना। ३—उपदेशक। ४—पागल। ५—भाव। ६—ज़ुल्फ़ के ग़ुलाम। ७—दोस्ती का निभाना। ८—क़ैदखाना। ९—कठिन। १०—आसानी से पाना।

२

बाये[1] दीवनगीये शौक़[2] कि हरदम उचको,
आप जाना उधर और आप ही हैराँ[3] होना।

३

[4]हैफ़ उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत "ग़ालिब"
जिसकी क़िस्मत में हो आशिक का गरेबाँ होना।

१--संसार में आसान से आसान काम भी कुछ कठिन होता है। आदमी जो पूर्ण मनुष्य है उसमें भी मनुष्यता की कुछ न कुछ कमी होती ही है। यहाँ पर कवि ने आदमी और इन्सान में एक सूक्ष्म भेद बताया है। आदमी साधारण मनुष्य को कहते हैं और इंसान वह है जिसमें उंस अर्थात् प्रेम और सेवा का भाव हो।

२. मैं ईश्वर के प्रेम में पागल होकर अपने आपे में नहीं रहता। मैं उसकी ओर जाता हूँ लेकिन जब वह नहीं मिलता तो हैरान होकर रह जाता हूँ।

३. हाय! उस छोटे से कपड़े के भाग्य को क्या कहना कि जिसको प्रेमी का गरेबाँ होना बदा है।

ग़ालिब को एक समय जेलखाना हो गया था। छूटते समय जब उन्होंने कपड़े बदले तब उन्होंने यह शेर कहा था।

१—दुःख। २—शौक़ के कारण पागलपन। ३—बेचैन। ४—हाय। ५—कुरते का चाक।

ग़ज़ल

१

यह न थी हमारी क़िस्मत कि विसाले[१] यार होता,
अगर और जीते रहते यही इन्तज़ार[२] होता।

२

कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीर-नीमकश[३] को,
ये ख़लिश[४] कहां से होती जो जिगर के पार होता।

३

य कहां की दोस्ती[५] है कि बने हैं दोस्त नासेह[६]
कोई चारासाज़[७] होता कोई ग़मगुसार[८] होता।

१—हमारे ऐसे भाग कहां जो हमको ईश्वर मिलता! यदि और अधिक दिन जीवित रहते तो प्रतीक्षा ही करनी पड़ती।

२—जो तुमने आधा धँसा हुआ प्रेम-बाण मेरे हृदय में मारा है—उसका आनन्द कोई मुझसे पूछे! वह आनन्द कहाँ प्राप्त हो सकता था अगर वह हृदय के पार हो गया होता!

३—यह कहाँ की मित्रता है कि उपदेशक मेरे मित्र बनते हैं। (मेरा काम उपदेशकों से नहीं निकल सकता) होना तो यह चाहिये था कि कोई काम बनाने वाला होता या कोई दुःख दूर करने का उपाय करता।

१—मिलना। २—प्रतीक्षा करना। ३—आधा खिचा हुआ। ४—चुभन। ५—मित्रता। ६—उपदेशक। ७—काम बनाने वाला। ८—दुःख दूर करने वाला।

ग़ज़ल

१

[1]हुये हम जो मर के [1]रुसवा हुये क्यों न [2]ग़र्क दरिया
न कभी [3]जनाज़ा उठता न कहीं [4]मजार होता।

२

उसे कौन देख सकता कि [5]यगाना है वह [6]यकता
जो [7]दुई की बू भी होती तो कहीं दो [8]चार होता।

३

ये [9]मसायले [10]तसव्वुफ ये तेरा बयान ग़ालिब
तुझे हम [11]वली समझते जो न [12]बादाखार होता!

१—मरने के बाद जो हमारी बदनामी हुई, जिसने हमारी अर्थी देखी उसने कहा कि यह अच्छा आदमी नहीं था इसलिए कवि कहता है कि यदि हम डूब कर मरते तो इस कलंक से बच जाते। न कभी हमारी अर्थी निकलती और न कहीं हम दफ़नाए जाते।

२—ईश्वर के एक होने का कवि ने इस प्रकार प्रमाण दिया है कि यदि उसमें दुई की ज़रा भी झलक होती तो वह हमको कहीं न कहीं अवश्य मिलता।

३—ये अध्यात्मवाद की गूढ़ बातें और यह तेरी वर्णन करने

१—बदनाम। २—डूबना। ३—अर्थी। ४—क़ब्र। ५—एक। ६—एक। ७—दो होना। ८—मिलना। ९—कठिन और आवश्यक बातों का तय करना। १०—अध्यात्मवाद के सिद्धान्त। ११—सिद्ध १२—शराब पीने वाला।

की अपूर्व शक्ति ! यदि तू शराब न पीता होता तो हम तुझे सिद्ध पुरुष स्वीकार करते।

ग़ज़ल

१

मैं था कुछ, तो ख़ुदा था, कुछ न होता, तो ख़ुदा होता,
डुबोया मुझको होने ने न होता मैं तो क्या होता।

२

हुये जब ग़म से यूँ [1]बेहिस तो ग़म क्या सिर के कटने का,
न होता गर जुदा तन से तो [2]ज़ानूँ पर धरा होता।

३

हुई मुद्दत कि "ग़ालिब" मर गया पर याद आता है,
वह हर एक बात पर कहना कि यूं होता तो क्या होता।

१—जब संसार की उत्पत्ति नहीं हुई थी तब केवल ईश्वर ही ईश्वर था। अगर मैं पैदा न होता तो भी ईश्वर ही ईश्वर रहता। इसलिये मेरे पैदा होने से वह बात नष्ट हो गई।

२—हमारा सर दुःख की अधिकता से व्यर्थ हो गया था और हर वक्त उसको घुटनों पर रखना पड़ता था। इसलिये ऐसे दुख से भरे हुये सर के कट जाने का क्या दुःख है ?

३—अधिक समय व्यतीत हुआ कि 'ग़ालिब' की मृत्यु हो चुकी है। लेकिन उसका प्रत्येक विषय पर यह कहना कि 'ऐसा होता तो कैसा होता' याद आता है।

१—कष्ट का न मालूम होना। २—जंघा।

ग़ज़ल

१

रात दिन गर्दिश[१] में हैं सात आसमां
हो रहेगा कुछ न कुछ घबरायें क्या ?

२

लाग[२] हो तो उसको हम समझें लगाव[३]
जब न हो कुछ भी तो धोखा खायें क्या ?

३

हो लिये क्यों नामावर[४] के साथ साथ
यारब[५] ! अपने ख़त को हम पहुंचायें क्या ?

१—चन्द्रमा भी भ्रमण करता रहता है जिससे कृष्ण और शुक्ल पक्ष होते रहते हैं। यहाँ पर कवि ने भी इसी विचार को प्रगट किया है कि जब सातों आकाश चक्कर में रहते हैं तो हमारे बुरे दिन अच्छे दिनों में बदल जायंगे घबराने की क्या आवश्यकता है।

२—यदि उसकी हमारे साथ शत्रुता भी होती तो हो सकता था कि हम उसको मित्रता समझते लेकिन अब कुछ भी न हो तो फिर किस बात पर धोखा खायें।

३—पत्र के उत्तर के लिये हम इतने उत्सुक थे कि उसी पत्रवाहक के साथ हो लिये। लेकिन फिर ध्यान आया कि ऐ ईश्वर ! क्या हम ही अपने पत्र को लेकर जायें ? यह तो सरासर दीवानापन है।

१—चक्कर। २—दुश्मनी। ३—प्रेम। ४—पत्र वाहक। ५—हे ईश्वर।

ग़ज़ल

१

उम्र भर देखा किया मरने की राह
मर गये पर देखिये दिखलायें क्या ?

२

पूछते हैं वह कि ग़ालिब कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलायें क्या ?

१—मैं सारी आयु मृत्युकी राह देखता रहा (कि वह दशा जीवन से उत्तम होगी)। अब देखिये मृत्यु के बाद ईश्वर क्या दिखलाता है ?

२—वह ग़ालिब को अच्छी तरह पहिचानते हैं फिर भी लोगों से पूछते हैं के 'ग़ालिब' कौन है ? हम स्वयं इसका जवाब उनको क्या दें ? कोई दूसरा व्यक्ति उनको बता दे।

ग़ज़ल

१

इशरते[1] क़तरा[2] है दरिया में फ़ना[3] हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना[4] है दवा हो जाना।

२

तुझ से क़िस्मत में मेरे सूरते क़ुफ़्ले[5] अब्जद[6]
था लिखा बात के बनते ही जुदा हो जाना।

१—खुशी, आनंद। २—बूँद। ३—मिट जाना। ४—अधिक हो जाना। ५-६—एक विशेष प्रकार का ताला जो मुख्य अक्षरों के एक लाइन में होने से खुलता है और ताले के दो भाग हो जाते हैं।

३

अब जफ़ा[१] से भी हैं महरूम[२] हम अल्लह अल्लह
इस क़दर दुशमने अरबाबे[३] वफ़ा हो जाना

४

ज़ोफ़[४] सेगिरिया[५] मुबद्दल[६] ब दमे[७] सर्द हुवा
बावर[८] आया हमें पानी का हवा हो जाना।

१—बूंद का सब से बड़ा सुख यह है कि वह नदी में जाकर मिल जाय अर्थात् ग़ायब हो जाय। इसी प्रकार जब कष्ट बहुत बढ़ जाता है तो मनुष्य मर जाता है अर्थात् ईश्वर में लीन हो जाता है। जब पीड़ा सीमा से बढ़ जाती है तो वही औषधि होजाती है।

२—मेरा भाग्य कुफ्ल अब्जद के समान है कि जैसे ही बात बनती है हम अपने प्रेमी से अलग हो जाते हैं। (कुफ्ल अब्जद एक ऐसा ताला है जो कि अपने अक्षरों के एक पंक्ति में हो जाने पर खुल जाता है और उसके दोनों भाग अलग २ होजाते हैं)

३—एक वह समय था कि हम पर अनेक प्रकार की कृपा-दृष्टि रहती थी अब उन्होंने हमसे इतनी शत्रुता बढ़ाली है कि हमारे साथ बुरा बर्ताव भी नहीं करते।

४—कमज़ोरी से मुझमें रोने की भी शक्ति नहीं रही और मैं ठंडी साँसे लेने लगा हूँ। इस कारण हमें निश्चय हो गया कि पानी हवा के रूप में बदल जाता है।

१—सख्ती, बुरा वर्ताव। २—वंचित। ३—वफ़ा करने वाले लोग। ४—निर्बलता। ५—रोना ६—परिवर्तित। ७—ठंढी आहें। ८—निश्चय होना।

ग़ज़ल

१

आये हो कल और आज ही कहते हो कि जायें
माना कि हमेशा नहीं अच्छा कोई दिन और।

२

जाते हुए कहते हो क़यामत[1] को मिलेंगे
क्या ख़ूब क़यामत का है गोया कोई दिन और।

३

हाँ ऐ फ़लके[2] पीर जवाँ था अभी आरिफ़[3]
क्या तेरा बिगड़ता जो न मरता कोई दिन और।

१—तुम कल आये और आज ही जाने को कहते हो मैंने माना कि सदा यहाँ नहीं रहोगे किन्तु किसी और दिन चले जाना।

२—जाने के समय कहते हो कि प्रलय के दिन मिलेंगे (मुसलमानों के विश्वास के अनुसार प्रलय के दिन सब एक दूसरे से मिलेंगे) मेरे लिये तो तुम्हारा जाना ही प्रलय का दिन है।

३—हे बुड्ढे आकाश। 'आरिफ़' तो अभी जवान ही था यदि कुछ दिन और वह न मरता तो तुझको क्या हानि पहुँचती?

४

तुम माह शबे चार दहुम[4] थे मेरे घर के
फिर क्यों न रहा घर का नक़्शा कोई दिन और

१—प्रलय, । २—वृद्ध आकाश (उर्दू कवि आकाश को वृद्ध लिखा करते हैं)। ३—आरिफ़-कवि के एक मित्र का नाम है। ४—माहे शबेचार दहुम। चौदहवीं रात का चाँद।

५

तुम ऐसे कहाँ के थे खरे दाद व सितद[1] के
करता मलिकुलमौत[2] तक़ाज़ा कोई दिन और

४—तुम मेरे घर के लिये चौदहवीं रात के चाँद थे। यदि यह बात ग़लत है तो तुम्हारे चले जाने से मेरे घर में क्यों अँधेरा छा गया?

५—तुम लेन-देन के ऐसे खरे तो न थे कि मृत्यु-दूत (यमराज) के तक़ाज़ा करते ही फ़ौरन ही तुमने अपनी जान दे दी। उसे कुछ दिन और तक़ाज़ा करने देते।

(ये पूरी ग़ज़ल मिर्ज़ा ने अपने एक सुयोग्य कविता-शिष्य श्री जैनुलआबिदैन "आरिफ़" के परलोक गमन के अवसर पर कही थी। मिर्ज़ा को इन से प्रगाढ़ स्नेह था।

ग़ज़ल

१

क़ासिद[3] के आते आते ख़त एक और लिख रखूँ,
मैं जानता हूँ जो वह लिखेंगे जवाब में।

२

मुझ तक कब उनके बज़्म[4] में आता था दौरे जाम[5],
साक़ी[6] ने कुछ मिला न दिया हो शराब में।

३

है तेवरी चढ़ी हुई अंदर नक़ाब[7] के,
है एक शिकन[8] पड़ी हुई तरफ़े नक़ाब में।

१—लेन-देन। २—मृत्यु का दूत। ३—पत्र वाहक। ४—महफ़िल। ५—शराब के प्याले का चलना। ६—शराब पिलाने वाला। ७—बुरक़ा। ८—बल पड़ जाना।

४

लाखों लगाव[1] एक चुराना निगाह का,
लाखों बनाओ[2] एक बिगड़ना इताब[3] में।

१—मुझ को चाहिए कि पत्र वाहक के आने के पहिले ही मैं एक पत्र और लिख रखूँ क्योंकि जो कुछ वह जवाब में लिखेंगे मुझे मालूम है।

२—शराब का प्याला उनके जल्से में मुझ तक कभी नहीं आता था। आज जो आया, तो मुझे डर है कि साक़ी ने उसमें कुछ और न मिला दिया हो ('कुछ' शब्द उर्दू कवि प्रायः विष के वास्ते भी प्रयोग करते हैं)

३—क्रोध से बुरक़े के अंदर भी उनकी तेवरी चढ़ी हुई हैं। यह उसी चढ़ी हुई तेवरी का प्रभाव है कि बुरक़े में भी एक शिकन पड़ गई है।

४—उनके आँखें चुराने में लाखों प्रकार की लगावटें थीं उनके क्रोध से बिगड़ने में लाखों प्रकार के शृंगार थे।

ग़ज़ल

१

ये हम जो हिज्र[4] में दीवारे दर[5] को देखते हैं,
कभी सबा[6] को कभी नामावर[7] को देखते हैं।

२

वह आये घर में हमारे खुदा की कुदरत है,
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।

१—लगावट। २—शृंगार। ३—गुस्सा। ४—वियोग। ५—दरवाज़ा। ६—प्रातःकाल की हवा। ७—पत्र वाहक।

३

नज़र लगे न कहीं उनके दस्तो बाजू को,
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्मे जिगर को देखते हैं।

१—वियोग में हमको पत्रवाहक की ऐसी प्रतीक्षा है कि हमारी दृष्टि कभी दीवार पर जाती है और कभी दरवाज़े पर क्योंकि यदि 'सबा' (प्रातः समीर) उनका कोई संदेश लेकर आयी तो वह दीवार पर से आयेगी और यदि पत्र वाहक उनकी कोई खबर लेकर आया तो दरवाज़े से आयेगा।

२—उनके मेरे घर में आने से मुझे बड़ा आश्चर्य है। मेरी दृष्टि कभी उन पर पड़ती है और कभी अपने घर पर कि ऐसे टूटे-फूटे मकान में ऐसा सुन्दर व्यक्ति कैसे आया!

३—लोग आश्चर्य से मेरे जिगर के ज़ख्म की गहराई को क्यों देखते हैं? मुझे भय है कि इससे उनके हाथों को कहीं नज़र न लग जाये।

ग़ज़ल

१

दिल ही तो है न संग[1]-ख़िश्त[2] दर्द से भर न आये क्यों,
रोयेंगे हम हज़ार बार कोई हमें सताये क्यों?

२

देर[3] नहीं हरम[4] नहीं दर[5] नहीं आस्ताँ[6] नहीं,
बैठे हैं रह गुज़र[7] पै हम ग़ैर[8] हमें उठाये क्यों?

१—पत्थर। २—ईंट। ३—मंदिर; हिन्दुओं की पूजा की जगह। ४—मस्जिद; मुसलमानों की पूजा की जगह। ५—दरवाज़ा। ६—चौखट। ७—सड़क (जहाँ से लोग गुज़रते हैं)। ८—पराये लोग।

३

वाँ वह गुरूरे[1] इज्ज़ो[2] नाज़ याँ ये हिजाब[3] पासे वज़ा[4],
राह में हम मिलें कहाँ बज़्म[5] में वह बुलायें क्यों ?

१—मेरा दिल मांस का बना हुवा है, कोई पत्थर का टुकड़ा या ईंट नहीं है। उसमें दर्द अवश्य ही होगा। मैं तो हजार बार रोऊँगा, कोई मुझे क्यों सताये ?

२—जहाँ हम बैठे हैं यह सार्वजनिक मार्ग है, न कोई मंदिर है न कोई मस्जिद, न किसी का मकान है न किसी का दरवाज़ा, हमको कोई मनुष्य यहाँ से क्यों उठाये ?

३—मेरी प्रतिष्ठा मुझे आज्ञा नहीं देती कि मैं उनसे रास्ते में मिलूँ और उनको अपने जलसे में मुझे बुलाते हुये लज्जा लगती है। इसलिये मिलना किसी भी तरह से नहीं हो सकता।

४

हाँ वह नहीं खुदा परस्त[6] जाओ वह बेवफ़ा[7] सही
जिसको हो दीनो दिल अजीज़[8] उसकी गली में जाये क्यों ?

५

ग़ालिबे ख़स्ता[9] के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं
रोइये ज़ार-ज़ार[10] क्या कीजिये हाय-हाय क्यों ?

४—कवि क्रोधित होकर कहता है कि मेरा प्रेमी कोई ईश्वर का पुजारी नहीं है। मैंने माना कि वह बेवफ़ा है। लेकिन जिनको अपना दीन और दिल प्यारा हो उसकी गली में क्यों जाये ?

१—घमंड। २—इज़्ज़त। ३—लज्जा। ४—प्रतिष्ठा का विचार। ५—जलसा (सभा)। ६—ईश्वरका पुजारी। ७—बेमुरव्वत। ८—प्यारा। ९—निर्बल। १०—ज़ोर से रोना।

५—निर्बल ग़ालिब (कवि) की मृत्यु से सब काम पहिले की ही तरह हो रहे हैं। इस कारण उसका शोक मनाना व्यर्थ है।

ग़ज़ल

१

दीवानगी[१] से दोश[२] पै ज़ुन्नार[३] भी नहीं
यानी हमारे जेब में एक तार भी नहीं।

२

दिल को नियाज़[४] हसरते दीदार[५] कर चुके
देखा तो हममें ताक़ते दीदार भी नहीं।

३

शोरीदगी[६] के हाथ से है सर बवाले दोश[७]
सहरा[८] में ऐ खुदा! कोई दीवार भी नहीं।

१—पागलपन के कारण हमारी जेब में एक धागा भी नहीं रहा हमने उसको टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया अगर वह बच जाता तो हम उसी को जनेऊ समझ लेते।

२—मित्र के देखने की इच्छा में हमने अपने दिल को मिटा दिया। अब अगर वह दिखाई भी पड़े तो हममें देखने की शक्ति भी नहीं रही है।

३—पागलपन के कारण सर कंधे का बवाल हो रहा है। उसने मुझे घर में ही न टिकने दिया। अब कठिनाई यह आ पड़ी कि जंगल में सर फोड़ कर मर जाने के लिये कोई दीवार भी नहीं है।

१—पागलपन। २—कंधा। ३—जनेऊ। ४—भेंट। ५—देखने की इच्छा। ६—पागलपन। ७—कंधे का बोझ। ८—जंगल।

४

गुंजाइशे[१] अदावते[२] अग़यार[३] एक तरफ़
यॉ दिल में ज़ोफ़[४] से हवसे यार[५] भी नहीं।

५

इस सादगी पे कौन न मर जाये ऐ खुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं!

६

देखा असद[६] को ख़िलवतो[७] जिलवत[८] में बारहा[९]
दीवाना गर नहीं है तो हुशियार भी नहीं।

४—शत्रु की शत्रुता तो एक बड़ी कठिन चीज है। हमारी निर्बलता इस क़दर बढ़ गई है कि हमें अपने मित्र को देखने की इच्छा भी नहीं है।

५—ऐ ईश्वर! ऐसा कौन है जो मित्र की सादगी पर बलिदान न हो जाय। वह तो लड़ते समय भी अपने हाथ में शस्त्र नहीं रखते।

६—हमने असद (कवि) को एकान्त और सार्वजनिक रूप से बहुत बार देखा है। वह अगर दीवाना नहीं तो चतुर भी नहीं है।

ग़ज़ल

१

रात के वक्त मै[१०] पिये साथ रक़ीब[११] को लिये
आये वो यां खुदा करे पर न करे खुदा कि यूं।

१—जगह। २—शत्रुता। ३—ग़ैर लोग। ४—निर्बलता। ५—मित्र की इच्छा। ६—ग़ालिब का दूसरा उपनाम। ७—एकान्त स्थान जहाँ दो व्यक्ति हों। ८—जहाँ सब आदमी हों, सार्वजनिक स्थान। ९—बहुत दफ़े। १०—शराब। ११—एक प्रेमिका के दो या उससे अधिक चाहने वाले आपस में रक़ीब कहे जाते हैं।

२

बज़्म[1] में उसके रूबरू[2] क्यों न ख़ामोश[3] बैठिये
उसकी तो ख़मोशी में भी है यही मुद्आ[4] कि यूं।

३

मैंने कहा कि बज़्म नाज़ चाहिये ग़ैर से तिही[5]
सुन के सितम ज़रीफ़[6] ने मुझको उठा दिया कि यूं।

१—यह तो हमारी हार्दिक इच्छा है कि हमारा मित्र हमारे घर आये किन्तु ईश्वर न करे कि वह इस तरह आये, कि शराब पिए हुये हो और ग़ैर के साथ हो।

२—उसकी महफिल में, उसके सामने चुप बैठना चाहिये, क्यों कि वह ख़ुद चुप बैठा है। इससे उसका मतलब यह है कि तुम भी हमारी तरह चुप बैठो।

३—मैंने उससे कहा कि तुम्हारी नाज़ से भरी हुई महफ़िल में ग़ैर न होना चाहिये। उस मसख़रे ने मुझको अपनी महफिल से उठा दिया कि अब हमारी महफ़िल ग़ैर से ख़ाली हो गई।

ग़ज़ल

१

वह अपनी ख़ूं[7] न छोड़ेंगे हम अपनी वज़ा[8] क्यों छोड़ें ?
सुबुक[9] सर बन के क्या पूछें कि हम से सरगराँ[10] क्यों हो।

२

किया ग़मख़्वार[11] ने रुसवा[12] लगे आग इस मुहब्बत को
न लाये ताब[13] जो ग़म की वह मेरा राज़दां[14] क्यों हो

१—महफ़िल, २—सामने, ३—चुप, ४—मतलब, ५—ख़ाली ६—मसख़रा, ७—आदत, ८—प्रतिष्ठा, ९—ओछापन, १०—रूठना, ११—मित्र, १२—बदनाम, १३—बरदाश्त करना १४—छिपी बातों को जानने वाला

३

वफ़ा कैसी कहाँ का इश्क जब सर फ़ोड़ना ठहरा
तो फिर ऐ संगे[१] दिल ! तेराही संगे[२] आस्तां[३] क्यों हो ?

१—वह अपने रूठे रहने का स्वभाव न छोड़ेंगे तो हम अपनी प्रतिष्ठा को क्यों छोड़ें। ओछे बनकर उससे क्या पूछें कि हमसे क्यों नाराज़ हो ?

२—प्रेम की अग्नि को हम छुपाये हुये थे मगर हमारे मित्र की व्याकुलता ने उसको प्रकट कर दिया। अर्थात् हमारा मित्र हमार कष्टों को देखकर घबरा गया। जो मनुष्य कष्ट को सहन न कर सके उस कोमल हृदयवाले को हमारी दिल की बात जानने वाला न होना चाहिये।

३—वफ़ादारी कैसी और प्रेम कैसा ! जब सर फ़ोड़ कर मर जाने की ही ठान ली। तब फिर, ऐ संगदिल ! इसकी क्या ज़रूरत है कि तेरे ही मकान का पत्थर हो ! किसी और पत्थर से ही सर फोड़ लेंगे।

४

कफ़स में मुझसे रूदादे[१] चमन कहते न डर हमदम[२]
गिरी है जिस पै कल बिजला वह मेरा आशियाँ[३] क्यों हो ?

५

ये कह सकते हो[४] हम दिल में नहीं हैं पर ये बतलाओ
कि जब दिलमें तुम्हीं तुमहो तो आँखोंसे निहाँ[५] क्यों हो ?

६

निकाला चाहता है काम क्या तानों से तू ग़ालिब
तेरे बेमेहर[६] कहने से वह तुझ पर मेहरबाँ क्यों हो ?

१—पत्थर का दिल, २—पत्थर, ३—चौखट, ४—हाल, ५—साथी, ६—घोंसला, ७—ये नहीं वह सकते, ८—छुपा हुआ, ९—बेमुरव्वत,

४—ऐ मित्र ! तू आज ही गिरफ़्तार होकर चमन से आया है। मुझे यह तो बता चमन की क्या हालत है ? तू उसके बयान करने में झिझकता क्यों है ? कल जिस घोंसले पर बिजली गिरी थी वह मेरा घोंसला अब कहाँ रहा ? न मैं यहाँ से छूटूंगा और न उस तक पहुँचूंगा।

५—हे ईश्वर ! यह तुम नहीं कह सकते कि तुम हमारे दिल में नहीं हो। मगर हम को यह बताओ कि जब दिल में तुम्हीं तुम हो और कोई दूसरा कोई नहीं है तो फिर आँखों से ओझल क्यों हो ? जिस प्रकार दिल में रहते हो उसी प्रकार आँखों के सामने भी रहा करो।

६—ऐ ग़ालिब ! तू ताना देकर अपना काम बनाना चाहता किन्तु अपने दिल में यह तू समझ रख कि तेरे उसको बे-मुरव्वत कहने से वह तुझ पर मेहरबान नहीं हो जायगा।

ग़ज़ल

१

दिल से तेरी निगाह[१] जिगर तक उतर गई
दोनों को यक अदा में रज़ामन्द[२] कर गई।

२

वह बादये[३] शबाने[४] की सरमस्तियाँ[५] कहाँ
उठिये बस अबकि लज़्ज़ते[६] ख़्वाबे[७] सहर गई।

३

उड़ती फिरे है ख़ाक मेरी कूये[८] यार में
बारे अब ऐ हवाओहवस[९] बालो-पर गई।

१—दृष्टि, २—संतुष्ट ३—शराब। ४—रात की पी हुई। ५—मस्ती से भरी हुई। ६—मज़ा। ७—स्वप्न। ८—सबेरा ९—गली। १०—इच्छा।

४

मारा ज़माने ने असदअल्लाह[1] खाँ तुम्हें
वह वलवले[2] कहाँ वह जवानी किधर गई।

१—तेरी दृष्टि तीर के समान दिल से जिगर में जा पहुँची और इन दोनों को (दिल और जिगर) एक ही अदाये नाज़ हावभाव-भरी दृष्टि से संतुष्ट कर गई।

२—वह रात की पी हुई शराब की मादकता कहाँ बाक़ी रही? अर्थात् जवानी की अवस्था व्यातीत हो गई। (जागृति) अब जागने का समय आ गया अब प्रभात के सोने का समय शेष नहीं रहा अर्थात् बुढ़ापे का समय आगया।

३— मेरी बहुत समय से यह अभिलाषा थी कि मेरे उड़ने के लिये पर लग जायें कि मैं अपने मित्र को गली में उड़कर पहुँच जाऊँ। परन्तु जीवन में मेरी यह इच्छा पूर्ण नहीं हुई। फिर भी मृत्यु के बाद मेरी धूल मित्र की गली में इस प्रकार उड़ती फिरती है, जिस प्रकार मैं अपने जीवन में चाहता था।

४ - ऐ असदुल्लाखाँ! तुम्हें समय के चक्र ने मृत्यु से पहिले समाप्त कर दिया। तुम्हारी वह जोशभरी बातें और जवानी कहाँ चली गई!

गज़ल

१

कोई दिन गर ज़िन्दगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है।

१—कवि का दूसरा उपनाम। २—जोशभरी बातें।

२

आतिशे दोज़ख़[1] में यह गरमी कहाँ
सोज़े[2] ग़म हाये[3] निहानी[4] और है।

३

बारहा[5] देखी हैं उनकी रंजिशें
पर कुछ अबकी सर गरानी और है।

१—हमने तुम्हारे प्रेम में बड़े-बड़े दुःख सहे। अब हमने निश्चय कर लिया है कि अगर हम कुछ और दिनों तक जीवित रहे तो तुमसे सम्बन्ध तोड़ लेंगे।

२—नरक की अग्नि में वह गरमी नहीं है, जो तुम्हारे विरह की अग्नि में है।

३—बहुत बार उनमे बिगाड़ हो चुका है और फिर मेल हो गया। लेकिन अबकी बार कुछ ऐसा बिगाड़ हुआ है कि मेल की अब कोई आशा नहीं है।

४

दे के ख़त मुँह देखता है नामा बर[7]
कुछ तो पैग़ामे ज़बानी[8] और है।

५

हो चुकीं ग़ालिब बलाएँ[9] सब तमाम
एक मर्गे नागहानी[10] और है।

४—पत्रवाहक ने उनका पत्र मुझे दिया और फिर मेरे मुँह

१—अग्नि। २—जलन। ३—दुखों। ४—आँतरिक। ५—बहुत बार। ६—बिगाड़। ७—पत्र ले जाने वाला। ८—मौखिक सन्देश। ९—आपत्तियाँ। १०—समाप्त। ५—आकस्मिक मृत्यु।

की ओर देखने लगा। इससे मालूम होता है कि अभी उसको कुछ और कहना है।

यहाँ कवि का मतलब यह है कि मित्र ने कुछ सख्त बातें उसको कहीं होंगी कि वह मेरा मुँह ही मुँह देखता है, परन्तु कुछ कहता नहीं।

५—ऐ ग़ालिब! जीवन के सब कष्ट समाप्त हो चुके अर्थात् सब आपत्तियाँ झेल चुके। एक आकस्मिक मृत्यु का दुःख उठाना बाक़ी रह गया है।

ग़ज़ल

१

कोई उम्मीद[१] बर[२] नहीं आती
कोई सूरत[३] नज़र नहीं आती।

२

मौत का एक दिन मुअय्यन[४] है
नींद क्यों रात भर नहीं आती।

३

आगे[५] आती थी हाल दिल पर हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती।

१—मेरी कोई आशा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती है और न उसका कोई उपाय ही दिखाई पड़ता है।

२—मृत्यु का एक दिन नियत है, फिर कोई कारण नहीं कि उसकी चिन्ता से रात भर नींद न आये।

३—पहिले तो मुझे अपने दिल की दशा पर हँसी आती थी; किन्तु अब मुझको कष्टों ने इतना अधिक दुःखी कर दिया है कि अब किसी बात पर भी मुझे हँसी नहीं आती।

१—आशा। २—पूरा होना। ३—उपाय। ४—नियत। ५—पहिले।

४

जानता हूँ सवाब[१] - ताअतो[२] ज़ोहद[३]
पर तबीयत इधर नहीं आती।

५

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ
वरना क्या बात कर नहीं आती।

६

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती।

४—ईश्वर की भक्ति और प्रभु के बताये हुये रास्ते पर चलना मैं जानता हूँ कि बहुत नेक काम हैं, किन्तु क्या करूँ मेरा दिल उस ओर नहीं जाता।

५—मेरे चुप रहने का कुछ विशेष कारण है, इसलिये मैं चुप हूँ वरना क्या मुझको बात करना नहीं आता?

६—हम अपने आपे से गुज़र गये हैं और अपने को इतना भूल गए हैं कि हमको अपने हाल की भी कुछ ख़बर नहीं है।

७

मरते हैं आरज़ू[४] मे मरने की
मौत आती है पर नहीं आती।

८

काबा[५] किस मुँह से जाओगे "ग़ालिब"
शर्म तुमको मगर नहीं आती।

१—अच्छे कामों का फल। २—ईश्वर भजन। ३—व्रत रखना और अच्छे काम करना। ४—इच्छा। ५—मुसलमानों का तीर्थस्थान।

इस शेर के दूसरे पद के दो अर्थ हैं:—

७—(१) हमें मृत्यु की अधिक अभिलाषा है मृत्यु का होना आवश्यक है। रात दिन सैकड़ों मनुष्यों की मृत्यु सुनते रहते हैं परन्तु हमको मृत्यु नहीं आती। (२) दूसरा अर्थ—मैं रोगों के कष्ट से मृत्युशैया से जा लगा हूँ परंतु मौत नहीं आती!

८—ग़ालिब! तुम्हारी सारी आयु तो शराब पीने और दूसरे बुरे कामों में व्यतीत हुई। अब क्या मुंह लेकर काबा जाओगे? तुमको शर्म नहीं आती!

ग़ज़ल

१

दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है?

२

हम हैं [१]मुश्ताक़ और वह [२]बेज़ार
या इलाही ये माजरा क्या है?

३

मै भी मुँह में ज़बान रखता हूँ
काश [३]पूछो कि मुद्दआ [४]क्या है।

१—ऐ मूर्ख हृदय! तुझे क्या हुआ है? तू किसी प्रकार ठीक रास्ते पर नहीं लगता, मैं तेरा क्या इलाज करूँ? प्रेम की पीड़ा की कोई औषधि नहीं।

२—हम उनको देखने के बहुत इच्छुक हैं किन्तु वह हमको नहीं देखना चाहते। हे ईश्वर! यह बड़े आश्चर्य की बात है।

३—ईश्वर ने मुझको ज़बान दी है मुझसे भी तो कभी पूछो

१—इच्छुक २—घृणा करना। ३—ईश्वर करे! ४—मतलब।

कि तू क्या चाहता है। देखो मैं तुमको इसका क्या जवाब देता हूँ!

ग़ज़ल

१

और बाज़ार से ले आये अगर टूट गया
जामेजम[1] से ये मेरा जामे सफाल[2] अच्छा है।

२

वे तलब[3] दें तो मजा इसमें सिवा[4] मिलता है
वह गदा[5] जिसको न हो खूये[6] सवाल अच्छा है

३

इनके देखे से जो आ जाती है रौनक़[7] मुंह पर
वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

१—यहां पर कवि ने एक बहुत उच्च भाव दिखाया है। कहां जाम-जम और कहाँ मिट्टी का प्याला? किन्तु उसने मिट्टी के प्याले को यह बात दिखा कर विशेषता दी है कि अगर जामेजम टूट गया, तो वह बदला नहीं जा सकता, परन्तु मिट्टी का प्याला अगर टूट गया तो बहुत आसानी से बाजार में मिल जायगा। अः मेरा मिट्टी का प्याला जामेजम से कहीं बढ़कर है।

२—बिना माँगे यदि कोई चीज़ किसी से मिल जाये तो उसमें अधिक आनन्द आता है। वह भिखारी उच्च कोटि का समझा जाता है, जिसकी किसी के सामने हाथ फैलाने की आदत नहीं है

१—बादशाह जमशेद के पास एक विचित्र प्याला था इससे वह जो बात चाहता था, पूछ लेता था। २—मिट्टी का प्याला ३—बिना मांगे। ४—अधिक। ५—फ़क़ीर, भिखारी। ६—आदत, स्वभाव ७—प्रफुल्लता।

३—यूँ तो रोगी की दशा अच्छी नहीं किन्तु जब वह सामने आते हैं तो उनको देखकर रोगी के मुंह पर एक बहाली की लहर दौड़ जाती है और वह समझते हैं कि रोगी की हालत अच्छी है।

४

देखिये पाते हैं उश्शाक[१] बुतों[२] से क्या फ़ैज़[३]
एक बरहमन ने कहा है कि यह साल अच्छा है।

५

क़तरा[४] दरिया में जो मिल जाए, तो दरिया हो जाए
काम अच्छा है वह जिसका कि मआल[५] अच्छा है।

६

हमको मालूम है जन्नत[६] की हक़ीक़त[७] लेकिन
दिल के बहलाने को ग़ालिब यह ख्याल अच्छा है।

४—हमको देखना है कि प्रेमी जन अपने प्रेम पात्रों प्रेमिकाओं से क्या पाते हैं। एक ब्राह्मण (ज्योतिषी) ने बताया है कि यह साल उनके लिये अच्छा है।

५—पानी की एक बंद यदि नदी में मिल जाय, तो दरिया हो जाती है। इसी प्रकार जिस काम का परिणाम अच्छा हो वह काम अच्छा है।

६—हमको मालूम है कि स्वर्ग की वास्तविकता क्या है? (कवि के विचार के अनुसार जन्नत कोई चीज़ नहीं है) परन्तु दिल के बहलाए रखने के लिए कि वहाँ प्रत्येक इच्छित वस्तु मिल जाती है—यह विचार अच्छा है।

१—आशिक लोग, प्रेमी जन। २—माशूक़ों। ३—फ़ायदा। ४—बूँद। ५—नतीजा। ६—स्वर्ग। ७—वास्तविकता।

ग़ज़ल

१

न हुई गर मेरे मरने मे तसल्ली[१] न सही
इम्तिहाँ[२] और भी बाक़ी हो तो यह भी न सही।

२

एक हंगामें[३] पे मौक़ूफ़[४] है घर की रौनक़[५]
नौह-ये ग़म[६] ही सही नग़मये शादी[७] न सही।

३

न सिताइश[८] की तमन्ना[९] न सिला[१०] की परवाह
गर नहीं हैं मेरे अशआर में मानी न सही।

४

इशरते[११] सोहबते[१२] खूबाँ[१३] हो ग़नीमत[१४] समझो
न हुई "ग़ालिब" अगर उम्र तबई[१५] न सही।

१—यदि मेरी मृत्यु से भी तुमको संतोष नहीं हुआ अर्थात् तुम्हारे दिल में कुछ संदेह बाक़ी रह गये, तो तुम और प्रकार से (मृत्यु के अतिरिक्त) भी मेरी परीक्षा ले सकते हो।

२—ईश्वर पर सब कुछ अर्पण कर देने वालों की दृष्टि में ख़ुशी और रंज दोनों समान हैं। यहाँ पर कवि कहता है कि मेरे घर पर एक मेला-सा लगा रहे, चाहे उसका सम्बन्ध ख़ुशी से हो या दुःख से।

३—मेरी कविता पर यदि कोई वाह-वाह (प्रशंसा) न करे

१—संतोष। २—परीक्षा। ३—लोगों का जमघटा। ४—निर्भर। ५—शोभा। ६—शोक संगीत। ७—आनंद गायन। ८—प्रशंसा। ९—इच्छा। १०—बदला (पारितोषिक)। ११—खुशी। १२—साथ। १३—खूबसूरत लोग। १४—संतुष्ट उचित। १५—स्वाभाविक तबियत के अनुसार।

या उसके उपलक्ष्य में कुछ भेंट न चढ़ाये, मुझे इसकी परवाह नहीं है। मेरे शेर का यदि कोई अर्थ नहीं तो न हो।

(मिर्ज़ा ग़ालिब ने यह शेर उस मौक़े पर पढ़ा था जब चारों ओर से यह पुकार उठ रही थी कि तुम्हारे शेर अर्थ रहित होते हैं।)

४—हसीनों की संगति की खुशी में जो भी समय व्यतीत हो, उस पर सन्तुष्ट रहो, क्यों कि वह समय क्षणिक है, सदा न रहेगा।

ग़ज़ल

१

हर एक बात पर कहते हो तुम कि तू क्या है
तुम्हीं कहो कि यह अन्दाज़े गुफ़्तगू[१] क्या है।

२

न शोले[२] में ये करिश्मा[३] न बर्क़[४] में ये अदा[५]
कोई बताये कि वह शोख़[६] तुन्दख़ू[७] क्या है।

३

चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन[८]
हमारे जेब को अब हाजते रफ़ू[९] क्या है?

१—मेरी प्रत्येक बात को सुनकर तुम कहा करते हो कि तेरी वास्तविकता क्या है? आप यह तो बताइये कि बातचीत करने का क्या यही ढंग होता है?

१—बातचीत का तरीक़ा। २—अग्नि की लपट। ३—विलक्षण कार्य। ४—बिजली। ५—भाव। ६—शरारत से भरा हुआ यह शब्द माशूक़ के लिए प्रयोग किया जाता है। ७—बद मिज़ाज। ८—पहिनने का कपड़ा। ९—आवश्यकता।

२—अगर दिल की कठोरता के कारण उसको आग कहूँ तो आग में ऐसा करिश्मा नहीं है और अगर बिजली करार दूँ तो बिजली में भी उसके ऐसे नाज़ व अदा कहाँ हैं ? समझ में नहीं आता कि वह कठोर स्वभाववाला शोख़ अर्थात् मेरा माशूक़ क्या है ?

३—मेरा कपड़ा बदन पर ख़ून बहने के कारण चिपक गया है उसके चिपक जाने से अब यदि वह कहीं फटा हुआ है तो उसमें रफ़ू करने या उसके सीने की क्या ज़रूरत बाक़ी रही ?

४

जला है जिस्म[१] जहाँ दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जो अब राख जुस्तजू[२] क्या है।

५

रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं क़ायल[३]
जब आँख ही से न टपके तो फिर लहू क्या है।

६

वह चीज़ जिसके लिये हमको हो बिहिश्त[४] अज़ीज[५]
सिवाय बादये गुलफ़ाम[६] मुश्के बू[७] क्या है।

४—जहाँ शरीर जला है उसके साथ-साथ दिल भी जल गया होगा। अब तुम जो राख को कुरेद रहे हो तो तुम किस चीज़ को खोजते हो ?

५—सबका यह विचार है कि ख़ून मनुष्य की रगों में दौड़ा करता है। यहाँ पर कवि कहता है कि हम इस बात को नहीं मानते। हम तो ख़ून उसे कहेंगे जो आँखों से बहे।

१—शरीर। २—खोजना तलाश करना। ३—मानना। ४—स्वर्ग। ५—प्यारी। ६—गुलाबी शराब। ७—जिसमें मुश्क की ख़ुशबू हो।

६—हमको बेकुंठ केवल इस कारण से प्यारा है कि हमको वहाँ ख़ुशबूदार शराब पीने को मिलेगी।

७

पिऊँ शराब अगर खुम[1] भी देख लूं दो चार
यह शीशओ[2] क़दहो[3] कूजओ[4] सबू[5] क्या है।

८

रही न ताक़ते गुफ़्तार[6] और अगर हो भी
तो किस उम्मीद पै कहिये कि आरजू[7] क्या है।

९

हुआ है शह[8] का मुसाहब[9] फिरे है इतराता
वगरना[10] शहर में ग़ालिब की आबरू[11] क्या है

७— यदि शराब के दो चार घड़े भी देखूं तो मैं शराब पीना स्वीकार करूँ। इन सुराहियों, प्यालों और घड़ों से मेरी तबीयत नहीं भर सकती।

८—कमज़ोरी के कारण मुझ में बात करने की भी शक्ति नहीं रही और अगर हो भी तो मैं इतना निराश हो गया हूँ कि अपने मन की बात कहने में कोई लाभ नहीं देखता।

९—ग़ालिब बादशाह का मुसाहब होने के कारण फूला-फूला फिरता है, नहीं तो उसका शहर में क्या सम्मान था। (कवि ने इस शेर में अपनी दीनता दिखाई है।)

१—मटका, २—काँच का बरतन जिसमें शराब रक्खी जाती है, ३—प्याला ४—प्याला जिसमें उसे पकड़ने की जगह बनी हो ५—ठिलिया छोटा घड़ा ६—बातचीत करने की शक्ति, ७—इच्छा, ८—बादशाह, ९—किसी बड़े आदमी के साथ बैठने वाले, १०—नहीं तो, ११—सम्मान।

ग़ज़ल

१

क़हर[1] हो या बला हो जो कुछ हो
काश[2] कि तुम मेरे लिए होते!

२

मेरी क़िस्मत में ग़म गर इतना था
दिल भी यारब[3] कई दिए होते।

३

आ ही जाता वह राह पर "ग़ालिब"
कोई दिन और भी जिए होते

१—तुम ग़ुस्से से भरे हुये या सरापा शोख़ी हो (कुछ भी हो) ईश्वर करता कि तुम्हारा मेरा संबंध होता।

२—मेरे भाग्य में यदि इतना दुख था तो हे ईश्वर! मुझको कई दिल दिए होते। कि एक दिल को इतना दुख उठाने की सामर्थ्य नहीं।

३—ऐ ग़ालिब! वह धीरे-धीरे तुम्हारा कहना मानने लगता, किन्तु तुमने मरने में जल्दी करदी; तुमको कुछ दिन और जीना चाहिये था।

ग़ज़ल

१

ख़त लिखेंगे गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के।

१—कोप, २—आपत्ति, ३—ईश्वर करता, ४—हे ईश्वर!,

२

शाह की है गुस्ल-सेहत[1] की ख़बर
देखिये कब दिन फिरें हम्माम[2] के।

३

इश्क़ ने ग़ालिब निकम्मा[3] कर दिया
वरना हम भी आदमी थे काम के।

१—उनसे मिलने की इच्छा ने मेरा हृदय ऐसा बेकार कर दिया है कि यदि मैं उनको कोई पत्र भेजूं तो पत्र में मैं लिखना कुछ और चाहूँगा और लिख कुछ और जाऊँगा लेकिन इस पर भी मैं तुम को पत्र अवश्य भेजूंगा, क्योंकि पत्र के आरंभ में तुम्हारा नाम तो आ जायगा !

२—बादशाह के बीमारी से अच्छे होने की गर्म ख़बर है, देखिये हम्माम का भाग्य कब उदय होता है !

३—कवि कहता है कि हमसे भी बड़े बड़े काम हो सकते थे किन्तु प्रेम (इश्क़) ने हमको बेकार बना दिया है।

गज़ल

१

कब वह सुनता है कहानी मेरी
और फिर वह भी ज़बानी मेरी

२

क्या बयाँ करके मेरा रोयेंगे यार
मगर आशुफ्ता-बयानी[4] मेरी।

१—आरोग्य-स्नान २—नहाने का कमरा ३—बेकार ४—परेशानी का वर्णन।

३

कर दिया ज़ोफ़[1] ने आजिज़[2] "ग़ालिब"
नंग पीरी[3] है जवानी मेरी।

१—कठिनाई तो यह है कि वह मेरी कहानी अर्थात् मेरे दुःख का हाल सुनता ही नहीं। मैं तो चाहता था कि मेरी दुःख भरी कहानी मेरी ज़बान से सुनता अर्थात् मुझसे सुनता, मैं अपना दुख-भरा हाल उससे ख़ुद कहता।

२—मुझमें क्या विशेषता थी जिसका उदाहरण देकर मेरे मित्र मेरी मृत्यु के बाद रोयेंगे। शायद वह मेरी दुःखात्मक कविता का वर्णन करके आँसू बहायें।

३—ऐ ग़ालिब! मैं जवानी में इतना निर्बल हो गया हूँ कि बूढ़े भी उतने कमज़ोर और शक्तिहीन नहीं होते। मेरी जवानी बुढ़ापे को लज्जित करने वाली है।

ग़ज़ल

१

चाहिये अच्छों को जितना चाहिये।
ये अगर चाहें तो फिर क्या चाहिये।

२

सोहबते रिन्दों[4] से वाजिब[5] है हज़र[6]
जायमय[7] अपने को खींचा चाहिये।

३

मुनहसिर[8] मरने पै हो जिसकी उमीद[9]
नाउमेदी उसकी देखा चाहिये।

१—कमज़ोरी। २—लाचार। ३—बुढ़ापे को शरमाने वाली। ४—शराब पीने वालों के जमघटों से। ५—ज़रूरी, उचित। ६—परहेज, बचाव। ७—शराब की जगह। ८—निर्भर।

१—प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह भले आदमियों का जितना हो सके सम्मान करे। यदि उनकी कृपा दृष्टि हो गई, तो फिर किसी चीज़की कमी नहीं रहती। अच्छों से मतलब यहां अच्छी सूरत वालों से भी हो सकता है।

२—शराब पीने वालों की संगति से मनुष्य को बचना चाहिये। चंकि शराब खींची जाती है। कवि ने बहुत अच्छा कहा है कि बजाय शराब खींचने के शराब से अपने को खींचना चाहिये।

३—जिसकी आशाओं का दारोमदार मृत्यु पर हो यह देखना है कि उसकी निराशा किस सीमा तक पहुँच गई है।

४

ग़ाफ़िल[1] इन महतलतों[2] के वास्ते
चाहने वाला भी अच्छा चाहिये।

५

चाहते हैं ख़ूबरूओं[3] को असद[4]
आपकी सूरत तो देखा चाहिये।

४—ऐ मूर्ख! अच्छी सूरत वालों को चाहने के लिये आवश्यक है कि चाहने वाला भी ख़ूबसूरत हो।

५—ऐ असद! तुम अच्छी सूरत वालो को चाहते हो, आपकी सूरत को तो कोई देखे कि कैसी भोंडी है!

१—मूर्ख। २—अच्छी सूरत वाले, रूपवान। ३—अच्छी सूरत वाले, ख़ूबसूरत। ४—ग़ालिब का पहला उपनाम।

ग़ज़ल

१

नुक्ताचीं[1] है ग़मे दिल उसको सुनाए न बने
क्या बने बात जहां बात बनाए न बने।

२

मैं बुलाता तो हूँ उसको मगर ऐ जज्बये[2] दिल
उस पै बन जाय कुछ ऐसी कि बिन आए न बने।

३

खेल समझा है कहीं छोड़ न दे, भूल न जाए
काश[3] यूं भी हो कि बिन मेरे सताए न बने।

१—उसका स्वभाव बाल की खाल निकालने का है। किस प्रकार उसको दिल का दुःख सुनाया जाय। वह प्रत्येक बात को पकड़ता है, अर्थात् हमारा झूठ-सच उस पर प्रकट हो जायेगा।

२—मैं उसको बुलाता तो हूँ, किन्तु यह आशा नहीं कि मेरे बुलाए से वह चला आयगा। ऐ भावुक दिल! तू यदि कुछ सहायता करे और उस पर ऐसा प्रभाव डाले कि उसे बग़ैर मेरे पास आए चैन न आए।

३—वह मुझको दुख और कष्ट देने को एक खेल समझता है। इससे मुझे इस बात का भय है कि कहीं ऐसा न हो कि वह एक खेल समझकर मुझको दुःख देना भूल जाए। ईश्वर ऐसा करता कि बग़ैर मुझे सताये उसको चैन न पड़ता।

१—बाल की खाल निकालने वाला। २—दिल की खींच या हृदय का आकर्षण। ३—ईश्वर ऐसा करता।

४

ग़ैर फिरता है लिये यूं तेरे ख़त को कि अगर
कोई पूछे कि ये क्या है तो छिपाए न बने।

५

इस नज़ाकत[1] का बुरा हो वह भले हैं तो क्या
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।

६

कह सके कौन कि यह जल्वागरी[2] किसकी है
परदा छोड़ा है वह उसने कि उठाए न बने।

७

इश्क़ पर जोर नहीं, है यह वह आतिश[3] "ग़ालिब"
कि लगाये न लगे और बुझाए न बने।

४—(इस शेर का भाव अधिक सुन्दर है) ग़ैर तेरे पत्र को इस प्रकार लेकर फिरता है कि उसकी हार्दिक इच्छा है कि लोग उसे (पत्र) देख लें लेकिन प्रत्यक्ष रूप से वह उसको छिपाना चाहता है। जब लोगों की दृष्टि उसे (आधे छिपे हुये) पत्र पर पड़ती है और वह बड़ी अभिलाषा से पूछते हैं कि यह किसका पत्र है, तो उसको उसे छिपाते नहीं बन पड़ता। और उसको वह पत्र दिखलाना ही पड़ता है। (यही उसकी वास्तविक इच्छा थी।)

५—यद्यपि उनका स्वभाव अच्छा है तो क्या लाभ? वह इतने कोमल हैं कि यदि मिल भी जायँ तो उनको छूने में डर लगता है कि कहीं चोट न लग जाय।

६—यह कौन बता सकता है कि यह सांसारिक रचना

१—कोमलता। २—ईश्वरीय रचना, विलक्षणता। ३—अग्नि।

किसकी रची हुई है। ईश्वर ने इस पर ऐसा परदा डाल दिया है कि यह परदा कोई उठा नहीं सकता।

७--प्रेम की अग्नि पर किसी का क़ाबू नहीं। वह आग न हमारे कहने के अनुसार लग सकती है न बुझ सकती है। प्रेम में हमारे चाहने न चाहने का अधिकार नहीं।

ग़ज़ल

१

वह आके ख्वाब[१] में तसकीन[२] इज़्तराब[३] तो दे
वले[४] मुझे तपिशे[५] दिल मजाले ख्वाब तो दे।

२

करे है क़त्ल लगावट[६] मे तेरा रो देना
तेरी तरह कोई तेगे निगह[७] को आब तो दे।

३

पिला दे ओक[८] से साक़ी[९] जो मुझसे नफ़रत है
पियाला गर नहीं देता, न दे, शराब तो दे।

१—यह तो सम्भव है कि वह स्वप्न में आकर मेरे दिल को कुछ ढाढ़स दें, लेकिन मेरे दिल की जलन सोने ही नहीं देती, तो वह ख़्वाब में कैसे आयें।

२—तेरा प्रेम में रो देना क़यामत ढाता है। तेरी आँखों के आँसू निगाह की तलवार को आबदारी चमक दमक पहुँचाते हैं। कवि ने दूसरे मिसरे में जो तेग़ तलवार का शब्द प्रयोग किया है इसलिये उसने पहले मिसरे में क़त्ल करना लिखा है।

१—स्वप्न। २—धीरज। ३—बेचैनी, तड़पन। ४—लेकिन। ५—जलन। ६—प्रेम। ७—तलवार रूपी दृष्टि। ८—चुल्लू। ९—शराब पिलाने वाला।

दूसरे मिसरे में 'आब' शब्द का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया गया है। 'आब' का अर्थ चमक दमक होना है यहां उसके अतिरिक्त उसका सम्बन्ध आंसुओं से भी है।

३—यदि तू हमसे घृणा करता है और शराब पीने के लिए अपना प्याला नहीं देना चाहता, तो हमको शराब तो दे कि हम चुल्लू से ही पी लेंगे।

ग़ज़ल

१

हरचन्द[१] हर एक शै[२] में तू है
पर तुझसी तो कोई शै नहीं है

२

हाँ खाइयो मत फ़रेब हस्ती[३]
हरचन्द कहें कि है, नहीं है।

३

शादी[४] से गुज़र कि ग़म न होवे
उरदी[५] जो न हो तो दै[६] नहीं है।

१—बावजूद इसके कि प्रत्येक वस्तु में तेरा चमत्कार है लेकिन फिर भी तू हर चीज़ से परे है। संसार में तेरी ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है।

२—यह माया जाल जो चारों ओर बिछा है इससे धोखा मत खाओ। लोग कितना ही संसार को वास्तविकता बतायें किन्तु वास्तव में वह कुछ नहीं है।

३—ख़ुशी मनाना छोड़ दे फिर तुझको ग़म (दुःख) भी न उठाना पड़ेगा। यदि तू बहार के मौसम से आनन्द न प्राप्त करे, तो तुझको ख़िज़ाँ से दुःख भी न उठाना पड़ेगा।

१—बावजूद इसके। २—चीज़, वस्तु। ३—माया का जाल ४—खुशी। ५—बहारका मौसम, बसंतऋतु। ६—पतझड़ का मौसम।

ग़ज़ल

१

बाज़ीचये[१] इतफ़ाल[२] है दुनियाँ मेरे आगे
होता है शबोरोज[३] तमाशा मेरे आगे।

२

जुज़नाम[४] नहीं सूरते आलम[५] मुझे मंजूर
जुज़ वहम[६] नहीं हस्तिये[७] अशिया[८] मेरे आगे।

३

मत पूछ के क्या हाल है मेरा तेरे पीछे
तू देख के क्या रंग है तेरा मेरे आगे।

१—संसार मेरी दृष्टि में बच्चों के खेलने-कूदने का स्थान है, रात दिन मैं उसके तमाशे को देखा करता हूँ। जो कुछ दुनियाँ में होता है उसका मेरे दिल पर कुछ असर नहीं पड़ता।

२– संसार का केवल नाम ही नाम है उसकी सूरत मेरी दृष्टि में कुछ भी नहीं है। दुनियाँ की जितनी चीजें हैं, वह भ्रम से ज्यादा रूप नहीं रखती (ईश्वर के सिवा मैं न तो दुनियाँ और न उसकी किसी चीज़ का होना मानता हूँ)।

३—यह न पूछ कि तेरे विरह में मेरा क्या हाल होता है, बल्कि तू यह देख कि तेरा मेरे सामने क्या रंग है। अर्थात् तू मेरे सामने आकर किस कदर परेशान हो जाता है।

१—खेलकूद की जगह। २—बच्चों की। ३—रात दिन ४—सिवाय। ५—संसार की आकृति। ६—सन्देह। ७—होना। ८—चीजें।

४

सच कहते हो खुदबीं[१] व खुदआरा[२] हूँ न क्यों हूँ।
बैठा है बुते[३] आइनये[४] सीमा[५] मेरे आगे।

५

फिर देखिये अन्दाज़े[६] गुलअफ़शानिये[७] गुफ्तार[८]
रखदे कोई पैमानो[९] व सहबा[१०] मेरे आगे।

६

गो हाथ को जुम्बिश[११] नहीं आँखों में तो दम है
रहने दो अभी साग़रो[१२] मीना[१३] मेरे आगे।

४—तुम सच कहते हो, मैं अपने को देखने वाला और बना-चुना कर रखने वाला हूँ अर्थात् मुझे अपनी सूरत पर घमंड है तो क्यों न हो, जब तुम जिसका माथा शीशे की तरह चमकता है मेरे सामने बैठे हो।

५—फिर देखिये मेरी बातचीत से कैसे फूल झड़ते हैं। यदि कोई मेरे आगे एक गिलास शराब और शराब का शीशा भरकर रख दे।

६—यद्यपि अब हाथ हरकत नहीं करता और शराब का प्याला उठाकर मुँह से लगाने की शक्ति नहीं है। किन्तु अभी तक आँखों में जान बाक़ी है। शीशे और प्याले को मेरे सामने से अभी न उठाओ। (मुझे उसका देखना भी भला लगता है।)

१—अपने को देखने वाला। २—अपने को बना चुनाकर रखने वाला। ३—माशूक़। ४—शीशा। ५ माथा। ६—तरीक़ा। ७—फूल बरसाना। ८—बात चीत। ९ - गिलास। १०—एक प्रकार की शराब। ११—हिलना जुलना। १२—प्याला। १३—शराब का शीशा।

ग़ज़ल

१

कहूँ जो हाल तो कहते हो मुद्दआ[1] कहिये
तुम्हीं कहो कि जो तुम यूं कहो तो क्या कहिये।

२

न कहना तान[2] से फिर तुम कि हम सितमगर[3] हैं
मुझे तो ख़ू[4] है कि जो कुछ कहो बजा[5] कहिये।

१—यदि मैं अपना हाल तुमसे कहता हूँ तो तुम कहते हो कि तुम्हारा मतलब क्या है? अर्थात् तुम क्या चाहते हो? मैं तुम्हीं से पूछता हूँ कि तुम्हारे इस पूछने के जवाब में मुझे क्या कहना चाहिये?

२—मेरा तो यह स्वभाव है कि तुम्हारी हर बात पर मैं कह दिया करता हूँ कि "ठीक है" इस लिये तुम ताने से मुझे चिढ़ाने के लिये अपने तईं सितमगर न कहना। क्योंकि यदि तुम ताने से अपने को सितमगर कहोगे तो मैं बग़ैर किसी विचार के कह दूंगा कि हाँ ठीक है--इस प्रकार तुम मुफ्त में बदनाम होंगे।

ग़ज़ल

१

इब्न[6] मिरियम[7] हुआ करे कोई
मेरे दुख की दवा करे कोई।

१—मतलब। २—ताना। ३—ज़ालिम (निठुर)। ४—आदत। ५—ठीक। ६—बेटा। ७—हज़रत ईसा की माँ का नाम है।

२

शरा[१] व आईन[२] पर मदर[३] सही
ऐसे क़ातिल का क्या करे कोई।

३

बात पर वाँ ज़बान कटती है
वह कहें और सुना करे कोई।

१—अगर कोई मुर्दे को ज़िन्दा करने वाला मसीहा हो तो हुआ करे। मैं तो उसको तब मानूँगा जब वह मेरे दुख को दूर कर दे।

२ हमने माना कि शरा और क़ानून की पाबन्दी है जिसके द्वारा क़ातिल (प्राणघाती) को मृत्यु दंड दिया जाता है। किन्तु ऐसे क़ातिल का कोई क्या कर सकता है जो बग़ैर हथियार के अपने प्रेमी को मौत के घाट उतार दे।

३ उनके विरोध में कुछ भी कहने पर ज़बान काट ली जाती है। इसलिये उनकी बात चाहे ठीक हो या ग़लत, चुपचाप सुननी पड़ती है।

४

बक रहा हूँ जुनूँ[४] में क्या क्या कुछ
कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई।

५

न सुनो गर बुरा कहे कोई
न कहो गर बुरा करे कोई।

६

रोक लो गर ग़लत चले कोई
बख़्श दो[५] गर ख़ता[६] करे कोई।

१—इस्लामी क़ानून। २—सरकारी क़ानून। ३—रोक, निर्भर। ४—पागलपन ५—क्षमा कर दो ६—अपराध।

४—मैं पागलपन की दशा में न जाने क्या क्या बक रहा हूँ। (राज़ की बातें भी कह जाता हूँ) ईश्वर करे, मेरे बकने को कोई कुछ न समझे।

५—यदि कोई मनुष्य तुमको बुरा भला कहे, तो उसके कहने पर ध्यान न दो और अगर कोई मनुष्य बुरा काम करे, तो उसका ज़िक्र किसी से मत करो।

६—यदि कोई ग़लत रास्ते पर चल रहा हो, तो उसको रोक दो और अगर कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ कोई अपराध करे, तो क्षमा कर दो।

७

कौन है जो नहीं है हाजत मंद[1]
किसकी हाजत रवा[2] करे कोई।

८

जब तवक़्क़ो[3] ही उठ गई ग़ालिब
क्यों किसी का गिला[4] करे कोई।

७—इस संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है जिसको किसी न किसी चीज़ की ज़रूरत न हो। अगर कोई किसी की सहायता न कर सके, तो उसका बुरा न मानना चाहिये। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपनी ही ज़रूरतों को पूरा करने में लगा रहता है।

८—जब हृदय में आशा का स्थान ही नहीं रहा, तो कोई किसी की क्यों शिकायत करे? (आशा के पूर्ण न होने पर मनुष्य को शिकायत का मौक़ा मिलता है।)

१—किसी बात का चाहने वाला। २—पूरी करना। ३—आशा। ४—शिकायत।

ग़ज़ल

१

हज़ारों ख़्वाहिशें[1] ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमाँ व लेकिन फिर भी कम निकले।

२

डरे क्यों मेरा क़ातिल क्या रहेगा उसकी गरदन पर,
वह ख़ूँ जो चश्म तरसे उम्र भर यूँ दमबदम निकले।

३

मगर लिखवाये कोई उसको ख़त तो हमसे लिखवाये,
हुई सुबह और घर से कान पर रख कर क़लम निकले।

१—हमारी हज़ारों मुरादें जो हमारे हृदय से बहुत गहरा सम्बन्ध रखतीं थीं, पूरी हुईं। किन्तु अब भी बहुत सी अभिलाषाएँ पूरी होने को बाक़ी हैं।

२—मेरा घातक मेरे प्राण ले लेने से क्यों भय खाता है ख़ून तो शरीर में रहा ही नहीं। वह आँसुओं के साथ आँखों से हमेशा बहता रहा है। उसकी गरदन पर कौन सी चीज रहेगी जो इस हत्या का प्रकट करेगी।

३ - यदि उसको कोई पत्र लिखवाए तो हमसे लिखवाये। इस कारण जैसे ही सवेरा होता है मैं कान पर कलम रखकर घर से निकल जाता हूँ।

कवि कहता है कि एक तो उसके नाम पत्र लिखने से मेरे हृदय को संतोष होता है। दूसरे, इस प्रकार पत्र लिखवाने वाले के दिल की बातों का भी ज्ञान मुझे हो जाता है।

१—मुराद (इच्छा)

४

मुहब्बत में नहीं है फ़र्क़ जीने और मरने का
उसी को देखकर जीते हैं, जिस काफ़िर[1] पदम निकले।

५

कहाँ मयख़ाने[2] का दरवाजा "ग़ालिब" और कहाँ वायज[3]
पर इतना जानते हैं, कल वह जाता था कि हम निकले।

४--प्रेम में मरना और जीना समान है। जिसके देखने पर जीवन निर्भर है, उसी पर हमारी जान भी जाती है (कवि ने पहले मिसरे को पूर्ति दूसरे मिसरे में बड़ी खूबसूरती के साथ करदी है)

५--इस बात से हमको आश्चर्य है कि ऐ ग़ालिब! शराब-खाने के द्वार से उपदेशक महाशय का क्या सम्बन्ध? परन्तु इतनी बात ज़रूर है कि कल के रोज हम जब शराब खाने से बाहर निकल रहे थे तो हमने देखा कि उपदेशक उसमें जा रहा था।

१

लागर[4] इतना हूं कि गर तू बज़्म में जा[5] दे मुझे
मेरा जिम्मा, देख कर गर कोई बतलादे मुझे

२

क्या ताज्जुब है कि उसको देखकर आजाय रहम
वाँ तलक कोई किसी हीले[6] से पहुँचा दे मुझे

---

१ यहाँ पर माशूक के लिये इस शब्द का प्रयोग हुआ है। २—शराब ख़ाना। ३—उपदेश देने वाला। ४—कमज़ोर। ५—जगह। ६—बहाना।

३

मुँह न दिखलाये न दिखला पर वह अन्दाजे इताब[1]
खोल कर परदा जरा आँखें ही दिखलादे मुझे

१—मैं इतना निर्बल हो गया हूं यदि तू मुझे अपनी गोष्ठी में बिठाये, तो मैं इस बात का जिम्मा लेता हूं कि निर्बलता के कारण मैं किसी को नज़र ही न आऊँगा।

२—मेरी दशा ऐसी गिर गई है कि अगर उनके स्थान तक कोई मुझे सहारा देकर (बहाने से) पहुँचा दे और उनका मेरा सामना हो जाए तो आश्चर्य नहीं कि उनको मुझ पर रहम आजाए।

३—अगर तू मुझसे शर्म करता है तो अपना मुँह मुझको न दिखा, लेकिन गुस्से के कारण परदा हटा कर मुझको अपनी आँखें ही दिखा दे। (आंख दिखाना क्रुद्ध होने के अर्थ में प्रयोग किया जाता है।)

१—गुस्सा।

क़िते

क़ितः

१

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो
हम सखुन[१] कोई न हो और हम जवाँ[२] कोई न हो

२

बे दरो दीवार-सा एक घर बनाना चाहिये
कोई हमसायः[३] न हो और पासवाँ[४] कोई न हो

३

पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार[५]
और अगर मर जाइये तो नौहाख़ाँ[६] कोई न हो

१—मुझको अपने प्रेमियों और सम्बंधियों से कुछ ऐसा दुःख पहुँचा है कि मैं ऐसी जगह जाकर रहना चाहता हूँ जहाँ पर कोई मेरे साथ न तो सहानुभूति दिखानेवाला हो और न मेरी भाषा समझने वाला।

२—किसी मैदान में लकड़ियाँ खड़ी करके एक छप्पर डाल लेना चाहिये जो घर का काम दे परन्तु उसमें कोई दीवार या दरवाज़ा न हो। जब मकान में दीवार न होगी तो कोई पड़ोसी

१—एक ख़्याल के। २—एक भाषा बोलने वाले ३—पड़ोसी। ४—पहरेदार। ५—रोगी की परिचर्या करनेवाला। ६—रोनेवाले।

भी न होगा और जब उसमें दरवाज़ा न होगा तो रखवाले की क्या आवश्यकता हो सकती है ?

३—यदि (वहाँ) बीमार पड़ जाये तो कोई देखभाल करने वाला न हो और अगर मृत्यु हो जाये तो कोई रोने वाला न हो।

क़ितः

१

जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फिर ये हंगामा[१] ऐ खुदा ! क्या है ?

२

ये परी चेहरा[२] लोग कैसे हैं ?
ग़म्ज़ाओ[३] इशव-वो[४] अदा[५] क्या है ?

३

सब्जओ[६] गुल कहाँ से आये हैं ?
अब्र[८] क्या चीज है ? हवा क्या है ?

१—ऐ ईश्वर ! जब तेरे सिवा दुनियाँ में कोई दूसरी वस्तु नहीं है फिर यह शोरगुल कैसा है ?

२—जब तेरे सिवा कोई दूसरा इस संसार में नहीं है तो ये परियों के से सुन्दर और मनमोहक व्यक्ति कैसे दिखाई देते हैं। और इन लोगों के यह हाव-भाव और अदायें क्या चीज हैं ?

३—यह हरियाली और फूल कहाँ से आये हैं ? (किसने इनको पैदा किया है ?) यह बादल क्या चीज है और यह हवा क्या चीज है ?

१—शोरगुल (जमघट)। २—जिनका मुख परी जैसा हो (खूबसूरत)। ३—हावभाव। ४—मनमोहक भाव। ५—दिल लुभाने वाली रीति। ६—हरियाली। ७—फूल। ८—बादल।

४

हमको उनसे वफ़ा[१] की है उम्मीद[२]
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है ?

५

हाँ भला कर तेरा भला होगा
और दरवेश[३] की सदा[४] क्या है ?

६

जान तुम पर निसार[५] करता हू
मैं नहीं जानता दुआ क्या है ?

७

मैंने माना कि कुछ नहीं ग़ालिब
मुफ्त हाथ आये तो बुरा क्या है ?

४—वह इतने अल्प वयस्क और नादान हैं कि जानते ही नहीं कि प्रतिज्ञा-पालन क्या चीज है। हम ऐसे नासमझ हैं कि उनसे प्रेम की आशा रखते हैं। (५-६—७ का अर्थ स्पष्ट है)

क़ितः

१

फिर खुला है दरे[६] अदालते[७] नाज़[८]
गर्म बाज़ार फौजदारी[९] है।

२

हो रहा है जहान[९] मे अन्धेर
जुल्फ[१०] की फिर सरिश्तादारी[११] है

१—प्रतिज्ञापालन। २—आशा। ३—फ़क़ीर। ४—पुकार। ५—निछावर। ६—दरवाज़ा। ७—कचेहरी। ८—हावभाव। ९—संसार। १०—माशूक के सर के बाल। ११—.....।

३

फिर किया पारये[1] जिगर ने सवाल
एक फरियाद[2] आहोज़ारी[3] है।

१—फिर नाज़ की अदालत का दरवाज़ा खुल गया है और जगह-जगह पर प्रेमियों में परस्पर संघर्ष होने लगे हैं।

२—जहान में अंधेर हो रहा है और इसका कारण यह है कि वही जुल्फ फिर से सरिश्तेदारी के ओहदे पर नियुक्त कर दी गई है।

३—फिर जिगर के टुकड़े ने दावा दायर कर दिया है और फरियादी चारों ओर से टूट पड़े हैं।

४

फिर हुये हैं गवाहे इश्क़ तलब[4]
अश्क[5] बारी का हुक्म जारी है।

५

दिलो मिज़गाँ[6] का जो मुक़दमा था
आज फिर उसकी रूबकारी[7] है।

६

बेखुदी[8] बे सबब नहीं "ग़ालिब"
कुछ तो है जिसकी परदा दारी[9] है।

४—फिर अदालत के सामने इश्क के गवाह बुलाए गए हैं जिनको आँसू बहाने पड़े हैं वे गवाह के रूप में बुलाए गए हैं।

१—टुकड़ा। २—प्रार्थना। ३—रोना-पीटना। ४—बुलाए जाना। ५—आँसू बहना। ६—आंखों की पलकें। ७—पेशी। ८—अपने को भूल जाना। ९—परदा रखना, छुपाये रखना

५—दिल और आखों की पलकों का जो मुक़दमा दायर था, आज फिर उसकी पेशी हैं।

६—ऐ ग़ालिब ! यह आत्म--विस्मृति अकारण ही नहीं है किन्तु कुछ न कुछ बात तो जरूर है जिसको छिपाने के लिये इसका सहारा लिया गया है। (कवि कहता है कि ईश्वरीय प्रेम को छुपाने के लिये मैं अपने आपे से गुज़र गया हूं)

क़ितः

१

देखो ए साकिनाने[१] ख़ित्तये[२] ख़ाक
इसको कहते हैं आलम[३] आराई।

२

कि ज़मी हो गई है सरता सर[४]
रुकशे सितह[६] चर्खे[७] मीनाई।

३

सब्ज़े[८] को जब कहीं जगह न मिली
बन गया रूये[९] आब पर काई।

१—हे सांसारिक प्राणियो ! देखो, संसार का सुन्दर दृश्य इसको कहते हैं।

२—पृथ्वी पर इस अधिकता से फूल तथा हरियाली पैदा हो गयी है कि पृथ्वी आकाश की बराबरी करने लगी है।

३—हरियाली इस अधिकता से फैली कि उसने समस्त पृथ्वी

१—रहने वाले। २—संसार के। ३—संसार का शृंगार। ४—सर से पैर तक। ५— समान। ६—समतल। ७—मीने के रंग का (सब्ज़) । ८—हरियाली। ९—मुख।

को घेर लिया। अब जगह न मिलने से वह लाचार होकर पानी पर काई के रूप में प्रकट हुई है।

४

सब्ज़ओ गुल[1] के देखने के लिए
चश्म[2] नरगिस को दी है बीनाई[3]।

५

है हवा में शराब की तासीर
बादानोशी[4] है बाद[5] पैमाई।

६

क्यों न दुनिया को हो खुशी "ग़ालिब"
शाह दीनदार[6] ने शिफ़ा[7] पाई।

४—ईश्वर ने इस सब्ज़े और फूलों को देखने के लिये नरगिस को देखने की शक्ति दी है। [कवि नरगिस की उपमा आँख से दिया करते हैं

५—फस्ल बहार की हवा में शराब जैसा नशा है।

६—ऐ ग़ालिब ! सारे संसार को खुशी प्राप्त हुई है क्योंकि धर्मात्मा राजा ने स्वास्थ्य-लाभ किया है।

क़ितः

१

कलकत्ता का जो ज़िक्र किया तूने हमनशीं[8]
एक तीर मेरे सीने पै मारा कि हाय हाय।

१—फूल २—नरगिस की आँख। उर्दू भाषा के कवि प्रायः नरगिस के फूल की उपमा आँख से देते हैं ३—देखने की शक्ति ४—शराब पीना ५—बसंत ऋतु की हवा ६—धर्म का मानने वाला ७—निरोग होना ८—साथ बैठने वाला।

२

वह सब्ज़ाज़ार हाय मुअत्तर[1] कि है ग़ज़ब
वह नाज़नीन[2] बुताने[3] खुदारा[4] कि हाय हाय।

३

सब्र[5] आज़मा वह उनकी निगाहें कि हफ़[6] नज़र
ताक़त रुबा[7] वह उनका इशारा कि हाय हाय।

४

वह मेवा[8] हाय ताज़वो शीरीं कि वाह वाह
वह बादा[9] हाय नाव गवारा कि हाय हाय

१—ऐ मित्र ! जो तूने कलकत्ता का ज़िक्र किया उससे मेरे सीने पर एक तीर-सा लगा अर्थात् मैं उसका ज़िक्र सुनकर बहुत बेचैन हो गया।

२—वहाँ की सुगन्धि से भरी हुयी हरी-हरी बाटिकायें और सुकुमारी प्रेमिकाओं की याद मुझको तड़पा देती है।

३—उनकी दृष्टि से मनुष्य सब्र खो देता है और टकटकी बाँध कर उनकी ओर देखने लगता है। उनके इशारों से मनुष्य शक्तिहीन हो जाता है।

४—वहाँ के मेवों की जो ताज़े और मीठे हैं प्रशंसा नहीं हो सकती और तरह-तरह की शराब का वर्णन नहीं हो सकता।

१—खुशबू से भरा हुवा। २—कोमल। ३—माशूक ४—अपने तईं देखने वाला। ५—धीरज का इम्तहान लेने वाला। ६—टकटकी बँध जाना। ७—शक्तिहीन। ८—भिन्न प्रकार के मेवे। ९—भिन्न प्रकार की शराब।

सन् १८७१ ई० में जब कि स्वर्गीय नवाब ज़िया उद्दीन अहमद खाँ कलकत्ते गए हुए थे उस समय मिर्ज़ा ग़ालिब भी कलकत्ते गए थे। एक जलसे में एक व्यक्ति ने फैज़ी की बहुत प्रशंसा की। उस पर मिर्ज़ा ने कहा—"फैज़ी को जैसा लोग समझते हैं वैसा वह नहीं था।" इस पर बात बढ़ी। उस शख्स ने कहा—"फेज़ी जब पहली बार बादशाह अकबर के सामने गया था उसने २५० शेरों का क़सीदा उसी वक्त कहकर पढ़ा।" इस पर मिर्ज़ा ने कहा—"अब भी अल्लाह के बन्दे ऐसे मौजूद हैं कि दो चार सौ नहीं तो दो चार शेर हर मौके पर तुरन्त कह सकते हैं।"—उस शख्स ने एक चिकनी डली (सुपारी) हाथ पर रख कर मिर्ज़ा से कहा कि इस सुपारी पर कुछ कहिए। मिर्ज़ा ने तेरह शेर का क़ितः उसी समय लिखकर पढ़ दिया। वह क़ितः नीचे लिखा जाता है :—

क़ितः

१

हे जो साहब के कफ़े दस्त[१] पै यह चिकनी डली
ज़ेब[२] देता है इसे जिस क़दर अच्छा कहिए।

२

ख़ामा[३] अंगुश्त बदन्दाँ[४] कि इसे क्या लिखिए
नातक़ा[५] सर व गरेबाँ कि इसे क्या कहिए।

१—हाथ की हथेली। २—शोभा। ३—क़लम। ४—सोच में है। ५—बातचीत करने की शक्ति।

३

मोहर मकतूब[1] अजीजाँने[2] गिरामी लिखिए
हिर्ज़[3] बाजूए शिगरफाने[4] खुदारा[5] कहिए।

४

मिस्सी आलूदा[6] सर अंगुश्त[7] हसीनाँ[8] लिखिए
दाग़[9] तरफ़े जिगरे आशिक़े शैदा[10] कहिए।

१—आपकी हथेली पर यह जो चिकनी सुपारी है, उसक चाहे जितनी प्रशंसा की जाय, उचित है।

२—मेरा क़लम आश्चर्य में है कि इस चिकनी डली को मैं क्या लिखूं। वक्तृत्व शक्ति इस चिंता में है कि इसको क्या कहा जाय

३—इसको किसी प्रिय जन के पत्र की मोहर समझना चाहि अथवा किसी माशूक़ के बाज़ू का तावीज़ समझना चाहिए।

४—इसे हसीनों की मिस्सी लगी हुई उँगली का पोर सम झना चाहिए या किसी आशिक के जिगर का दाग़ समझन चाहिए।

१—फ़िक्र में होना अर्थात् सोचना। २—पत्र। ३—सम्माननीय प्रि जन। ४—तावीज़। ५—माशूक़। ६—अपने आप को सँवार वाला। ७—अँगुली का सिरा। ८—खूबसूरत। ९—धब्बा १०—चाहने वाला।

५

ख़ातिमे[१] दस्त सुलेमाँ[२] के मुशाबेह[३] लिखिए
सरे[४] पिस्ताने[५] परीज़ाद[६] से माना[७] कहिए।

६

अख़्तरे[८] सोख़्तये[९] कैस[१०] से निस्बत दीजिए।
ख़ाले[११] मिश्कीन[१२] रुखे दिलकशे लैला कहिए।

७

हिज्र[१४] उल असवदे दीवारे हरम[१५] कीजिए फ़र्ज़।
नाफ़ा[१७] आहूए[१८] बियाबांन[१९] खुतुन का कहिए।

८

क्यों इसे कुफ्त[२०] दरे गुंज[२१] मुहब्बत लिखिए।
क्यों इसे नुक्तए[२२] परकारे तमन्ना[२३] कहिए॥

५—एक उपमा उसकी यह है कि उसको सुलेमान के हाथ की अंगूठी का नग समझिए और दूसरी उपमा यह है कि उसको सुन्दरियों के उरोज की बुटनी का सिरा कहा जाय।

१—अँगूठी। २ एक पैगम्बर का नाम है जिनके कब्ज़े में जिन्न और परियां रहा करतीं थीं। ३—समान। ४—ऊपरी हिस्सा। ५—उरोज, छाती। ६—सुन्दर। ७—समान। ८—सितारा। ९—जला हुआ। १०—नाम है जो लैला का आशिक था। ११—तिल। १२—काला। १३—मुँह। १४—दिल खींचनेवाली। १५—काबे का वह काला पत्थर जिसको मुसलमान चूमते हैं। १६—अहाता जो काबे के चारों तरफ़ है। १७—नाभि। १८—हिरन। १९—खुतुन के जंगलों में। २०—ताला। २१—खजाना। २२—अनुस्वार। २३—इच्छा।

६—या इसको कैस के भाग्य के जले हुए सितारे से उपमा दीजिए या इसको वह स्याह तिल समझना चाहिए जो लैला के मुंह (गाल) पर था।

७—इसको दीवारे-हरम का पवित्र स्याह पत्थर समझना चाहिए या इसको ख़ुतन के हिरन की कस्तूरी समझना चाहिए।

८—इसको प्रेम के खजाने का ताला समझना चाहिए या आकांक्षाओं (वासनाओं) की परिधि का केन्द्र समझना चाहिए।

९

क्यों इसे गौहरे नायाब[1] तसव्वरे[2] कीजिए
क्यों इसे मर्दुमे[3] के दीदए उनका[4] कहिए।

१०

क्यों इसे तुक्मए[5] पैराहने[6] लैला कहिए
क्यों इसे नक़्शपये[7] नाक़ये सलमा[8] कहिए।

११

बन्दा परवर[9] के कफे दस्त को दिल कीजिए फ़र्ज
और इस चिकनी सुपारी को सुवदा[10] कहिए।

१—अनमोल मोती। २—खयाल। ३—आँख की पुतली का तिल। ४—एक चिड़िया का नाम है जिसका केवल नाम ही नाम है, लेकिन उसको किसी ने नहीं देखा है। ५—घुंडी। ६—पहनने का कपड़ा। ७—पैर का चिन्ह। ८—अरब की खूबसूरत औरत का नाम है। ९—बन्दे वाला यानी वह पुरुष जिसने चिकनी सुपारी मिर्ज़ा को पेश की थी १०—वह स्याह दाग़ जो दिल पर होता है।

९—इसको अनमोल मोती ख़याल करना चाहिए और क्यों न इसको उनके की आँख की पुतली का तिल माना जाय?

१०—इसको लला के कपड़ों की घुंडी समझना चाहिए, या 'सलमा' के ऊँट के पैरों का निशान समझिये।

११—श्रीमान् की हथेली को दिल समझना चाहिए और इस चिकनी सुपारी को दिल के ऊपर का स्याह धब्बा समझना चाहिए।

निम्नलिखित क़िता मिर्ज़ा ग़ालिब ने बादशाह के दरबार में इस इच्छा को लेकर पेश किया था कि इनकी तनख्वाह जो छठे महीने मिलती थी वह महीने-महीने मिला करे। मिर्ज़ा अपने इस प्रयत्न में सफल हुये (उनको महीने महीने तनख्वाह मिलने लगी)

१

ऐ शहन्शाह आस्माँ औरंग[१] * ऐ जहाँदार[२] आफ़ताब[३] आसार[४]।

२

था मैं एक बे नवाय[५] गोशानशीं[६] * था मैं एक दर्दमंद सीनाफ़िगार[७]॥

३

तुमने मुझको जो आबरू[८] बख़्शी[९] * हुई मेरी वो गरमिये बाज़ार[१०]!

१—आकाश तुम्हारा तख़्त है। २—जहान के रखने वाले अर्थात् बादशाह। ३—सूर्य। ४—समान। ५—ग़रीब। ६—एकान्त में रहने वाला। ७—जिसका दिल फटा हुआ हो। ८—सम्मान ९—दी। १०—शोहरत।

४

कि हुआ मुझसा ज़र्रये[१] नाचीज़[२] * रूशिनासे[३] सबाबतो[४] सय्यार[५]

५

गरचे अज़रूये नंग[६] बे हुनरी * हूँ ख़ुद अपनी नज़र में इतना ख़ार[७]

६

कि अगर आपको कहूँ ख़ाकी[८] * जानता हूँ कि आये ख़ाक[९] को आर[१०]

१--ए शहन्शाह ! आकाश तेरा तख्त है। ऐ जहान के रखने वाले ! तू सूर्य के समान है।

२--मैं एकान्त में रहने वाला एक दीन मनुष्य था, मेरा दिल दुखों से भरा हुआ था।

३—तुमने जो मुझको सम्मान दिया उससे मेरी संसार में ऐसी शोहरत हो गई।

४--मेरा ऐसा नाचीज़ ज़र्रा सबाबतो सैयार का जानने वाला हुआ।

५--अगरचे मैं मूर्खता के कारण अपनी दृष्टि में खुद इतना तुच्छ हूँ।

६--कि यदि मैं अपने को ख़ाक से बना हुआ कहूँ, तो मैं जानता हूँ कि ख़ाक भी लजा जाए।

१—टुकड़ा। २—तुच्छ। ३—पहिचानने वाला। ४—वह सितारे जो ठहरे रहते हैं। ५—वह सितारे जो चलते रहते हैं। ६—शर्म। ७--ज़लील। ८—ख़ाक से बना हुआ। ९—धूल। १०--शर्म।

७

शाद हूँ लेकिन अपने जीमे के हूँ * बादशाह का ग़ुलाम कार गुज़ार[१] ।

८

ख़ानाज़ाद[२] और मुरीद[३] और मद्दाह[४] * था हमेशा से यह अरीज़ा[५] निगार

(बादशाह के यहाँ नौकरी मिलने से पहिले मिर्ज़ा क़िले में आते जाते रहते थे इस समय वह बादशाह की प्रशंसा के क़सीदे बादशाह की सेवा में पेश करते थे और इनाम पाते रहते थे)

९

बारे नौकर भी होगया सदशुक्र[६] * निस्बतें होगईं मुशख़्ख़स[७] चार ।

१०

न कहूँ आपसे तो किससे कहूँ * मुद्दाआए[८] ज़रूरी उल[९] इज़हार ॥

११

पीर[१०] मुर्शिद अगरचे मुझको नहीं * जौक़[११] आराइश[१२] सरो दस्तार[१३]

१२

क्यों न दर्कार हो मुझे पोशिश[१४] * जिस्म रखता हूँ है अगर्चे निज़ार[१५]

७—मैं अपने दिल में ख़ुश हूँ कि मैं बादशाह का काम करने वाला ग़ुलाम हूँ।

८—यह प्रार्थना करनेवाला हमेशा से आपका ख़ानाज़ाद (ग़ुलाम) शिष्य और प्रशंसा करने वाला था।

१—काम करने वाला। २—जिसका घर में पालन-पोषण किया जाय। ३—शिष्य। ४—प्रशंसा करने वाला। ५—प्रार्थना पत्र लिखने वाला। ६—सौ। ७—निर्णय होना। ८—मतलब। ९—जिनका वर्णन करना आवश्यक है। १०—ऐसे सम्मानित शब्द किसी बड़े मनुष्य के लिये प्रयोग किये जाते हैं। ११—शौक़ १२—सजावट। १३—पगड़ी। १४—पहिनने का कपड़ा। १५—कमज़ोर।

९—ईश्वर की कृपा से अब उसको नौकरी भी मिल गई और हमारा चार प्रकार से बादशाह के साथ सम्बन्ध हो गया है। (चारों चीज़ों का जिक्र ऊपर की शेर में आ गया है)

१०—जो ज़रूरी बातें मुझको कहना है आपसे न कहूँ तो किससे कहूँ।

११—पीर मुर्शिद, मुझको सर के सजावट के लिए पगड़ी इत्यादि का शौक नहीं।

१२—यद्यपि मेरा शरीर कमज़ोर है फिर भी मुझे कपड़ों की ज़रूरत है।

१३

कुछ ख़रीदा नहीं है अब की साल * कुछ बनाया नहीं है अबकी बार

१४

रात को आग और दिन को धूप * भाड़ में जाएँ ऐसे लैलो निहार[1]

१५

आग तापे कहाँ तलक इन्साँ * धूप खाये कहाँ तलक जंदा

१६

धूपकी तापिश आग की गरमी * वक़्क़ना रब्बना[2] अजाबुलना

१७

मेरी तनख़्वाह जो मुक़र्रर है * उसके मिलने का है अजब इंतज़ार

१—रातदिन। २—ये अरबी शब्द हैं ; इनका अर्थ है हमारे पा वाले अर्थात् ऐ ईश्वर! हमको आग की गरमी और दूसरी कठिनाइयें बचा। ३—तरीक़ा।

१८

रस्म है मुरदे को छमाही एक * ख़ल्क का है इसी चलन प मदार[1] ।

१९

मुझको देखो तो हूं वक़ैदे हयात्[2] * और छमाही साल में दो बार ।

१३—इस साल न कुछ खरीदा है और न कुछ बनाया है ।

१४-१५—अर्थ बहुत ही स्पष्ट है ।

१६—धूप की जलन और उसकी गरमी से, हे ईश्वर! हमको बचा ।

१७-१८ का अर्थ स्पष्ट है ।

१९—मुझको देखो यद्यपि मैं ज़िन्दा हूँ लेकिन मेरी मुरदों की तरह साल में दो बार छमाही होती है ।

२०

बस कि लेता हूं हर महीने क़र्ज़ * और रहती है सूद की तकरार

२१

मेरी तनख्वाह में तिहाई का * हो गया है शरीक साहूकार ।

२२

आज मुझसा नहीं ज़माने में*शायरे नग्जगोए[3] ख़ुश गुफ्तार[4],

२३

रज़्म[5] की दास्तां अगर सुनिये*है ज़बां मेरी तेग़[6] जौहरदार[7]

२४

बज़्म[8] का इल्तिज़ाम[9] गर कीजिये*है कलम मेरा अब्र[10] गौहर बार[11]

१—दारोमदार । २—ज़िन्दा । ३—अच्छा कहने वाला । ४—अच्छा कहने वाला । (दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है ।) ५—लड़ाई । ६—तलवार । ७—जौहर रखने वाली । ८—महफ़िल । ९—बखान करना । १०—बादल । ११—मोती बरसाने वाला ।

२५

जुल्म है गर न दो सुख़न[1] की दाद[2] * क़हर[3] है गर करो न मुझकोप्यार

२०-२१ का अर्थ स्पष्ट है।

२२—पृथ्वी पर आज मुझ-ऐसा अच्छा और सुन्दर कविता करने वाला नहीं है।

२३—अगर मैं लड़ाई का वर्णन करूँ मेरी ज़बान तलवार का सा जौहर दिखाती है।

२४—यदि मैं महफ़िल का बखान करने बैठूँ तो मेरे कलम से मोतियों की वर्षा होने लगे।

२५—मेरी कविता की यदि तुम प्रशंसा न करो तो बड़े ज़ुल्म की बात है और अगर तुम मुझको प्यार न करो तो क़हर है।

२६

आपका बन्दा और फिरूँ नंगा*आपका नौकर और खाऊँ उधार,

२७

मेरी तनख्वाह कीजे माह ब माह[4]*ता न हो मुझको जिंदगी दुश्वार

२८

ख़त्म करता हूँ अब दुवा पे कलाम[5]*शायरी से नहीं मुझे सरोकार[6]

२९

तुम सलामत रहो हज़ार बरस * हर बरस के दिन हों पचास हज़ार

इन चारों शेरों का अर्थ स्पष्ट है।

१—बात। यहां पर कविता से मुराद है। २—प्रशंसा। ३—ग़ज़ब। ४—महीने-महीने। ५—कठिन। ६—कविता। ७—सम्बन्ध।

कितः (जिसमें मिर्ज़ा ने नौजवानों को उपदेश दिया है)

१

ऐ ताज़ा वारदाने[१] बिसाते[२] हवाए दिल[३]
ज़िनहार[४] अगर तुम्हें हवसे[५] नाए[६] व नोश[७] है

२

देखो मुझे जो दीदए इबरत[८] निगाह हो
मेरी सुनो जो गोशे[९] नसीहत नयोश[१०] है

३

साक़ी बजल्वा[११] दुश्मने ईमाने आगही[१२]
मुतरिब[१३] ब नग़मा[१४] रहज़ने[१५] तमकीनो[१६] होश है

४

या शब को देखते थे कि हर गोशए[१७] निसात[१८]
दामाने[१९] बाग़बान व कफ़े[२०] गुल फ़रोश[२१] है

१—ऐ नौजवानों ! तुम दिल की बुरी ख़्वाहिशों में फँसे हुए
। ख़बरदार ! अगर तुमको सुरीली आवाज़ों का सुनना और
राब का पीना पसन्द है तोः —

१—नए आए हुए अर्थात् नौजवान। २—बिछौना। ३—दिल की
छाएँ। ४—हरगिज़ यहाँ पर ख़बरदार। ५ ख़्वाहिश। ६—बाँसरी
आवाज़। ७—शराब पीना। ८—शिक्षा। ९—कान। १०—सुन
१—बनाव चुनाव करके लोगों को दिखलाना। १२—आगाह होना
र्थात् अच्छी बातों का जानना। १३—गाने वाला। १४—सुरीली
ावाज़। १५—लुटेरा। १६—इज्ज़त। १७—कोना। १८—ख़ुशी।
९—दामन। २०—हाथ। २१—फूल बेचने वाला।

२—मुझको देखो और मेरा हाल देखकर शिक्षा ग्रहण व
और सुरीली आवाज़ की जगह मेरे उपदेश हृदयरूपी कानों से सुनें

३—साक़ी बन ठन के तुम्हारे ईमान और ज्ञान का
घटित हुआ है और गवैया सुरीली आवाज़ से तुम्हारे सम्म
और होश-हवास को लूट ले जाने वाला है।

४—या तो रात को नज़र के सामने वह तमाशे हो रहे
कि फ़र्श का एक एक कोना फूलों की सजावट से बाग़बान
दामन और फूल बेचनेवाले का हाथ बना हुआ था

५

लुत्फ़े ख़राम[१] साक़ीवो ज़ौके[२] सदाए[३] चंग[४]
यह जन्नते[५] निगाह वह फिरदौस[६] गोश[७] है

६

या सुब्हदम जो देखिए आकर वह बज़्म में
नए[८] वो सरोद[९] ओ सोज़ न जोशोख़रोश है

७

दाग़े फ़िराक़[१०] सोहबते शब की जली हुई
यक शमअ[११] रह गई है सो वह भी ख़ामोश[१२] है

८

आते हैं ग़ैब[१३] से यह मज़ामी ख़याल में
ग़ालिब सरीर[१४] ख़ामा[१५] नवाये[१६] सरोस[१७] है

१—पाँव की दिल लुभाने वाली आवाज़। २—शौक़। ३—आवाज़
४—एक बाजा है। ५—देखने में स्वर्ग। ६—स्वर्ग। ७—कान
८—न। ९—एक बाजा है। १०—विरह। ११—मोमबत्ती
१२—चुप। १३—आकाश। १४—क़लम की आवाज़। अर्थ १५-
क़लम। १३—आवाज़। १७—फरिश्ते की आवाज।

५—साक़ी की मस्ताना चाल और चंग की आवाज़ से एक तरफ़ तो आँखों के लिए स्वर्ग का सामान एकत्रित हो रहा था, और दूसरी तरफ कानों के वास्ते बैकुंठ की सुरीली आवाज़ का आनन्द प्राप्त हो रहा था।

६—सुबह के समय जो आकर देखा तो महफ़िल में अपूर्व उदासी छाई हुई थी। न तो वह बाजों की आवाज़ें थीं न महफ़िल के लोगों में प्रेम भाव था और न वह उत्साह से भरे हुए भाव थे।

७—इन सब दिल लुभाने वाले दृश्यों के बदले अब यह दिखाई आया कि उस रात के विरह में जली हुई मोमबत्ती बाक़ी रह गई है और वह भी शोक के कारण चुप है!

८—ऐ ग़ालिब! ऐसे ऊँचे भावों की बातें गैब से तेरे ख़याल में आती हैं इसलिये तेरे क़लम की आवाज़ को देवदूत की आवाज़ समझना चाहिए।

जब बादशाह बहादुर शाह के यहाँ कोई अच्छी चीज़ पकती थी तो वह ख़ास ख़ास आदमियों के पास बतौर तोहफ़े के भेजी जाती थी। बेसनी रोटी के शुक्रिये में मिर्ज़ा ग़ालिब ने यह नीचे लिखा हुआ क़ितः लिखकर हुज़ूर में भेज था:—

१

न पूछ इसकी हक़ीकत हज़ूरवाला ने
मुझे जो भेजी है बेसन की रौग़नी[1] रोटी

१—घी में चुपड़ी हुई।

२

न खाते गेहूँ निकलते न खुल्द[1] से बाहर
जो खाते हज़रते आदम[2] यह बेसनी रोटी

[जब मिर्ज़ा ऊपर वाला क़िता लिख रहे थे उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा कि बेसनी रोटी कौन ऐसी नायाब चोज़ है कि बादशाह ने आपको भेजी। मिर्ज़ा ने कहा, अरे अहमक़! चना वह चोज़ है कि इसने एक दफ़ा ख़ुदा से फरियाद की थी कि दुनियां में मुझ पर बड़े-बड़े अत्याचार होते हैं। मुझे दलते हैं, पीसते हैं, पकाते हैं! और मुझसे सैकड़ों चोज़ें खाने की बनाकर खाते हैं। जैसा मुझ पर ज़ुल्म होता है ऐसा किसी पर नहीं होता। ख़ुदा की तरफ़ से हुक्म हुआ कि ऐ चने! तेरी ख़ैर इसी में है कि हमारे सामने से चला जा वरना हमारा भी यही जी चाहता है कि तुझको खा जाएँ।]

अर्थ साफ़ है।

रुबाइयाँ

रुक्के का जवाब क्यों न भेजा तुमने
साक़िब[3] हरकत[4] की है बेजा[5] तुमने
हाजी कल्लू को देके वे बजह जवाब
ग़ालिब का पका दिया कलेजा तुमने

इस रुबाई का अर्थ स्पष्ट है।

१—बहिश्त (स्वर्ग)। २—एक पैग़म्बर का नाम है। मुसलमानों का मज़हबी ख़याल है कि ख़ुदा की तरफ़ से हज़रत आदम को गेहूँ खाना मना किया गया था लेकिन उन्होंने ख़ुदा का हुक्म न माना और उसे खाया। इसके दंड में वह बहिश्त से निकाले गए और इस दुनियाँ में भेज दिए गये। ३—एक कवि का उपनाम है। ४—काम। ५—अनुचित।

रुबाई

सामान[1] खुर[2]-ओ ख़्वाब[3] कहाँ से लाऊँ
आराम के असबाब कहाँ से लाऊँ
रोज़ा मेरा ईमान है ग़ालिब लेकिन
खसख़ाना[4] वा बरफ़ाब[5] कहाँ से लाऊँ

इस रुबाई का भी अर्थ स्पष्ट है।

रुबाई

इन सेम के बीजों को कोई क्या जाने
भेजे हैं जो अरमुग़ाँ[6] शहे बाला ने
गिन कर देवेंगे हम दुवाएँ सौ बार
फीरोज़ह[7] की तसवी[8] के हैं ये दाने

बादशाह ने मिर्ज़ा को सेम के बीज पकवा कर भेजे थे। यह रुबाई उसी की प्रशंसा में है। इस रुबाई के दूसरे शेर में कवि ने यह बात पैदा की है कि सेम के बीज को फीरोज़ह के दाने के समान दिखला कर उसकी पूजा करने वाली माला बनाई है और चूंकि इन मालाओं में सौ दाने होते हैं तो उसने कहा है कि हम गिनकर सौ बार दुवाएँ देंगे।

रुबाई

दुःख जी को पसन्द हो गया है ग़ालिब
दिल रुक के बन्द हो गया है ग़ालिब

१—आवश्यक वस्तुएँ। २—खाना। ३—सोना। ४—ख़स की टट्टी लगा हुवा कमरा। ५—बरफ से ठंढी की हुई चीज़ें। ६—अनोखी चीज़ ७—कीमती हरा पत्थर होता है। ८—माला।

वल्लाह[1] कि शब[2] को नींद आती ही नहीं
सोना सौगद हो गया है ग़ालिब

इस रुबाई का भी अर्थ साफ़ है।

रुबाई

मुश्किल है ज़िबस[3] कलाम मेरा ऐ दिल
सुन सुन के उसे सखुन वराने[4] कामिल
आसाँ कहने की करते हैं फरमाइश[5]
गोयम मुश्किल[6] वगरना गोयम मुश्किल

मेरी कविता, ऐ दिल! बहुत कठिन है उसको सुनकर महा कवि मुझसे आसान कहने की प्रार्थना करते हैं। अगर मैं कहता हूँ तो मेरे लिए कठिन और नहीं कहता हूँ तो भी कठिनाई है।

रुबाई

आतिश बाजी है जैसे शुगले[7] इतफ़ाल[8]
है सोज[9] जिगर का भी इसी तौर का हाल
था मूजिदे[10] इश्क[11] भी क़यामत[12] कोई
लड़कों के लिये गया है क्या खेल निकाल

जिस तरह आतिशबाज़ी बच्चों का खेल है उसी प्रकार प्रेमिकाएँ अपने प्रेमी के दिल को जलाना एक खेल समझती हैं। प्रेम का आविष्कारक क़यामत का पुतला था जो इन माशूकों के लिये खेल निकाल गया है।

१—क़सम खुदा की। २—रात। ३—बहुत। ४—योग्य कवि। ५—इच्छा प्रगट करना। ६—यदि कहता हूँ तो कठिन है और नहीं कहता हूँ तो कठिनाई। ७—दिल बहलाव (खेल)। ८—लड़के। ९—दिल का जलाना। १०—किसी नयी बात का पैदा करने वाला। ११—गहरा प्रेम। १२—उलट-पुलट करने वाला।

हम गरचे बने सलाम करने वाले,
करते हैं दिरंग[1] काम करने वाले।
कहते हैं—कहें खुदा से अल्ला अल्ला,
वह आप हैं सुबह शाम करने वाले॥

हम दरबार के बड़े लोगों को झुक कर सलाम करते हैं किन्तु वह हमारे काम में टाल मटोल किया करते हैं। हम अपने दिल में परेशान होकर कहते हैं कि आओ खुदा ही से कहें। फिर यह खयाल आता है कि अल्ला अल्ला करो वह तो आपही सुबह-शाम करने वाले हैं (इस अंतिम वाक्य के दो अर्थ हैं नं० १ सुबह शाम के करने वाले खुदा हैं, नं० २ कवि यहाँ खुदा पर यह इल्ज़ाम लगाता है कि वह भी सुबह शाम करता रहता है अर्थात् वह भी हमारी बातों को टाल दिया करता है।)

१—टालमटोल करने वाला।

क़सीदे

१

नसरत-उल-मुल्क बहादुर की प्रशंसा में :—

नसरत-उल मुल्क बहादुर मुझे बतला के मुझे।
तुझसे जो इतनी इरादत[१] है तो किस बात से है।

२

गरचे तू वह है कि हंगामा[२] अगर गर्म[३] करें,
रौनक़े बज़्म[४] मह-ओ महर[५] तेरी जात से है।

३

और मैं वह हूँ अगर जी में कभी ग़ौर करूँ,
ग़ैर क्या खुद मुझे नफ़रत मेरी औक़ात[६] से है।

४

हाथ में तेरे रहे तौसने[७] दौलत की एना[८],
यह दुआ शाम व सहर[९] कीजिये हाजात[१०] से है।

१—प्रशंसा दिल का लगाव। २—दरबार। ३—सजायें ४—जलसे की रौनक़। ५—चाँद सूरज। ६—बिगड़ी दशा। ७—घोड़ा ८—बाग़ (लगाम)। ९—शाम सबेरा। १०—ईश्वर।

५

तू सिकन्दर है मेरा फख़[1] है मिलना तेरा,
गो शरफ़[2] ख़िज़्र[3] की भी मुझको मुलाक़ातसे है।

१—ऐ नसरत-उल-मुल्क बहादुर तू मुझे बता कि मेरा जो दिली लगाव तुझसे है तो किस बात से है ? मैं हैरान हूँ कि किस कारण मैं तुझको इतना मानता हूँ (इनाम और अहसान के कारण जो आकर्षण हुआ करता है उसमें आत्मिक सम्बन्ध नहीं होता किन्तु मेरा तेरा आत्मिक सम्बन्ध है।)

२—यद्यपि तू वह है कि अगर तू अपना दरबार सजाये तो चाँद और सूरज के जलसे को तुझसे शोभा प्राप्त हो।

३—और मैं वह हूँ कि यदि मैं विचार करूँ तो दूसरों का ज़िक्र ही क्या मुझे ख़ुद अपनी ज़ात से नफ़रत है।

४—मैं ईश्वर से सुबह-शाम यह प्राथना करता हूँ कि धन-रूपी घोड़े की लगाम हमेशा तेरे हाथ में रहे।

५—तू मेरा सिकन्दर है, तेरे मिलने से मेरी इज्जत बढ़ती है यद्यपि ख़िज़र से भी जान पहिचान होने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है। (कवि इस शेर में सिकदर और ख़िज़्र की कहानी की ओर ध्यान आकर्षित करता है)

क़िताः

६

है चहार शम्बा[4] अख़िरी माहे सफ़र[5] चलो,
रख दें चमन में भर के मये मुश्क बू[6] की नॉद।

१—गर्व। २—इज़्ज़त ३—एक पैग़म्बर का नाम है। ४—बुधवार। ५—क़मरी महीनों में दूसरा महीना है। ६—मुश्कऐसी ख़ुशबू रखने-वाली अर्थात ख़ुशबूदार।

७

जो आये जाम भर के पिये और हो के मस्त,
सब्जे[1] को रौंदता फिरे फूलों को जाए फाँद।

६—सफर के महीने का आज आखिरी बुध है। कवि उस मेले में चलने को कहता है (वहाँ इस रोज़ कोई मेला हुआ करता था) आओ हम भी चमन में खुशबूदार शराब की नाँद भर कर रख दें।

७—ताकि जो व्यक्ति आये प्याला भर के पी ले और मस्त हो के हरियाली को रौंदे और फूलों पर से कूद जाये।

८

ग़ालिब यह क्या बयाँ है बजुज़[2] मदह[3] बादशाह
भाती नहीं है अब मुझे कोई नविश्त खाँद[4]।

९

बटते हैं सोने रूपे के छल्ले हुजूर में
है जिनके आगे सीम व ज़रे[5] महरो माह[6] माँद[7]।

१०

यूं समझिये कि बीच से ख़ाली किए हुये
लाखों ही आफ़ताब[8] हैं और बेशुमार[9] चाँद।

८—ऐ ग़ालिब! इस क़िते को लिखकर तू फिजूल बातें क्या

१—हरियाली। २—सिवाय। ३—प्रशंसा। ४—लिखना पढ़ना। ५—चाँदी-सोना। ६—सूरज चाँद। ७—धुंधला। ८—सूरज। ९—अनगिनती।

नोट—प्रायः कवि अपने कसीदों में क़िते और ग़ज़ले आदि भी सम्मिलित कर दिया करते हैं।

कह रहा है ? मुझको बादशाह की प्रशंसा के सिवाय कोई बात पसन्द नहीं आती।

९—बादशाह के दरबार में सोने चाँदी के छल्ले बाँटे जाते हैं और वे छल्ले ऐसी चमक-दमक के हैं कि जिनके सामने सूरज और चाँद का प्रकाश भी धुंधला पड़ जाता है (उर्दू के कवि धूप का सुनहला रंग और चाँदनी का सफ़ेद रंग मानते हुए उसको सोने चाँदी की उपमा देते हैं)

१०—इन सोने चाँदी के छल्लों को यह समझना चाहिए कि अगर बीच से खाली न होते तो मानो वे लाखों सूरज और अनगिनती चाँद के समान होते।

क़सीदा (बहादुरशाह की प्रशंसा में)

१

सुबह दम दरवाज़ये ख़ावर[१] खुला
मेहरे[२] आलमताब[३] का मंज़र[४] खुला

२

ख़ुसरो अंजुम[५] के आया सर्फ़[६] में
शब[७] को था गंजीनये-गौहर[८] खुला

३

है कवाकब[९] कुछ नज़र आते हैं कुछ
देते हैं धोका ये बाज़ीगर खुला

४

सितः[१०] गरद[११] पर पड़ा था रात को
मोतियों का हर तरफ ज़ेवर खुला

५

सुबह आया जानिने मशरिक[१२] नज़र
एक निगारे[१३] आतशींरुख़[१४] सर खुला

१—सुबह हो गई पूरब का दरवाजा खुल गया अर्थात् जिस खिड़की से संसार को प्रकाशित करने वाला सूर्य नजर आता है वह खुल गया।

१—पूरब। २—सूरज। ३—दुनियाँ को रोशनी देने वाला। ४—खिड़की। ५—तारों का बादशाह अर्थात् सूरज। ६—ख़र्च। ७—रात। ८—जवाहिरात के खजाने। ९—सितारे। १०—फर्श। ११—आकाश १२—पूरब। १३—प्रेमिका। १४—चमकता हुआ चेहरा।

२—सूरज की रोशनी में सितारे छिप गए गोया चमकते हुए सूरज ने जवाहिरात का ख़जाना खर्च कर दिया।

३—असल में सितारे कुछ और चीज़े हैं और नज़र कुछ और ही आते हैं गोया ये इस प्रकार के बाज़ीगर हैं जो खुला हुआ धोखा देते हैं।

४—आकाश के फर्श पर रात को सितारे न थे बल्कि मोतियों का ज़ेवर हर तरफ खुला हुआ पड़ा था। (यही धोखा था)

५—प्रभात के समय तारे तो ग़ायब हो गये उनकी जगह एक माशूक जिसका अग्नि के समान धधकता हुआ चेहरा था, पूर्व की ओर सर नंगा दिखाई पड़ा।

६

लाके साक़ी ने सुबूही[1] के लिये
रख दिया है एक जामे ज़र[2] खुला

७

शाह रौशन दिल बहादुर शह के हैं
राज़े हस्ती[3] उस पै सरता सर[4] खुला

८

पहिले दारा का निकल आया है नाम
इसके सरहंगों[5] का जब दफ़्तर खुला

९

रुसिनासों[6] की जहाँ फेहरिस्त है
वाँ लिखा है चेहरये क़ैसर[7] खुला

१—सुबह के वक्त जो शराब पी जाती है। २—सोने का प्याला ३—दुनियाँ की छुपी हुई बातें। ४—प्रत्यक्ष। ५—सेनापतियों। ६—मित्रों की। ७—रोम के बादशाह की उपाधि है।

६—साक़ी ने सुबह की शराब पीने के लिये एक सोने का प्याला खुला रख दिया है। (यहाँ कवि ने सूर्य को सुबह की शराब पीने के लिये सोने का प्याला दिखाया है।)

७--मेरे बादशाह बहादुरशाह का दिल इतना पवित्र है कि उस पर दुनियाँ की छिपी हुई बातें साफ़ तौर से खुल जाती हैं।

८--जब उसकी (बहादुरशाह बादशाह की) फौज़ के सर्दारों का रजिस्टर खुला तो सबसे पहिले दारा का नाम उसमें लिखा था।

९--उसके मित्रों की फेहरिस्त में साफ़ तौर से क़ैसर का चेहरा अर्थात् (हुलिया) दिया हुआ है।

क़िता

१०

तौसने[1] शह में है वह खूबी के जब ❀ थान से वह ग़ैरते सरसर[2] खुला,

११

नक़्शपा[3] की सूरतें वह दिलफरेब[4] ❀ तू कहे बुतखानये आज़र[5] खुला

१२

लाख उक़दे[6] दिल में थे लेकिन हर एक ❀ मेरे हद्दे[7] वसा से बाहर खुला

१३

था दिले वाबस्ता[8] कुफ्ले[9] बे कलीद[10] ❀ किसने खोला, कब खुला, क्यों कर खुला

१४

बागबानी[11] की दिख़ाऊँगा बहार ❀ मुझ पर अगर शाहे सुख़ान[12] गुस्तर खुला

१—घोड़ा। २—आँधी को शरमाने वाला। ३—पैर के निशान ४—दिल को लुभाने वाली ५—हजरत इब्राहीम के बाप का नाम है जो एक बुतख़ाना के पुजारी थे। ६—कठिन बातें। ७—योग्यता। ८—बंधा हुआ। ९—ताला। १०—कुंजी। ११—अर्थों को फुलवारी। १२—यदि लायक बादशाह ने मेरे ऊपर कृपादृष्टि की।

१०,११—बादशाह के घोड़े में वह गुण है कि जब वह हवा को शरमानेवाला (यानी हवा से तेज़) अपने थान से खुलता है तो उसके चलने से पैर के निशान ऐसे विचित्र पड़ते हैं कि आज़र के बुतख़ाने का दृश्य नज़र आता है।

१२—मेरी लाखों कठिनाइयां जिनका हल करना मेरी शक्ति के बाहर था वह सब आसानी से दूर हो गईं (तेरी कृपादृष्टि से)

१३—मेरा दिल एक ऐसा ताला था कि जिसमें कोई कुँजी ही नहीं लगती थी। मुझको आश्चर्य है कि इस ताले को किसने खोला और यह कब खुला और किस तरह खुल गया (यहां कवि का भाव यह है कि उस ताले को बादशाह ने खोला।)

१४—यदि बहादुरशाह ने मुझसे दिल खोलकर बातें की तो मैं उसको कविता के बाग़ की बहार दिखाऊँगा।

ग़ज़ल

१

कुंज[१] में बैठा रहूँ यूँ पर खुला ❀ काश के होता कफ़स का[२] का दर खुला

२

हम पुकारें और खुले यूँ कौन जाए ❀ यार का दरवाजा पाएँ गर खुला

३

वाक़ई दिलपर भला लगता था दाग़ ❀ ज़ख्म लेकिन दागसे बेहतर खुला[३]

४

सोज़[४] दिलका क्या करे बाराने-अश्क[५] ❀ आग भड़की में अगर दम भर खुला

१—एकान्त। २—पिंजड़ा। ३—ज़्यादा सुंदर मालूम हुआ। ४—जलन। ५—आँसू की वर्षा होना।

५

नामा के साथ आ गया पैग़ामे-मर्ग,[1] रह गया ख़त मेरी छाती पर खुला

६

देखो ग़ालिब से अगर उलझा[2] कोई, है वली[3] पोशीदा[4] और काफ़िर[5] खुला

१—अफसोस है कि पिंजड़े के एक कोने में मैं इस प्रकार पर खुला बैठा रहूँ काश पिंजड़े की खिड़की खुली हुई होती (और मैं उड़ जाता)।

२—हमारा मान इस बात में है कि हम यार के दरवाज़े पर जाकर आवाज़ दें और हमारे वास्ते दरवाज़ा खोला जाय। दरवाज़ा खुला होने पर तो हर एक व्यक्ति जा सकता है; हम इस तरह जाना पसंद नहीं करते।

३—यह सच है कि दिल पर दाग़ बहुत अच्छा मालूम पड़ता था लेकिन ज़ख्म, दाग़ से ज्यादा मनोहर दिखाई पड़ा (यहाँ पर खुले का शब्द ज़ख्म के लिये बहुत अच्छा लाया गया है)

४—आसुओं की झड़ी दिल की आग को जलन को क्योंकर बुझा सकती है जब यह हालत हो कि अगर मेंह बरसना कुछ देर के लिये बन्द हो जाये, आग फिर बलवान होजाती है (इधर आँसू बन्द हुये और उधर दिल में फिर जलन पैदा हो गई)

५—पत्र के साथ-साथ मृत्यु का संदेश आगया है और उसका पत्र मेरी छाती पर खुले का खुला रह गया। [बहुत खुशी की बात सुनकर अक्सर मृत्यु हो जाती है। यही बात कवि ने यहाँ पर दिखलाई है।]

६—अगर ग़ालिब से किसी ने बिगाड़ किया तो अच्छा न

१—मृत्यु का बुलावा। २—झगड़ा करना। ३—पवित्र मनुष्य। ४—छुपा हुआ। ५—ला-मज़हब (नास्तिक)

होगा वह ज़ाहिरा तो काफ़िर है लेकिन असल में ईश्वर का भक्त है।

[क़सीदे में क़ितः वा ग़ज़ल के बाद कवि फिर जिसकी स्तुति में क़सीदा लिख रहा हो उसकी प्रशंसा करना प्रारंभ कर देता है।]

१५

फिर हुआ मद्हत्[१] तराज़ी का खयाल,
फिर महो[२] ख़ुरशैद[३] का दफ्तर खुला

१६

महर[४] काँपा चर्ख़[५] चक्कर खा गया,
बादशाह का रायते[६] लश्कर खुला

१७

शाह के आगे धरा है आइना,
अब मआले[७] सैये[८] अस्कन्दर[९] खुला

१८

तुम करो साहबक़िरानी[१०] जब तलक
है तिलस्मे[११] रोज़ शब[१२] का दर खुला

१५—ग़ज़ल लिखने के बाद फिर मुझको बादशाह की प्रशंसा का विचार पैदा हुआ और फिर चाँद और सूरज का दफ्तर खुल गया।

१६—जब बादशाह की सेना का झंडा खुला चन्द्रमा भय से काँपने लगा और आकाश को चक्कर आ गया।

१—बादशाह की प्रशंसा करने का विचार। २—चाँद। ३—सूर्य ४—चाँद। ५—आकाश। ६—झंडा। ७—परिणाम। ८—प्रयत्न ९—नाम है (सिकन्दर का जिसने आईना बनाना प्रारम्भ किया था) १०—विजयी और भाग्यशाली बादशाह (यह उपाधि तैमूर और शाहजहाँ की है) ११—जादू। १२—दिन रात।

१७—बादशाह के सामने आइना रखा हुआ है। अब सिकन्दर के प्रयत्न का परिणाम मालूम हुआ अर्थात् उसने इसी इच्छा से आईना बनाया था कि वह आपके सामने रखा जाय।

१८—ईश्वर करे तुम उस समय तक बिजयी और भाग्यशाली रहते हुए राज्य करो जब तक दिन रात होते रहें अर्थात् सदैव राज्य करो।

—०—

°नवाब ज़ीनत महल की बादशाह (बहादुर शाह बादशाह देहली) बहुत ख़ातिर करते थे। मिर्ज़ा जवाँ बख्त उनके बेटे थे। जब इनके व्याह का अवसर आया तो बड़ी धूम-धाम से तैयारियाँ हुई। मिर्ज़ा ग़ालिब ने सेहरा लिखकर बादशाह को पेश किया। मक़ते को सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ कि हमने जो शेख़ इब्राहीम 'ज़ौक़' को अपना उस्ताद और मुल्क-उल शोरा[1] बनाया यह नासमझी की बात बल्कि हठधर्मी है। जब शेख़ इब्राहीम ज़ौक हर रोज के अनुसार बादशाह के हज़ूर में गये तो बादशाह ने मिर्ज़ा ग़ालिब का लिखा हुआ सेहरा उनको दिया और कहा उस्ताद इसे देखिये। उन्होंने पढ़ा और अपने स्वभाव के अनुसार कहा "पीर[2] मुर्शिद दुरुस्त[3]"। बादशाह ने कहा कि उस्ताद तुम भी एक सेहरा अभी लिख दो और ज़रा मक़ते का भी ख़याल रखना। ज़ौक़ वहीं बैठ गए और सेहरा लिखा। उसकी शहर भर में धूम मच गई। मिर्ज़ा इस घटना से बहुत परेशान हुए। उन्होंने ख़याल किया कि मैंने बादशाह को खुश करने के लिये यह सेहरा लिखा था किन्तु परिणाम उल्टा निकला। इस विचार से उन्होंने निम्न क़ितः बादशाह से उसकी क्षमा चाहने को लिखा।

---

० - कहीं २ नवाब बेग़मों का लक़ब (उपाधि) हुआ करता था।
१—उच्च उपाधि है। २—यह शब्द बादशाह के लिये ज़ौक़ ने प्रयोग किया है। ३—ठीक है।

मिर्ज़ा ग़ालिब का सेहरा

१

खुश हो ऐ बख़्त[1] कि है आज तेरे सर सेहरा
बांध शहज़ादः जवाँबख़्त के सर पर सेहरा।

२

क्या ही इस चाँद से मुखड़े पै भला लगता है
है तेरे हुस्ने दिल अफ़रोज़ का ज़ेवर सेहरा

३

नाव भर कर ही पिरोये गये होंगे मोती
वरना क्यों लाये हैं किश्ती[2] में लगा कर सेहरा।

४

सात दरिया के फ़राहम[3] किये होंगे मोती
तब बना होगा इस अन्दाज़ का गज़ भर सेहरा।

५

जी में इतरायें न मोती कि हमीं है यक चीज़
चाहिये फूलों का भी एक मुक़र्रर[4] सेहरा।

६

हम सख़ुन-फ़ैहम[5] हैं ग़ालिब के तरफ़दार नहीं
देखें इस सेहरे से कह दे कोई बढ़ कर सेहरा।

१ से लेकर छठे शेर तक का अर्थ स्पष्ट हैं।

१—भाग्य २—नाव किश्ती का शब्द दो अर्थ रखता है एक तो नाव दूसरा तश्तरी। ३—जमा करना। ४—दूसरा। ५—बात का समझने वाला।

शेख़ मुहम्मद इब्राहीम 'ज़ौक' का सेहरा

१

ऐ जवाँबख़्त मुबारक तुझे सर पर सेहरा
आज है यम्नों[१] सआदत[२] का तेरे सर सेहरा।

२

ता बने[३] और बनीं[४] में रहे इख़लास[५] बहम[६]
गूँधिये सूरये[७] इख़लास[८] को पढ़कर सेहरा।

३

धूम है गुलशने-आफाक़[९] में इस सेहरे की
गाये मुरग़ाने[१०] नवासंज[११] न क्यों कर सेहरा।

१—ऐ शाहजादे जवाँबख़्त तेरे सर पर यह सेहरा मुबारक हो आज बरक़त और नेक बख्ती का सेहरा तेरे सर है।

२—सूरये अख़लास को पढ़कर 'सेहरा' गूँधना चाहिये ताकि दूल्हा व दूल्हन में प्रेम बना रहे।

३—संसार में इस सेहरे की धूम मची हुई है। अच्छे गाने वाले पक्षी क्यों इसकी प्रशंसा न गायें ?

४

फिरती ख़ुशबू से है इतराई हुई बादे बहार[१२]
अल्ला अल्लाह रे फूलों का मुअत्तर[१३] सेहरा।

१—भाग्यशाली। २—सम्मान करना (नेक होना)। ३—दूल्हा। ४—दूल्हन। ५—प्रेम। ६—आपस में। ७—कुरान मजीद का एक भाग ०—प्रेम। ८—दुनियाँ। ९—पक्षी। १० अच्छे गाने वाले। ११—मौसम बहार की हवा। १२—सुगंध से भरी हुई।

५

रूनुमाई[1] में तुझे दे महो-खुरशैद[2] फलक[3]
खोल दे मुँह को जो तू मुँह से उठाकर सेहरा।

६

दुरे खुशआब[4] मजामीं से बनाकर लाया
वास्ते तेरे तेरा 'ज़ौक' सनागर[5] सेहरा।

७

जिसको दावा है सखुन का यह मुनादे उसको
देख इस तरह से कहते हैं सुखनवर[6] सेहरा।

५--खुशबू से भरे हुए फूलों के सेहरे से मौसम बहार की हवा इठलाती हुई फिरती है। हे ईश्वर! फूलों का सेहरा कैसा सुगन्धित है!

५--यदि तू सेहरे को उठाकर अपना मुख खोल दे तो आकाश, सूर्य और चन्द्रमा को तुझे मुख-दिखलाई में दे दे।

६--तेरी प्रशंसा करने वाला तेरा 'ज़ौक' मज़मूनों के चमकदार मोतियों से सेहरा बनाकर तेरे वास्ते लाया है।

७—जिसको शेर कहने का घमंड है (यह मिर्ज़ा ग़ालिब पर चोट है) यह उसको सुना दो कि विद्वान् कवि इस प्रकार सेहरा कहते हैं।

१—मुँह दिखलाई। २—चाँद सूरज। ३—आकाश। ४—चमकदार मोती। ५—प्रशंसा करनेवाला। ६—विद्वान कवि।

मिर्ज़ा ग़ालिब का क्षमा पत्र (क़ितें के रूप में)

१

मंज़ूर है गुज़ारिशे[१] अहवाल[२] वाक़ई[३],
अपना बयान हुस्न[४] तबीयत नहीं मुझे।

२

सौ पुश्त से है पेशये आबा[५] सिपहगरी[६],
कुछ शायरी ज़रीय-ए इज़्ज़त नहीं मुझे।

३

आज़ाद[७] रौ हूं और मेरा मुस्लिक[८] है सुलहकुन[९],
हरगिज़ कभी किसी से अदावत नहीं मुझे।

१—मैं उस घटना (सेहरा का लिखना) का ठीक-ठीक वर्णन करना चाहता हूँ। मुझको यहाँ पर अपनी योग्यता का बखान नहीं करना है।

२—सौ पीढ़ी से मेरे बाप-दादा फ़ौजी ज़िन्दगी बसर करते आये हैं। मैं कविता को अपने सम्मान का कारण नहीं मानता।

३—मैं आज़ाद स्वभाव रखने वाला मनुष्य और सब से मेल-जोल रखने वाला हूँ। मैं कभी किसी से भेद-भाव नहीं रखता।

१—कहना। २—हाल। ३—ठीक ठीक ४—योग्यता। ५—बाप दादा। ६—सैनिक जीवन। ७—स्वतंत्र विचारों का मनुष्य ८—स्वभाव। ९—मेल भाव रखनेवाला।

४

क्या कम है यह शरफ़[1] कि जफ़र का गुलाम हूँ,
माना कि जाह[2] ओ मन्सबो[3] व सरवत[4] नहीं मुझे।

५

उस्ताद शह से हो मुझे पुरख़ाश[5] का ख़याल,
ये ताब[6] यह मजाल[7] यह ताक़त[8] नहीं मुझे।

६

सेहरा लिखा गया ज़िरहे[9] इम्तिसाले[10] अम्र,
देखा कि चारा[11] ग़ैर इताअत[12] नहीं मुझे।

४--यह इज्ज़त मेरे लिये क्या कम है कि मैं ज़फ़र का गुलाम हूँ इस बात को मैं मानता हूँ कि मुझे मर्तबा, ओहदा और दौलत नहीं प्राप्त हुए (किन्तु मुझे इसका कुछ ख़याल नहीं है)

५—अर्थ स्पष्ट है।

६--सेहरा बादशाह के हुक्म मानने के ख़याल से लिखा गया था। क्योंकि मैंने देखा कि सिवाय हुक्म मानने के और कोई दूसरा उपाय ही नहीं है।

७

मक़ते[13] में आ पड़ी है सुख़ुन गुस्तराना[14] बात
मक़सूद[15] इससे क़ितअ[16]-मुहब्बत नहीं मुझे।

१—आदर। २—इज़्ज़त ३—ओहदा। ४—दौलत ५—लड़ाई (झगड़ा)। ६-७-८—इन सब शब्दों का अर्थ एक ही है-सामर्थ्य। ९—इस कारण से। १०—बादशाह का हुक्म मानते हुए। ११—इलाज १२—ताबेदारी। १३—ग़ज़ल का आखिरी शेर। १४—शायराना बढ़ाव चढ़ाव १५—मतलब। १६—प्रेम को तोड़ देना

८

रूये-सुख़न[1] किसी की तरफ़ हो तो रूसियाह[2]
सौदा[3] नहीं जिनूं[4] नहीं वहशत[5] नहीं मुझे।

९

क़िस्मत बुरी सही पै तबिअत बुरी नहीं
है शुक्र की जगह कि शिकायत नहीं मुझे।

१०

सादिक़[6] हूँ अपने क़ौल में ग़ालिब ख़ुदा गवाह
कहता हूँ सच कि झूठ की आदत नहीं मुझे।

७—मक़ते में जो बात आई है वह एक शायराना बढ़ाव-चढ़ाव की बात है। इससे मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं मित्रता के भावों को मिटा दूँ।

८—मैंने यदि किसी पर चोट की हो तो मेरा मुँह काला हो। मैं दीवाना या पागल नहीं हूँ और न मुझमें जानवरों की सी वहशत है।

९—मैं भाग्यहीन हूँ पर मेरा स्वभाव बुरा नहीं है। यह शुक्र की बात है कि मुझे किसी प्रकार की शिकायत नहीं है।

१०—ऐ ग़ालिब! ईश्वर को साक्षी करके कहता हूँ कि मैं सच्चा मनुष्य हूँ, मैं जो कुछ कहता हूँ सत्य कहता हूँ। झूठ बोलने की मेरी आदत नहीं है।

टिप्पणी—इस क्षमा-पत्र के पहले ही एक शेर में पहले शब्द (मंजूर) के प्रयोग से कवि के आत्म-सम्मान की झलक दिखाई देती है।

१—मैंने अगर किसी को कुछ कहा हो। २—मेरा मुँह काला हो। ३—दीवानगी। ४—पागलपन। ५—जंगलीपन। ६—सच्चा।

३—सौ पुश्त से.......इस शेर में कवि ने अपने तथा अपने पूर्वजों के आत्म सम्मान पर बड़ी योग्यता से प्रकाश डाला है।

४—यह शरफ......इस शेर के दूसरे मिसरे में कवि ने बादशाह पर यह आक्षेप किया है कि मुझ-ऐसे उच्च कवि का तेरे दरबार में कोई उचित स्थान नहीं।

६—किस्मत......इस शेर के दूसरे मिसरे में कवि ने यह बात दिखायी है कि तुझ को और तेरे उस्ताद को भले ही किसी से द्वेष हो किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि मैं इस अवगुण से दूर हूँ।

—०—

आम की प्रशंसा

१

मुझसे क्या पूछता है क्या लिखिये * नुक्ताहाये[1] खिरत्[2] फ़िज़ा लिखिये।

२

बारे[3] आमों का कुछ बयाँ हो जाए * खामह[4] नख़्ले[5] रुतुबफ़िशाँ[6] होजाये

३

आम का कौन मर्द मैदाँ[7] है * समरो[8] शाख गोये[9] चौगाँ[10] है।

४

ताक़[11] के जी में क्यों रहे अरमाँ * आए ये गोय और यह मैदाँ ॥

५

न चला जब किसी तरह मक़दूर,[12] * बादये[13]-नाब बन गया अंगूर।

६

यह भी नाचार[14] जी का खोना है, * शर्म से पानी पानी होना है ॥

१—बारीक बातें। २—बुद्धि को बढ़ाने वाली ३—अच्छा। ४—क़लम। ५—खजूर का पेड़। ६—छुहारे गिराने वाला। ७—मुक़ाबला करने वाला। ८—फल। ९—गेंद। १०—पोलो खेलने वाला बल्ला। ११—अंगूर। १२—जोर। १३—शराब। १४—बेबस होकर।

१—मिर्जा अपने दिल से कहते हैं कि तू मुझसे क्या पूछता है "कि क्या लिखना चाहिये।" बुद्धि बढ़ाने वाली बारीक बातें लिखनी चाहियें। फिर सोच कर कहते हैं कि—

२—अच्छा! आमों की कुछ प्रशंसा लिखनी चाहिए। और ऐसी खूबी के साथ मानो खजूर का पेड़ छुहारे की वर्षा कर रहा हो अर्थात् उसका विषय बहुत ही मीठा हो।

३—आम की समता कौन कर सकता है? उसका फल गेंद और उसकी डाल पोलो खेलने वाले बल्ले के समान है।

४—अंगूर के जी में क्यों अरमान बाक़ी रहे, मैदान में आये और आम से चौगाँबाजी करले।

५—जब अंगूर किसी तरह आम का मुक़ाबला न कर सका तो वह हार कर शराब नाब बन गया।

६—अंगूर का शराब नाब बन जाना गोया लज्जा के कारण पानी-पानी हो जाना है।

७

मुझसे पूछो तुम्हें खबर क्या है, * आम के आगे नय शकर[१] क्या है।

८

न गुल[२] उसमें न शाख[३] व बर्ग[४] नबार* [५] जब खिज़ाँ[६] आये तबहो उसकी बहार

९

और दौड़ाइये क़यास[७] कहाँ, * जान शीरीं में ये मिठास कहाँ

१०

जान में होती गर ये शीरीनी[८] * कोहकन[९] बावजूद गमगीनी[१०]

११

जान देने में उसको यकता[११] जान, पर वो यूँ सहल दे न सकता जान

१—गन्ना। २—फूल। ३—डाल। ४—पत्ते। ५—फल। ६—पतझड़ ७—बुद्धि। ८—मिठास। ९—पहाड़ का काटनेवाला अर्थात् फ़रहाद। १०—उदासी। १२—जिसको कोई बराबरी न कर सकता हो।

७—मुझसे पूछो तुमको उसकी जानकारी क्या है, आम के सामने गन्ना एक तुच्छ चीज है।

८—गन्ने में न फूल आता है न इसमें शाखें हैं न पत्ते हैं और न फल। इन सबसे ज्यादा बुराई की बात यह है कि पतझड़ का मौसम इसके बहार का ज़माना है।

९—कहां तक उसके (आम) मुकाबले की चीज़ की खोज की जाए। जान बहुत मीठी समझी जाती है मगर उसमें भी ऐसी मिठास नहीं होती।

१०—यदि जान में ऐसी मिठास होती तो फरहाद बावजूद बहुत उदासी के भी—

११—यद्यपि फ़रहाद जान देने में अद्वितीय था तो भी इस सुगमता से अपनी जान न दे सकता था।

१२

नजर आता है यूं मुझे ये समर[१] * कि दवाख़ानये अज़ल[२] में मगर

१३

आतिशे-गुल[३] पै क़न्द[४] का है क़वाम[६] *शीरे के तार का है रेशा नाम

१४

या ये होगा कि फर्त[५] राक़त से * बाग़वानों ने बाग़ जन्नत[७] से

१५

आबगो[८] के बहुक्म[९] रब्बुलनास[१०] भरके भेजेहैं सर बमुहर[११] गिलास

१६

या लगाकर ख़िज़िर[१२] ने शाख़े नबात[१३] *मुद्दतों तक दियाहैआबेहयात[१४]

१—फल। २—ईश्वरीय। ३—फूल की आग। ४—मिश्री ५—चाशनी। ६—बहुत मेहरवानी। ७—स्वर्ग। ८—शहद। ९—आज्ञासे। १०—ख़ुदा। ११—जिसके सर पर मुहर लगी हो। १२—एक पैग़म्बर का नाम है। १३—मिश्री। १४—अमृत।

१७

तब हुआ है समरफ़िशां[1] यह नख़्ल[2] हम कहां वरना और कहां ये नख़्ल

१२—मुझको ऐसा मालूम होता है कि यह फल अर्थात् आम ईश्वर के दवाख़ाने का बना हुआ है (और यह इस तरह बनाया गया है ।):—

१३—फूल की आग पर क़न्द की चाशनी तैयार की गई है और उस चाशनी के तार का नाम 'रेशा' रख दिया गया है।

१४—या यह बात होगी कि बहुत मेहरबानी से स्वर्ग के मालियों ने—

१४—शहद को ईश्वर की आज्ञा से गिलासों में भर कर उन पर मुहर लगा दी है और उसको संसार में भेज दिया है।

१६—या यह बात है कि 'ख़िज़िर' ने मिश्री की डाल लगाकर बहुत समय अमृत से उसे सींचा है।

१७—तब यह दरख़्त फल लाया है वरना हम कहां और यह फल कहां !

१८

था तुरंजे[3] ज़र[4] एक ख़ुसरो[5] पास रंग की ज़र्द पर कहां बू बास[6]

१६

आम को देखता अगर यक बार फेंक देता तिलाये[7] दस्त-अफ़सार[8]

(कहा जाता है कि ख़ुसरो परवेज़ के पास इस प्रकार का सोना था कि उसे हाथ से दबा कर जो चीज़ चाहते थे बना लेते थे। ख़ुसरो

१—फल देने वाला। २—पेड़। ३—एक फल का नाम है। ४—सोना। ५—बादशाह का नाम है। ६—सुगन्ध ७—सोने का ८—जो दबाने से नरम हो जाये।

ने इसी का तुरंज बनवाया था खाने के समय वह तुरंज थाल में लगा दिया जाता था)

१८—खुसरो के पास जो सोने का तुरंज था यद्यपि उसका रंग तो ज़र्द था किन्तु उसमें सुगंध न थी।

१९—अगर बादशाह आम को एक बार देख पाता तो वह अपना सोने वाला तुरंज फेंक देता। [मिर्ज़ा ग़ालिब को आम बहुत ही प्रिय था, इसी कारण उन्होंने इसकी प्रशंसा अति-उच्च भाव से पूर्ण कविता में की है।]

भिन्न भिन्न प्रकार के अशआर

१

सबके दिल में है जगह तेरी जो तू राज़ी हुवा
मुझपे गोया एक ज़माना मेहरबाँ हो जायगा

हे परमात्मा! सबके दिल में तेरी जगह है अर्थात् सारी दुनियां तुझ से प्रेम करती है। यदि तू मुझ से प्रसन्न हो गया तो सारे संसार के लोग मुझ पर दयालु हो जायंगे।

२

जिक्र उस परीवश[1] का और फिर बयाँ अपना
बन गया रक़ीब[2] आख़िर जो था राज़दाँ[3] अपना।

उसकी सुन्दरता का बखान और वह भी मेरे जैसे उच्च भाव से वर्णन करनेवाले की ज़बान से सुनकर मेरा मित्र रकीब बन गया।

३

थी ख़बर गर्म[4] कि ग़ालिब के उड़ेंगे पुर्ज़े
देखने हम भी गए थे यह तमाशा न हुआ।

मिर्ज़ा की शोख़िये तबिअत का यह एक विचित्र रंग है कि

१—हसीन (ख़ूबसूरती)—२ दिल में हसद (मैल) रखने वाला ३—दिल की बात जानने वाला। ४—चारों ओर चर्चा था।

उन्ही के पुर्जे उड़ाये जाँय और वह खुद उसे देखने जाएँ (तमाशे का शब्द भी बहुत अच्छा लाया गया गया है)

नीचे का शेर भी इसी रंग में हैः

४

फिर बेख़ुदी[1] में भूल गया राह कूए यार[2]
जाता वगरना एक दिन अपनी ख़बर को मै

(अर्थ सरल है)

५

हम ही कहते हैं कि हम लेंगे क़यामत[3] में तुम्हें
किस रऊनत[4] से वो कहते हैं कि हम हूर[5] नहीं

मैने जो उससे यह कहा कि तुम यहाँ तो हमसे अलग-अलग रहते हो हम क़यामत के दिन अल्लाह से तुझ को माँग लेंगे इस पर वह चुलबुलेपन और अभिमान से कहते हैं कि हम हूर नहीं है, जो तुम को स्वर्ग में मिल जाएँगे।

६

शर्म रुसवाई[6] से जा छिपना नकाबे खाक[7] में
ख़त्म है उल्फ़त[8] की तुझ पर परदादारी[9] हाय हाय

१—अपने आप से गुज़र जाना अर्थात् अपने को भूल जाना, मिर्ज़ा ने बेखुदी के शब्द का प्रयोग बहुत जगह किया है। बेखुदी एक बहुत ऊँचा भाव है। २—दोस्त या मित्र, यह शब्द ईश्वर के लिए भी प्रयोग किया जाता है। ३—प्रलय। ४—घमंड। ५—बहुत खूबसूरत स्त्रियाँ जो मुसलमानी विश्वास के अनुसार बहिश्त में हैं। ६—बदनामी। ७—ख़ाक के परदे में। ८—प्रेम। ९—परदा रखना।

बदनाम हो जाने के शर्म से तू ख़ाक के परदे में जा छिपा (अर्थात् मर कर दफ़न हो गया) इससे ज्यादा प्रेम के रहस्य की और किस तरह छिपाया जा सकता है!

७

चश्म[१] दल्लाल जिन्स[२] रुसवाई
दिल ख़रीदार शौक़[३] ख़्वारी[४] है।

आँख बदनामी के सौदे की दलाल है और दिल को बदनामी की ख़रीदारी का शौक़ है (कवि ने वासना को अनादर का पदार्थ लिखा है और आँख को इस सौदे का, जिसका परिणाम बदनामी हुवा करती है, दल्लाल बनाया है) कि वह दिल को उसकी प्रशंसा करके ग्राहक बनादे।

८

वादा आने का वफ़ा कीजिए यह क्या अंदाज़ हैं
तुमने क्यों सौंपी है मेरे घर की दरबानी मुझे।

आपने यह क्या तरीका अख्तियार किया है कि वादा करके नहीं आते और मैं तुम्हारे आने की राह देखता दरबान की तरह घर पर बैठा रहता हूँ।

९

नींद उसकी है दिमाग़[५] उसका है रातें उसकी हैं
तेरी जुल्फें[६] जिसके बाजू पर परीशाँ[७] हो गईं

१०

जी ढूंढता है फिर वही फ़ुरसत के रात दिन
बैठे रहें तसव्वुरे[८] जानाँ[९] किए हुए।

फिर यह जी चाहता है कि बीते हुए दिनों की तरह दुनियाँ के झंझटों से छुट्टी मिल जाए कि रात दिन ईश्वर के ध्यान में बैठे रहें।

१—आँख। २—सौदा। ३—लालसा। ४—बदनामी। ५—भाग्य। ६—स्याह घूंघरवाले बाल। ७—बिखरे हुए। ८—याद। ९—प्रेमिका।